जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

अजमेर

Rashtradoot

फोनः- 2627612, 2427249 फैक्सः- 0145-2624665 वर्षः 26 संख्याः 292 प्रभात अजमेर, सोमवार 23 मई, 2022 आर.जे./ए.जे./73/2015-2017 पृष्ठ 8 मूल्य 2.00 रु.

एक समय इन्हें ''एमेज़ॉन्स ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री'' कहा जाता था। ऐसी उग्र महिलाओं का एक गोपनीय ग्रुप सायैम (आज का थाइलैण्ड) के साम्राज्य में बेहद शक्तिशाली था। ये महिलाएं किंग ऑफ सायैम की बॉडी गार्ड्स थीं। सन् 1688 में, किराए के 600 यूरोपीय सैनिकों तथा ईसाई समुराई फौज के स्थान पर इस समूह ने कमान संभाली थी और इस समूह के सदस्यों की जिम्मेवारी थी, राजपरिवार तथा पैलेस ग्राउण्ड्स की सुरक्षा सुनिश्चित करना। द एन्सायक्लोपीडिया ऑफ एमेज़ॉन्स (वीरांगनाएं) की लेखक, जैसिका सामनसन इन्हें, सायैम की ''बैस्ट ट्रेन्ड फोर्स'' कहती हैं। ''क्रोम क्लोन'' नाम के इस समूह में 400 महिलाएं थीं। इन्हें, सौ-सौ गार्ड्स की चार बटालियन में बांटा गया था। बटालियन की कैप्टन भी महिला ही होती थी। कैप्टन बदलने का काम राजा चुलालोंगकोर्न स्वयं देखते थे। तेरह वर्ष की उम्र में, समूह में दाखिल होकर, 25 वर्ष की उम्र तक ये महिलाएं सेना में भर्ती हो जाती थीं। उसके बाद वो रॉयल गार्ड का हिस्सा बन जाती थीं। पैलेस में प्रवेश करने के बाद इन महिलाओं को ''सतीत्व'' का प्रण लेना होता था। इस शर्त से निकलने का कोई रास्ता नहीं था। अब अगर राजा का दिल किसी महिला गार्ड पर आ जाए, तो बात अलग थी। इस ग्रुप की हर सदस्य को खूबसूरत तथा बलवान होना ज़रुरी था। चयन के बाद ये अति उत्कृष्ट यूनिफॉर्म में राजमहल में घूमती नज़र आती थीं। घुटनों तक लंबी ऊँनी पोशाक, जिस पर सुनहरे धागे से कढ़ाई की हुई होती थी तथा सोने का मुलम्मा चढ़ा हुआ शिरस्त्राण इनका पहनावा था। राज्य समारोहों के समय हथियार के रुप में ये बरछा-बल्लम लेती थीं। अन्यथा, हर समय इनके हाथों में बंदूक होती थी, जिसे चलाने के लिए इन्हें विशेष प्रशिक्षण दिया जाता था और इनके कौशल असाधारण होते थे। सप्ताह में दो बार इन्हें प्रशिक्षण दिया जाता था। राजा और उनका भाई महीने में एक बार व्यक्तिगत रुप से इस प्रशिक्षण सत्र का निरीक्षण करते थे। सायैम का राजा अपनी महिला बॉडीगार्ड्स के बिना कहीं नहीं जाता था। सभी वीरांगनाओं का एक ही लक्ष्य व कर्तव्य था - रक्षा। इसलिए, हर महिला गार्ड के लिए पांच महिलाएं नियुक्त की जाती थीं जो उनके घर का कामकाज संभालती थीं। किसी भी तरह की कोई और ड्यूटी नहीं होने के कारण ये वीरांगनाएं ''गार्ड व रक्षक'' के अपने कर्तव्य पर पूरा फोकस रखती थीं। उन्नीसवीं सदी में भर्ती होने वालों की संख्या कम होती गई इसलिए इस समूह को भंग कर दिया गया।

दक्षिण कोरिया को क्वाड में शामिल करने पर विचार नहीं कर रहा अमेरिका

दूसरी तरफ दक्षिण कोरिया क्वाड में शामिल होने के लिए जोरदार प्रयास में लगा हुआ है

- **यदि कोरिया क्वाड में शामिल होता है तो इससे भारत को नुकसान होने की आशंका जताई जा रही थी।**
- **गौरतलब है कि, 24 मई से क्वाड की मीटिंग शुरु हो रही है और प्रधानमंत्री मोदी इसमें शामिल होने के लिए जापान रवाना हो चुके हैं।**

वाशिंगटन, 22 मई (वार्ता)। अमेरिका, दक्षिण कोरिया को क्वाड सुरक्षा मंच में शामिल करने पर विचार नहीं कर रहा है, जिसे चीन का मुकाबला करने के लिए साझेदारी के रूप में देखा जा रहा है। अमेरिका के एक वरिष्ठ अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी।

अमेरिकी अधिकारी ने राष्ट्रपति जो बाइडेन के साथ सियोल में अपनी तीन दिवसीय यात्रा के दौरान यह टिप्पणी की, जिसके बाद मंगलवार को होने वाले चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता (क्वाड) के शिखर सम्मेलन के लिए टोक्यो की यात्रा पर जाएंगे। क्वाड चार सदस्यीय साझेदारी है, जिसमें अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान और भारत शामिल हैं।

जानकारी के अनुसार, दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति मून जेई इन ने अपने चुनाव अभियान के दौरान दक्षिण कोरिया और क्वाड के बीच सहयोग का धीरे-धीरे विस्तार करने के लिए क्वाड के विभिन्न कार्य समूहों जैसे जलवायु परिवर्तन और प्रौद्योगिकियों में भाग लेने का वादा किया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिका, आस्ट्रेलिया, भारत और जापान के चतुष्कोणीय गठजोड़ क्वॉड की बैठक के लिए जापान की यात्रा को मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम के हिन्द प्रशांत क्षेत्र पर प्रभाव को लेकर विचार विमर्श का अवसर करार दिया है।

मोदी ने यात्रा के पूर्व अपने वक्तव्य में कहा, मैं जापान के प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा के आमंत्रण पर 23-24 मई, 2022 तक जापान की राजधानी टोक्यो का दौरा करूंगा।

उन्होंने कहा कि बीते मार्च में उन्हें 14वें भारत-जापान वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए जापानी प्रधानमंत्री किशिदा की आवभगत का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वह टोक्यो की अपनी यात्रा के दौरान, भारत-जापान विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से हमारे संवाद को आगे बढ़ाये जाने के लिए उत्सुक हैं।

मोदी ने कहा,जापान में, मैं सेकेंड इन-पर्सन क्वाड नेता सम्मेलन में भी भाग लूंगा, जो चार क्वाड देशों के नेताओं को क्वाड पहलों की प्रगति की समीक्षा करने का अवसर उपलब्ध कराएगा। हम हिंद-प्रशांत क्षेत्र के घटनाक्रमों तथा परस्पर हित के वैश्विक मुद्दों पर भी विचारों का आदान-प्रदान करेंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि वह अमेरिका के राष्ट्रपति जोसेफ बिडेन के साथ द्विपक्षीय बैठक करेंगे, जहां हम अमेरिका के साथ अपने विभिन्न पहलुओं वाले द्विपक्षीय संबंधों को और सुदृढ़ बनाने पर चर्चा करेंगे। हम क्षेत्रीय विकास और समसामयिक वैश्विक मुद्दों पर भी अपना संवाद जारी रखेंगे।

उन्होंने कहा, ऑस्ट्रेलिया के नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज पहली बार क्वाड लीडर्स सम्मेलन में शामिल होंगे। मैं उनके साथ एक द्विपक्षीय बैठक करने के लिए उत्सुक हूं जिस दौरान व्यापक रणनीतिक साझेदारी के तहत भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बहुआयामी सहयोग तथा क्षेत्रीय और पारस्परिक हितों के वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की जाएगी।

उन्होंने कहा कि भारत और जापान के बीच आर्थिक सहयोग हमारी विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी का एक महत्वपूर्ण पहलू है। उन्होंने कहा,मार्च शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री किशिदा और मैंने जापान से भारत में अगले पांच वर्षों में सार्वजनिक और निजी निवेश तथा वित्तपोषण में 5000 अरब जापानी येन प्राप्त करने के अपने इरादे की घोषणा की थी। आगामी यात्रा के दौरान, मैं इस लक्ष्य के अनुसरण में हमारे देशों के बीच आर्थिक संबंधों को और सुदृढ़ बनाने के ध्येय के साथ जापान के व्यापार जगत के शीर्ष व्यक्तियों के साथ मुलाकात करूंगा।

मोदी ने कहा कि जापान में भारतीय समुदाय के लगभग 40 हजार सदस्य हैं, जो जापान के साथ हमारे संबंधों में एक महत्वपूर्ण आधार हैं। वह उनके साथ बातचीत करने के लिए उत्सुक हैं।

सऊदी अरब में 25 भारतीय नागरिकों सहित कुल 35 लोगों को बंधक बनाया

राजस्थान निवासी एक भारतीय नागरिक की हालत गंभीर, भोजन पानी के लिए भी तरसे

- **कांग्रेस नेता चर्मेश शर्मा ने राष्ट्रपति सचिवालय में याचिका दायर कर जीवन बचाने की गुहार लगाई।**

बूंदी, 22 मई। सऊदी अरब के यंबू शहर में 25 भारतीय नागरिकों सहित कुल 35 लोगों को बंधक बनाने का मामला सामने आया है। इनमें से राजस्थान के टोंक जिले के निवासी सोहनलाल बैरवा की स्थिति गंभीर बनी हुयी है। सोहनलाल का पासपोर्ट नम्बर 5850453 है। बंधक बनाने के बाद सोहनलाल की तबियत बिगड़ गयी लेकिन निर्दयतापूर्वक कई दिनों तक सोहनलाल का इलाज नहीं करवाया गया। बहुत ज्यादा स्थिति बिगड़ने के बाद अब सरकारी अस्पताल में भर्ती करवाकर भगवान भरोसे छोड़ दिया गया है। वह गंभीर स्थिति में सउदी अरब के यंबू के सरकारी चिकित्सालय में भर्ती है। जहां पर उसे समुचित इलाज और दवाइयां भी नहीं मिल पा रही है।

विदेश में संकटग्रस्त भारतीयों की सहायता के लिए कार्य करने वाले बूंदी राजस्थान के कांग्रेस नेता चर्मेश शर्मा ने राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के नाम राष्ट्रपति सचिवालय में याचिका दायर कर और विदेश मंत्रालय में विदेश मंत्री एस. जयशंकर के नाम अधिकृत शिकायत दर्ज करवाकर केन्द्र सरकार से सभी भारतीय नागरिकों की तत्काल शीघ्र सकुशल भारत वापसी करवाने और राजस्थान के निवासी बीमार सोहनलाल का जीवन बचाने की मांग की है। शर्मा ने 25 भारतीय नागरिकों के साथ बंधक नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान व श्रीलंका के निवासी 10 अन्य नागरिकों की भी इनके मूल देश से समन्वय करते हुये मानवीय आधार पर सहायता करने की मांग रखी है।

विदेश से सैकड़ों संकटग्रस्त भारतीयों सकुशल वापसी करवा चुके कांग्रेस नेता चर्मेश शर्मा ने रविवार को सर्किट हाउस में पत्रकारों से वार्ता में बताया कि सऊदी अरब की अलजहरानी कंपनी ने इन सभी लोगों के वीजा रिनुअल नहीं करवाया और सभी का सऊदी अरब में रहने का वैध दस्तावेज इकामा समाप्त करवा दिया। कंपनी ने षडयंत्र पूर्वक इस तरह से 25 भारतीयों सहित इन सभी 35 लोगों को सउदी अरब में अवैध नागरिक बना दिया। अवैध नागरिक होने के बाद इन सभी से पिछले दो वर्ष से अधिक समय से बंधुआ मजदूर बनाकर काम करवाया जा रहा था। कुछ दिनों पहले इन्होंने वीजा रिनुअल करवाकर इकामा बनवाने व परिवार के पास स्वदेश भेजने की मांग रखी तो कंपनी ने इन सभी 35 लोगो को जबरन बंधक बना लिया। भारतीय नागरिकों में राजस्थान, बिहार,दिल्ली, उत्तरप्रदेश सहित कई प्रदेशों के रहने वाले शमशेर, रामप्रवेश, श्यामलाल, इमरान आदि शामिल हैं। कंपनी ने अभी भी इन सभी को बाहर कुछ भी बताने पर धमकी दे रखी है। जिससे कई लोग डरे हुये हैं।

बंधक बनाए गये लोगों में से राजस्थान के जयपुर जिले के निवासी एक श्रमिक सरफ़ुद्दीन ने पूर्व में सउदी अरब में बंधक बनाये गये और भारत लौट चुके राजस्थान के भरतपुर के श्रमिक विश्राम जाटव और बूंदी जिले के नैनवा निवासी अब्दुल गफ्फार को अपनी पीड़ा बतायी। जिसके बाद विश्राम जाटव व गफ्फार ने विदेश में संकटग्रस्त भारतीयों की सहायता के लिए कार्य करने वाले बूंदी के कांग्रेस नेता चर्मेश शर्मा को सारे घटनाक्रम से अवगत करवाया।

मुफ्त एनिमल एम्बुलैंस सर्विस

मेरठ, 22 मई (वार्ता)। पशुपालन डेयरी और मत्स्य पालन राज्य मंत्री संजीव कुमार बालियान ने रविवार को कहा कि किसानों के पशुओं को घर दरवाजे पर मुफ्त चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से देश भर में अगले माह से एंबुलेंस सुविधा शुरू की जाएगी।

बालियान ने हरित प्रदेश दुग्ध उत्पादक कंपनी का उद्घाटन करने के बाद संवाददाता सम्मेलन में कहा कि पूरे देश में 4500 एंबुलेंस के माध्यम से यह सेवा शुरु की जाएगी। एंबुलेंस में एक चिकित्सक , एक फार्मासिस्ट और एक चालक होंगे। इस सेवा के माध्यम से पशुओं को किसानों के घर दरवाजे पर उपचार किया जाएगा और उसकी निगरानी भी की जाएगी।

- **केन्द्रीय मंत्री संजीव बलियान ने बताया कि, अगले माह से देश में पशुओं के लिये मुफ्त एंबलेंस सेवा शुरु की जायेगी।**

बालियान ने बताया कि एंबुलेंस सेवा के लिए राज्यो को धन उपलब्ध करा दिया गया है। एक एंबुलेंस के लिए 16 लाख रुपए आवंटित किए गए हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'पैट्रोल-डीजल पर छोटी सी राहत देकर जनता को भ्रमित न करें मुख्यमंत्री'

केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत बोले, ''राजस्थान में अब भी देश में सबसे महंगा तेल''

- **'केंद्र सरकार पर दोषारोपण कर अपने कर्तव्य से मुक्त होना चाहते हैं मुख्यमंत्री'।**

जयपुर/जोधपुर, 22 मई (का.सं.)। केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने एक बार फिर पैट्रोल-डीजल की कीमतों को लेकर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर निशाना साधा। शेखावत ने कहा कि राजस्थान ऐसा प्रदेश है, जिसमें देश में सबसे महंगा पेट्रोल-डीजल मिलता है, लेकिन राज्य के मुखिया अपने गिरेबां में झांककर देखने के बजाय भारत सरकार पर दोषारोपण करते हुए अपने कर्तव्य से मुक्त होना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि जनता मुख्यमंत्री की तरफ देख रही है। केवल छोटी सी राहत देकर जनता को भ्रमित करने के बजाय कुछ और अधिक बड़ा कर सकें, इस पर विचार करना चाहिए। रविवार को क्रीड़ा भारती जोधपुर प्रांत के कार्यक्रम से इतर मीडिया से बातचीत में शेखावत ने कहा कि बढ़ती महंगाई के प्रति प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में काम करने वाली सरकार संवेदनशील है। पूरा देश यह जानता है। लंबे समय से विश्व स्तर पर पैट्रोल-डीजल के दामों में वृद्धि हो रही थी, जिसका भार जनता के ऊपर बढ़ रहा था। एक बार फिर मोदी सरकार ने संवेदनशीलता का परिचय देते हुए बहुत बड़ी कटौती सेंट्रल टैक्सेज में कर जनता को राहत प्रदान की है। करीब 9.50 रुपए पैट्रोल, 7 रुपए डीजल और गैस में 200 रुपए सब्सिडी का प्रावधान किया है।

उन्होंने कहा कि मुझे ऐसा बताया गया है कि राज्य सरकार ने भी सुबह 2.48 रुपए पैट्रोल और 1.07 रुपए डीजल पर कटौती करने की अपनी तरफ से घोषणा की है। छोटा सा उन्होंने प्रयास किया है, मैं उन्हें जनता की तरफ से धन्यवाद तो देता हूं, लेकिन यह अवश्य कहूंगा कि अभी भी राजस्थान के चारों तरफ जो प्रदेश हैं, उनमें यहां से सस्ती दर पर पैट्रोल-डीजल मिलता है। राजस्थान सरकार को एक बार फिर इस पर विचार करना चाहिए। शेखावत ने कहा कि जनता को राहत देने के लिए मैं प्रधानमंत्री का अभिनंदन करता हूं।

80 लाख रुपए के डोडा-पोस्त से भरा लावारिस ट्रक पकड़ा

नागौर, (निसं)। सदर थाना पुलिस ने एन.एच.-89 पर गोगेलाव सरहद में रविवार को एक होटल पर लावारिस खडे नमक के कट्टों से भरे ट्रक में 80 लाख रुपए का अवैध डोडा पोस्त जब्त किया है। ट्रक में नमक के कट्टों के नीचे 2508 किलो अवैध डोडा-पोस्त छिपाकर भरा हुआ था। पूरी कार्रवाई सदर थानाधिकारी रूपाराम के नेतृत्व में डी.एस.टी. और सदर पुलिस टीम ने मिलकर गुप्त मुखबरी के आधार पर अंजाम दी। फिलहाल पुलिस ट्रक मालिक की तलाश

- **होटल पर खड़े ट्रक में नमक के कट्टों के नीचे छिपा हुआ था डोडा-पोस्त।**

कर रही है। वहीं ट्रक व माल को जब्त कर मामले की जांच भी शुरू कर दी गई है। नागौर सी.ओ. विनोद कुमार सीपा ने बताया कि रविवार देर रात को सदर पुलिस गश्त पर थी। इस दौरान गुप्त जानकारी के आधार पर सदर थानाधिकारी रूपाराम के नेतृत्व में डी.एस.टी. और सदर पुलिस टीम ने गोगेलाव सरहद में होटल वीर तेजा के बाहर लावारिस खड़े एक ट्रक की तलाशी ली। तलाशी में पुलिस टीम को ट्रक में कुल 325 नमक के कट्टे मिले। जब इन

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दलित युवक की हत्या कर शव सड़क पर फैंका

बीकानेर, 22 मई (नि.सं.)। जिले के श्रीडूंगरगढ़ में एक दलित युवक की बेरहमी से हत्या का मामला सामने आया है। पुलिस को शक है कि युवक को

- **बीच सड़क पर पड़ी थी लाश, लाश पर चोट के कई निशान भी मिले।**
- **मौके पर पहुंची एफएसएल टीम ने महत्वपूर्ण सुराग जुटाये।**

मारकर सड़क पर फेंक दिया गया। घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस सक्रिय हुई। मौके पर पहुंची एफ.एस.एल. टीम ने भी कई महत्वपूर्ण सुराग जुटाने का प्रयास किया है। लाश पर चोट के कई निशान भी मिले हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

लेबर पार्टी के नेता एंथनी अल्बनीज ऑस्ट्रेलिया के नये प्रधानमंत्री होंगे

ऑस्ट्रेलिया में 2007 के बाद से लेबर पार्टी ने पहली चुनावी जीत हासिल की है

मेलबॉर्न, 22 मई। ऑस्ट्रेलिया के चुनावों में लेबर पार्टी के नेता एंथनी अल्बनीज ने जीत हासिल की है और वह अब ऑस्ट्रेलिया के नए पी.एम. होंगे। इस मौके पर पी.एम. मोदी ने उनको बधाई दी है। पी.एम. मोदी ने ट्वीट कर कहा, एंथनी अल्बनीज को ऑस्ट्रेलियाई लेबर पार्टी की जीत और प्रधानमंत्री के रूप में उनके चुनाव के लिए बधाई। मैं अपनी व्यापक रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में साझा प्राथमिकताओं के लिए आपके साथ काम करने के लिए उत्सुक हूं।

2007 के बाद से अल्बनीज की पार्टी ने पहली चुनावी जीत हासिल की साल 2007 के बाद से अल्बनीज की पार्टी ने पहली चुनावी जीत हासिल की है। वह जल्द ही पीएम पद की शपथ लेंगे। इस चुनाव में ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरिसन हार गए हैं। चुनाव नतीजों के सामने आने के बाद मॉरिसन ने कहा कि वे अपनी पार्टी की हार की जिम्मेदारी लेते हैं और वह लिबरल पार्टी के नेता के रूप में इस्तीफा देंगे। मॉरिसन ने ये भी कहा कि उन्हें अपनी पार्टी और देश का नेतृत्व करने का मौका मिला, इसके लिए

- **प्रधानमंत्री मोदी ने नये प्रधानमंत्री को जीत की बधाई दी।**
- **स्कॉट मॉरीसन अगले एक या दो दिन में प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देंगे।**

वह सभी को धन्यवाद देते हैं। मैं पार्टी की अगली बैठक में अपना इस्तीफा दे दूंगा।

ऑस्ट्रेलिया में प्रधानमंत्री पद की रेस में 6 लोग उतरे थे। लेकिन मुख्य मुकाबला मॉरिसन और अल्बनीज के बीच ही था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को ऑस्ट्रेलिया की लेबर पार्टी के नेता एंथनी अल्बनीज को उनकी पार्टी की चुनावी जीत पर बधाई दी।

मोदी ने ट्वीट कर कहा, ऑस्ट्रेलियाई लेबर पार्टी की जीत और प्रधानमंत्री के रूप में आपके चुनाव जीतने के लिए अल्बनीज बधाई। मैं हमारी समग्र रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने तथा हिंद-प्रशांत क्षेत्र में साझा प्राथमिकताओं पर आपके साथ काम करने को लेकर आशान्वित हूं। ऑस्ट्रेलिया के नए प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने कहा कि वह जलवायु नीति में बड़े बदलाव के साथ देश को एक नई दिशा में ले जाएंगे।

उन्होंने कहा कि वह ऑस्ट्रेलिया को अक्षय ऊर्जा महाशक्ति बनाना चाहते हैं। अल्बनीज़ को सोमवार को प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेनी है, लेकिन यह अभी भी स्पष्ट नहीं है कि उनकी पार्टी के पास संसद में अपेक्षित बहुमत होगा या नहीं।

पिछले कुछ वर्षों में कई प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित ऑस्ट्रेलियाई लोगों के लिए, इस चुनाव में जलवायु परिवर्तन एक प्रमुख विषय था। मतगणना अभी भी जारी है, और यह स्पष्ट नहीं है कि संसद के 151 सदस्यीय निचले सदन में बहुमत हासिल करने के लिए लेबर पार्टी को 76 सीटें मिल सकती हैं या नहीं। अंतिम परिणाम आने में अभी समय लग सकता है, क्योंकि चुनाव अधिकारियों ने अभी करीब 30 लाख डाक मतों की गिनती शुरू की है।

विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। –हरिऔध

बदलावों के प्रति स्वस्थ और सकारात्मक नज़रिया अपनाने की ज़रूरत!

कल एक पुरानी फ़िल्म देख रहा था। एक दृश्य था जिसमें नायिका की छोटी बहन उस वक़्त चलन में रहे स्पूल वाले बड़े टेपरिकॉर्डर पर कोई गाना सुन रही थी। जिन्हें नहीं पता उन्हें बताता चलूं कि एक ज़माना था जब टेपरिकॉर्डर लगभग सूटकेस के आकार के हुआ करते थे। महंगे तो होते ही थे। गिने-चुने लोग ही इस विलासिता को अफोर्ड कर सकते थे। इस तरह के टेपरिकॉर्डर्स के भी पहले वे ग्रामोफ़ोन चलन में थे जिनमें हेण्डल घुमा कर चाबी भरनी पड़ती थी। दो तरह के होते थे ये ग्रामोफ़ोन। एक तो अटैची की तरह के पोर्टेबल और दूसरे, ज़रा ज़्यादा भव्य लगने वाले, जिन्हें आप एचएमवी के लोगो में आज भी देख सकते हैं: एक कुत्ता एक भौंपू के सामने बैठा है। ये भव्य ग्रामोफ़ोन भोंपू वाले होते थे। हमारे देखते-देखते ये सब अब लुप्त हो गए हैं। नई पीढ़ी तो इनके बारे में जानती भी नहीं है। लेकिन जब मैं उस फ़िल्म में वह स्पूल वाला टेपरिकॉर्डर देख रहा था तो उसकी भव्यता मुझे सम्मोहित भी कर रही थी। भव्यता ग्रामोफ़ोन में थी, रिकॉर्डचेंजर में थी, स्पूल वाले टेपरिकॉर्डर में थी और भी बहुत सारी चीज़ों में थी। लेकिन अब वह सब अतीत है।

तकनीक ने इतनी तेज़ी से सब कुछ बदला है कि हम स्वयं चकित हैं। आज संगीत सुनना, और न केवल सुनना उसका ख़ज़ाना अपने पास रखना जैसे बच्चों का खेल हो गया है। आपके पास अगर ठीक-ठाक-सा मोबाइल हो तो उसमें आप इतना संगीत सहेज सकते हैं कि उसे सुनने के लिए एक उम्र भी कम पड़े। उसे जहां और जब चाहे सुन सकते हैं। अगर सही ग़लत (पाइरेसी!) की फिक्र न करें तो यह सारा संगीत आपको नि:शुल्क सुलभ है। एक-एक गाने के लिए इधर-उधर भटकना जैसे पिछले जन्मों की बात हो गई है। अब तो तकनीक की इस मेहरबानी से आपको सब कुछ, करीब-करीब पलक झपकते ही मिल जाता है।

और ऐसा ही अन्य बहुत सारी कलाओं और साहित्य के मामले में भी हुआ है। मुझ जैसे जिन लोगों को किताबें खरीदने और पढ़ने का जुनून है वे इस बात से दु:खी रहते थे कि जो पढ़ना है उसे प्राप्त कहां से करें, और कर लें तो घर में इतनी जगह कहां से निकालें कि उसे सहेज कर रख सकें। अब जैसे यह समस्या रही ही नहीं है। और अगर आप चाहें तो आपको पढ़ने की भी ज़हमत से निजात मिल सकती है। आप पढ़ने की बजाय सुन कर भी संतुष्ट हो सकते हैं। बहुत सारा साहित्य नि:शुल्क ही आपको सुलभ है और उसे सहेज कर रखना भी बहुत सुगम हो गया है। एक पॉकेट बुक के आकार वाले उपकरण (जैसे किण्डल) में आप हज़ारों किताबें सहेज कर रख सकते हैं। कितना रोमांचक लगता है एक भरा-पूरा पुस्तकालय अपने हाथ में लिये हुए एक कमरे से दूसरे कमरे में, एक शहर से दूसरे शहर में, एक देश से दूसरे देश में आवागमन कर लेना।

हम हर बदलाव का अपने नज़रिये से आकलन करें, उसे परखें और उसके बाद ही उसे अस्वीकार या स्वीकार करें - यही औचित्य का तकाज़ा है। यह भी समझ लिया जाना चाहिए कि हर बदलाव हरेक के लिए एक समान अर्थ नहीं रखता है। इसलिए बदलाव के प्रति सामूहिक रुख का कोई अर्थ नहीं है।

आप दुनिया भर की फ़िल्में, वे फ़िल्में जिन्हें देखने के लिए आप बरसों बरस इंतज़ार करते थे, फ़िल्म सोसाइटियों के सदस्य बनते थे, अब आपकी पहुंच में हैं। अगर आपकी रुचि चित्रकला में है तो अपने कमरे में बैठे-बैठे दुनिया भर के संठाहालयों का भ्रमण कर सकते हैं और वह भी इस तरह कि आपको महसूस ही न हो कि आप सशरीर वहां मौज़ूद नहीं हैं।

जो बदलाव आस्वाद में आया है वही सृजन में भी आया है। अपने चारों तरफ नज़र दौड़ाएं। आप पाएंगे, अब लिखना पहले से ज़्यादा आसान हो गया है। यहां तक कि बिना लिखे भी लिख सकते हैं। मेरा आशय बोलकर लिखने की नई प्रविधि से है। आप अपने लिखे को सहेज सकते हैं, उसमें मनचाहा बदलाव कर सकते हैं। कर पहले भी सकते थे, बल्कि करते थे लेकिन यह सुगमता नहीं थी। आप बिना लम्बे-चौड़े तामझाम के फोटोग्राफी कर सकते हैं। मात्र एक उपकरण से आप ऐसा संगीत रच सकते हैं जिसे सुनते हुए एक बड़े ऑर्केस्ट्रा को सुनने का सुख मिले। बिना रंगों और कैनवस के आप तस्वीरें बना सकते हैं। डिजिटल कण्टेण्ट का सर्जक बनने से हम पहले से कई गुना ज़्यादा समर्थ और सक्षम हो गए हैं।

सब कुछ बदल गया और बहुत तेज़ी से बदलता जा रहा है। सुलभता बढ़ती जा रही है, उसकी गुणवत्ता बढ़ती जा रही है। ये बातें स्वागत योग्य हैं। लेकिन जब मैं यह बात कह रहा हूं तो मन के किसी कोने से एक आवाज़ यह भी आ रही है कि प्रयत्न करके चीज़ों को प्राप्त करने पर जो सुख मिलता था वह इस सहज सुलभता ने हमसे छीन लिया है। चीज़ें इतनी आसानी से और इतनी विपुलता में हमारे सामने फैली पड़ी हैं कि वे जैसे हमें बेमानी लगने लगी हैं। जब आप किसी किताब के लिए लाइब्रेरी-दर-लाइब्रेरी भटकते थे और बहुत प्रयत्नों के बाद उसे अपने हाथों में पाते थे, तब जो सुख मिलता था वह सुख किसी किताब को तुरंत डाउनलोड कर लेने पर कहां मिलता है? जो सुख कई जगह तलाश कर लेने के बाद किसी छोटी-सी दुकान पर अपना मनचाहा गाना मिल जाने और फिर उसे अपनी कैसेट में रिकॉर्ड करवा कर सुनने पर मिलता था वह सुख अब जैसे कहीं विलुप्त हो गया है। यही बात अन्य कलाओं के बारे में भी है। हमारे पास है बहुत कुछ लेकिन उसमें वह रस, वह आनंद नहीं है। लेकिन ये सब बातें मेरी पीढ़ी करती है। नई पीढ़ी तो इस तरह नहीं सोचती है। उसका यथार्थ तो यही सब है और वह इससे संतुष्ट है।

लेकिन यह सब मैं क्यों कह रहा हूं? हम जहां तक चले आए हैं, क्या वहां से पीछे लौट जाना सम्भव है? और क्या हमें लौटने के बारे में सोचना भी चाहिए? बहुत सारी पुरानी चीज़ों के प्रति अपने अनुराग के बावज़ूद मैं इस बारे में बहुत स्पष्ट हूं कि हम पीछे नहीं लौट सकते। हमें आगे ही बढ़ना होगा। और जब हम पीछे नहीं लौट सकते तो फिर हमें जो वर्तमान है और जो भविष्य में होने वाला है उसके प्रति एक तार्किक और स्वस्थ नज़रिया भी अपनाना होगा। इसी में हमारा हित है।

तकनीक हमारी ज़िंदगी को बहुत तेज़ी से बदल रही है और हम चाहें या न चाहें ये बदलाव तो आएंगे ही। बहुत मुमकिन है कि हममें से कुछ लोग एक चीज़ को अपनाएं और दूसरी को न अपनाएं। कोई आज भी हाथ से लिखना ही पसंद कर सकता है, कोई आज भी कागज़ पर छपी किताब को पढ़कर ही असली सुख महसूस कर सकता है, कोई आज भी फ़िल्म वाले कैमरे से ही फ़ोटोग्राफी कर सकता है। यह सब हमारे वैयक्तिक चयन की बातें हैं और इन पर कोई बहस या टिप्पणी करना बेमानी है। असल बात तो यह है कि हमें बदलावों के प्रति एक स्वस्थ और सकारात्मक नज़रिया अपनाना होगा। अति सबकी बुरी होती है। स्वीकार की भी और अस्वीकार की भी। एक स्वस्थ दृष्टि यह हो सकती है कि हम नए के प्रति खुला और उदार नज़रिया रखें और उससे हमारा जो हित हो रहा है उसे मुक्त मन से स्वीकार करें, और ऐसा करते हुए उन बातों पर भी ध्यान दें जो उस नए के कारण हो रही हैं और जिन्हें नहीं होना चाहिए था। बहुत बार नए और पुराने के बीच संतुलन और तालमेल से भी बात बन जाती है। आप मुद्रित किताब भी पढ़ सकते हैं और यथावश्यकता उसके डिजिटल संस्करण का भी उपयोग कर सकते हैं। आप किसी रंगशाला या चित्र वीथी में भी जा सकते हैं और छोटे या बड़े पर्दे पर भी उनका आनंद ले सकते हैं। मुझे हमेशा लगता है कि जीवन का असल आनंद संतुलन में ही है। अति से बात बनती नहीं है। हो सकता है किन्हीं खास क्षणों में हम अतिवादी रुख अख़्तियार कर लें, यह भी हो सकता है कि वह रुख हमें तात्कालिक रूप से जीत दिला दे, हमें सर उठाने का मौका दे दे, हमें त्वरित संतोष प्रदान कर दे, हमेशा ऐसा ही हो यह क़तई ज़रूरी नहीं है।

जीवन में जो बदलाव आ रहे हैं, उन सबके प्रति नकार का भाव उतना ही अनुचित है जितना उन सबके प्रति आंख मूंद कर स्वीकार का भाव है। ये दोनों भाव अतिवादी हैं और इनसे बच कर चलने में ही हमारा हित छिपा हुआ है। हम हर बदलाव का अपने नज़रिये से आकलन करें, उसे परखें और उसके बाद ही उसे अस्वीकार या स्वीकार करें - यही औचित्य का तकाज़ा है। यह भी समझ लिया जाना चाहिए कि हर बदलाव हरेक के लिए एक समान अर्थ नहीं रखता है। किसी के लिए वह बहुत अच्छा हो सकता है और किसी अन्य के लिए वैसा नहीं भी हो सकता है। इसलिए बदलाव के प्रति सामूहिक रुख का कोई अर्थ नहीं है।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

राजस्थान के लोक-चित्र- एक सशक्त और समृद्ध परंपरा

कला जब लोकतान्त्रिक रूप से सभी की हो जाती है तो लोक जीवन की या लोक कलाएं हो जाती है। अन्य लोक कलाओं की तरह लोक चित्र भी मानवीय संवेदनाओं और भावों का प्रदर्शन ही तो होते हैं।

लोक कलाएं ही तो है, चाहे लोक-चित्र ही क्यों न हो, इनमें ही तो संस्कृति और संस्कारों की जड़े फैली होती है और लोक-जीवन को प्राणवायु देती रहती हैं। राजस्थान की चित्रांकन-परम्परा में केवल रंग और कूंची का समागम ही नहीं है, बल्कि इनमें कला की अन्य विधाएं, चाहे गीत व नृत्य हो, कहानियां हो, पर्यावरण हो, पशु पक्षी हो, लोकाचार, लोक-संस्कार, धर्म-अध्यात्म, ग्रह-नक्षत्र और हमारी जीवन शैली हो, वह भी इन लोक चित्रों में शामिल है।

अन्य क्षेत्रों की भांति, राजस्थान के लोक चित्रों में भी धार्मिक अनुष्ठान, संस्कृतिक समन्वय, आर्टिस्टिक इनोसेंस और विशिष्ट शैली या परपोसन का समावेश देखा जा सकता है। लोक चित्रांकन-परम्परा में कोई ज्यादा तामझाम वाले उपकरणों की या टूल्स की जरूरत नहीं पड़ती और यही लोक चित्रों की या लोक कलाओं की खूबसूरती होती है। आमतौर पर किसी क्षेत्र विशेष के लोक चित्र बनाने हेतु आस-पास पाए जाने वाले पेड़-पौधों की टहनियां, नेचुरल फाइबर, मिट्टियां और गोंद काम में आती है। फड चित्रों या पिछवाई में लोकल पिगमेंट्स जैसे हिर्मिच, हिंगलू, पेवडी बहुत काम में आते हैं, तो मांडना के लिए गाय का गोबर, खड़िया मिट्टी, हल्दी आदि का उपयोग होता है तो अभिप्राय यह है कि भाव को प्रकट करने के लिए लोक कलाकार या यूं कहें लोक चित्रकार कभी भी संसाधनों का मोहताज नहीं रहा। राजस्थान के संदर्भ में तो लोक चित्रों के नाना प्रकार होते हैं और किसी भी चित्र के तीन एलिमेंट्स होते है, सपोर्ट - यानि किस सतह पर वह चित्र बना है जैसे कपड़ा, कागज, भित्ति और लकड़ी। इसी तरह से माध्यम जैसे रंग जिसमे गेरू, खड़िया, नील, हिर्मिच, पेवडी आदि प्रमुख है, वैसे तकनीक तो आमतौर पर एक जैसी ही होती है बस थोडा फीचर और नयन नक्श में बदलाव होता है। यह कलाकार की परंपरा और कभी -कभी व्यक्तिगत शैली पर भी निर्भर करती है, जैसे फड या पिछवई कपडे पर बनाये जाते है, पाने कागज पर और कावड लकड़ी पर।

अब्दुल लतीफ़ उस्ता

■ लोक कला का संरक्षण कला के सापेक्ष में व रोजगार के अवसरों को पैदा करने में भी महत्वपूर्ण रहेगा

राजस्थानी लोक चित्रों पर पर लिखना अथाह और असीमित है । उदयपुर के पास में गांव है बस्सी और जिसमें लकड़ी के खिलौने, पोर्टेबल टेम्पल आदि का विषय देवी-देवताओं का जीवन चरित्र व पौराणिक घटनाएं और महापुरुषों की जीवन गाथा हो सकती है और आज के दौर में तो कंटेंपरेरी विषयों पर भी चित्र बनाए जा रहे हैं। कावड बनाने वाले कारीगर, सुथार या जांगिड ब्राह्मण होते है और जो कावड भी बनाते है और चित्र भी। जंगलों में पाए जाने वाली कवेलू के महीन टुकडो को पीसकर गोंद के साथ मिलकर कावड पर लगाया जाता है और इस प्रक्रिया को इन्टाला कहा जाता है फिर लाल पत्थर घिस कर उसको रंगा जाता है। कावड पढने वाले कावड़िया भाट और जो जजमान आमंत्रित करते थे, वे कावड खुलवाने वाले कहलाते थे।

भारतीय लोक चित्र परंपरा में कावड भी एक तरह की विजुअल एड ही है और पुराने दौर में नीतिगत व मानवीय मूल्यों को धर्म व अध्यात्म के माध्यम से समझाने का सार्थक व लोकतांत्रिक तरीका रहा है। जब कावड के सभी पट पूरी तरह से खुल जाते हैं तो बीच में तीन मूर्तियां रहती है जो आमतौर पर रामचंद्र जी की, सीता जी की और लक्ष्मण जी की होती है । अब इन दिनों अलग-अलग विषयों पर कावड बन रही है। स्टोरी टेलिंग में या सूचनाओं के संप्रेषण में कावड सरीखे विजुअल ऐड्स महत्वपूर्ण होते थे और लोगों में नव भाव पैदा कर देते थे। राजस्थान में लकड़ी माध्यम पर कावड के अलावा देवल, तोरण, खांडे, बाजोट, चोपड़ा, माणकथंभ, आलिये व गंजीफे आदि बनते थे। कपडे पर भी फड और पिछवाई लोक चित्र बनते हैं। शाहपुरा, भीलवाड़ा का जोशी परिवार फड बनाने की कला में बहुत माहिर रहा है और वास्तव में इनको बनाने का मकसद वही होता है जो कावड का होता है। फड स्क्रॉल की तरह होता है जिस पर अलग-अलग लोक देवताओं के जीवन की घटनाओं पर चित्र बनाए जाते रहे हैं। राजस्थान में फड बनाने की बड़ी सशक्त परंपरा रही है और चित्रित लोक देवताओं का भी बहुत मान और महत्व रहा है।

पाबू, हडबू, रामदेव, मांगलिया मेह। पांचू पीर पधारजो गोगाजी जेह

लोक देवताओं ने सामाजिक मूल्यों के लिए, सामाजिक समरसता के लिए और समाज के सभी वर्गों के उत्थान के लिए अपने जीवन को न्योछावर किया, तो उन्हीं की सुकीर्ति है जिसको बताने के लिए फड़े बनती रही हैं। सबसे रोचक बात यह है कि फड बांचना अपने आप में इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है कि इसे लयबद्ध व संगीतमय तरीके से बाँचा जाता है ताकि आमजन के लिए रुचिकर व ग्राह्य हो सके। फड बांचने वाले को भोपा और भोपन कहा जाता है। देवनारायण जी, रामदेव जी, पाबूजी की फड़े महत्वपूर्ण है, लेकिन आजकल कंटेंपरेरी मुद्दों जैसे बेटी बचाओ दहेज विरोधी अभियान जैसे मुद्दों पर भी फडे बनती व बांचती देखी जा सकती है।

लोक कलाओं की एक खूबी भी यह रहती है कि वह स्वयं को मूल में रखते हुए नए एलिमेंट्स को अपने में मिला लेती है। कपडे पर अन्य लोक चित्र बनते हैं उनमें पिछवाईयाँ प्रमुख है। पिछवई का सम्बन्ध प्रसिद्ध श्रीनाथजी मंदिर से है। पिछवाई भी कपडे पर बनती है और फड भी कपडे पर बनी है तो फिर उनमें अंतर क्या रहा? पिछवाई को नरेट नहीं किया जाता, आम तौर पर इसमें कंपार्टमेंटाइजेशन भी नहीं होता जैसा कि फड में होता है।मांडने दीवारों पर बनाए जाने वाले चित्र है जिसमे दीवार पर मिट्टी और गाय के गोबर से लेप किया जाता है और फिर अलग-अलग पैटर्न में हल्दी, हिंग्लू जैसे रंगों से अलग-अलग अवसरों के लिए मांडने बनाए जाते हैं। जैसे पगल्या - दीपावली के समय लक्ष्मी पूजन से पूर्व देवी के घर में आगमन के रूप में, ताम-विवाह के समय लग्न मंडप में शुभ दाम्पत्य हेतु, चैकडी- होली के अवसर पर, थापा-घर की चौखट पर कुमकुम तथा हल्दी से बनाए गये हाथों के निशान होते हैं। इसी तरह से मोरडी माण्डणा-दक्षिणी तथा पूर्वी राजस्थान में मीणा जनजाति की महिलाओं द्वारा घरों में बनाई गई मोर की आकृति मोरडी माण्डणा कहलाती है। स्वास्तिक /सातिया/सांखिया- उत्तरी व पश्चिमी राजस्थान में सांखिया, तथा पूर्वी राजस्थान में सातिया कहलाता है।मांगलिक अवसरों पर ब्राहाणों के द्वारा मन्त्रोचार से पूर्व पूजा के स्थान पर स्वास्तिक का अंकन किया जाता है। मांडणा बनाए जाने के दौरान महिलाएं सुंदर आवाज में गीत भी गाती हैं। लोक चित्र को अन्य माध्यमों पर उकेरने के अलावा मानव ने खुद की देह पर भी चित्रांकन किया है, जिनमे मेहंदी और गोदना प्रमुख है। अलग -अलग अवसरों पर मेहंदी लगाना राजस्थान की प्राचीन लोक कला रही है जो समृद्धि और जीवन का प्रतीक है।

रहीमजी ने लिखा भी है

यों रहीम सुख होत है, पर उपकारी के संग।

बाँटनवारे को लगे, ज्यों मेहँदी को रंग॥

इसी तरह ख्यातनाम साहित्यकार सौभाग्य सिंह शेखावत जी के शब्दों में

रच दे मेहँदी राचनि, नाचन रनमुख नाह।

जीता जंग बधावस्या, कटिया तन संग दाह॥

मेहँदी के अलावा देह सिंगार की गोदना परम्परा आज दुनिया के कोने-कोने में इस कदर पहुंच गई है कि इसका अनुभव करने के लिए कई पर्यटक राजस्थान खींचे चले आते हैं। कुछ लोकप्रिय गोदना डिज़ाइनों में चेहरे पर वृत्त और अर्धचंद्राकार, डॉट पैटर्न, बिच्छू, तोते, फूल और बाँहों पर देवी-देवताओं की छवियां शामिल हैं।बछड़ों पर और महिलाओं की छाती के बीच फूलों की एक विशाल विविधता, शाश्वत जीवन के पेड़ या कल्प वृक्ष और ऊंट, घोड़े, मोर और मगरमच्छ की एक जोड़ी जैसे जानवरों के भी गोदना बनाये जाते है। राजस्थान के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र की महिलाएं अपने प्रेम और भक्ति के प्रतीक के रूप में अपने पति के नाम के गोदना बनवाती हैं। सार रूप में, राजस्थान की लोक चित्रांकन परम्परा अपने आप में निस्संदेह अनूठी है और इस विधा का संरक्षण न केवल कला के सापेक्ष हितकारी है बल्कि रोजगारपरक अवसरों को पैदा करने में भी महत्वपूर्ण रहेगा।

अब्दुल लतीफ़ उस्ता,
कला एवं विरासत अध्येता

मिनी सचिवालय के मुख्य द्वार पर बने शौचालय में फैली गन्दगी

सादुलपुर, (निसं)। मिनीसचिवालय के मुख्य द्वार पर बने शौचालय की साफ-सफाई नहीं होने के कारण जहां मिनीसचिवालय में आने वाले लोग परेशान हैं, वहीं दुसरी ओर प्रलेख लेखक, अधिवक्तागण व स्टाम्प वेंडरों को शौचालय में फैली गन्दगी में ही शौच जाने का मजबूर होना पड़ रहा है। गंभीर बात तो यह है कि इस शौचालय में शराब के खाली पव्वों को ढेर लगा हुआ है ।

इस परिसर में प्रशासनिक अधिकारियों व पुलिस अधिकारी तथा न्यायिक अधिकारियों के निवास करने के बाद भी बिना किसी डर व भय के लोग यहां पर शराब पीकर चले जाते हैं तथा शराब के खाली पव्वे शौचालय में फैंक कर इतिश्री करते हैं। यहां एसडीएम राजगढ, तहसीलदार राजगढ, एडिशनल एसपी एवं न्यायिक अधिकारियों सहित अन्य कार्मिकों के आवासीय भवन भी बने हुए हैं । हांलाकि इस शौचालय की गंदगी के लिए गहरा होदनुमा गटर बना हुआ था। जिसकी ऊपर से छत गिरने के बाद उपखण्ड अधिकारी राजगढ़ द्वारा जीर्णोद्धार नहीं करवाने के बजाय गटर को मिटटी से भरवा दिया गया ।

मिनीसचिवालय के मुख्य द्वार पर बने शौचालय की साफ-सफाई नहीं होने से लगा गन्दगी व शराब के खाली पव्वों को ढेर ।

■ यहां एसडीएम राजगढ, तहसीलदार राजगढ, एएसपी एवं न्यायिक अधिकारियों के आवास बने हुए हैं

■ आमजन, प्रलेख लेखक, अधिवक्तागण व स्टाम्प वेंडरों को गन्दगी में ही शौच जाना पड़ रहा है

जिससे अब शौचालय में ना तो पेशाब की निकासी हो पाती है और ना ही इस शौचालय की साफ-सफाई की पाती है। आज आमजन, अधिवक्तागण, स्टाम्प वेंडर एवं प्रलेख लेखकों को गन्दगी एवं खाली पव्वों से भरे शौचालय में ही शौच जाने को मजबूर होना पड़ रहा है।

लाखों रुपए की लागत से बना मसूदा का मुख्य बस स्टैंड बदहाल

मसूदा, (निसं)। मसूदा कस्बे में बने नए बस स्टैंड का रख रखाव नहीं होने एवं बसों का ठहराव बंद हो जाने से हाल बेहाल हो गया है। मसूदा कस्बे में यात्रियों की सुविधा एवं बसों के लिए पर्याप्त स्थान को लेकर रामगढ़ चौराहे पर नए बस स्टैंड का निर्माण कराया गया था ।

बस स्टैंड के निर्माण के बाद कुछ समय तक रोडवेज आगार द्वारा बुकिंग भी शुरू की जिससे सभी मार्गों पर आने-जाने का सिलसिला शुरू हो गया था। इससे यात्री भी बस स्टैंड पर जाकर बसों का इंतजार कर लेते थे लेकिन पिछले दो-तीन सालों से नए बस स्टैंड पर रोडवेज आगार की और से बुकिंग बंद कर दिए जाने के बाद बस स्टैंड का हाल बेहाल होना शुरू हो गया। इसके चलते नया बस स्टैंड का इंतजार करने वाले यात्रियों को बसों के बस स्टैंड के बाहर से ही निकल जाने से बैरंग लौटना पड़ता है। कई बार कस्बे वासियों द्वारा बस स्टैंड को सुचारू चलाने को लेकर गुहार लगाई जाने के बाद भी कोई सुध नहीं लेने से वर्तमान में बुकिंग के रूप में रखी कुर्सी एवं अन्य सामान पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गए हैं साथ ही यात्रियों के बैठने के लिए लगाई गई कुर्सियां भी अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा रही हैं साथ ही बस स्टैंड भवन का फर्ज भी जगह-जगह से क्षतिग्रस्त हो रहा है। लाखों रुपए की लागत से बना नया बस स्टैंड अब लावारिस मवेशियों की शरणगाह व गंदगी फैलने के लिए कचरा पात्र बनकर रह गया है ।

मसूदा के नए बस स्टैंड पर फैली गंदगी एवं घूमते आवारा जानवर।

■ बुकिंग, बिजली पानी बंद, दरवाजे, कुर्सियां एवं टूटा फर्नीचर

■ लावारिस मवेशियों व असमाजिक तत्वों की शरणागाह बना बस स्टैंड

■ जिला परिषद सदस्य दिनेश टांक ने बस स्टैंड के लिए मांगा बजट

जिला परिषद सदस्य दिनेश टाक ने जिला प्रमुख सुशील कंवर पलाड़ा को पत्र प्रेषित कर मुख्य बस स्टैंड को दुरुस्त कराने के लिए बजट आवंटन करने की मांग की। उन्होंने पत्र में बताया कि रामगढ़ बांदनवाड़ा रोड पर ग्राम पंचायत मसूदा द्वारा कई वर्ष पूर्व बस स्टैंड भवन का निर्माण कराया गया था लेकिन पिछले कुछ साल से बस स्टैंड का संचालन नहीं होने से बस स्टैंड की इमारत खंडर बन गई एवं परिसर में गंदगी के ढेर लग गए। यात्रियों के लिए बनाए गए सुविधा घर भी खंडित हो गए दीवारें क्षतिग्रस्त हो गई हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 23 मई, 2022

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, शतभिषा नक्षत्र रात्रि 10:22 तक, वैधृति योग रात्रि 1:05 तक, कौलव करण दिन 11:35 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मीन, बुध-वृष, गुरू-कुम्भ, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज त्रिलोकनाथ अष्टमी, वैधृति पूण्य, पंचक है और शुक्र मेष राशि में रात्रि 8:27 पर प्रवेश करेगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:21 तक, शुभ 9:02 से 10:42 तक, चर 2:04 से 3:45 तक, लाभ-अमृत 3:45 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:40, सूर्यास्त 7:07

मेष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

सिंह

परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में प्रसन्नता वातावरण बना रहेगा। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कन्या

आर्थिक मामलों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

वृश्चिक

परिवार में आपसी अनबन-वाद-विवाद बढ़ने का भय है। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

धनु

मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। महत्वपूर्ण और आवश्यक कार्यों के संबंध में उचित सहयोग मिलेगा। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

मकर

अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आय में वृद्धि होगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मीन

आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। स्वभाव पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

चोरों ने सूने मकान को बनाया निशाना, जेवर-नकदी पर हाथ साफ किया

- निर्माणाधीन मकान की साइड से लाखों का सरिया चोरी, मंदिर के दानपात्र से चुराई नकदी
- पीड़ितों ने चोरों के खिलाफ कराए मुकदमे दर्ज

अजमेर, (कासं)। अजमरे के दो थाना क्षेत्रों में चोरी की वारदात सामने आई है। क्रिश्चियनगंज थाना क्षेत्र के वैशाली नगर स्थित एक सूने मकान में चोरी की वारदात सामने आई है। चोर मकान से जेवरात व नकदी चुरा ले गए। पीड़ित ने चोरों के खिलाफ क्रिश्चियनगंज थाने में मुकदमा दर्ज कराया है। वहीं रामगंज थाना क्षेत्र चंदबरदाई नगर में एक निर्माणाधीन मकान की साइड से सरिया चोरी होने की घटना सामने आई है। एक ही दिन में दो अलग-अलग साइड से लाखों का सरिया चोरी होने पर पीड़ित रामगंज थाने में दर्ज मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस ने चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

अजमेर के क्रिश्चियन गंज थाना क्षेत्र स्थित वैशाली नगर पानी की टंकी के पास जनता कॉलोनी में किराए के मकान में रह रहे सुरेशचंद पुत्र रूपाराम जाट ने बताया कि वह रोडवेज में कंडक्टर है और 17 मई को घरेलू काम से वह अपने गांव लाडवा रियाबडी (नागौर) परिवार सहित गया हुआ था। रविवार को चार दिन बाद जब वापस पहुंचा तो मुख्य द्वार पर लोहे के गेट के तो ताला लगा हुआ है लेकिन अन्दर मकान के अन्य ताले टूटे हुए है और सारा सामान कमरों में बिखरा पड़ा है।

पीड़ित ने चोरों द्वारा की गई वारदात के बारे में बताया।

सुरेशचंद ने इसकी सूचना क्रिश्चियनगंज थाना पुलिस को दी। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने मौका मुआयना किया। पीड़ित सुरेशचंद ने अज्ञात चोर के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है, जिसमें बताया कि चोरी उसके सूने मकान से एक जोड़ी चांदी की पायजेब (200 ग्रमा), एक जोडी (125 ग्राम), बिछिया जोडी 5 नग, तीन चांदी के सिक्के, दो नाक का काटा सोने के, एक जोड़ी सोने के कान के टोप्स (5 ग्राम) और करीब बीस से पच्चीस हजार की नकदी चुरा ले गए।

पुलिस ने पीड़ित की रिपोर्ट पर मामला दर्ज कर जांच एएसआई नाथुलाल को सौंपी। चोरों द्वारा सूने मकान सहित शहर के मंदिरों को निशाना बनाया जा रहा है। क्लॉक टावर थाना क्षेत्र स्थित पहाडगंज राजेंद्र स्कूल मयानी अस्पताल के पास शनि मंदिर और भैरव मंदिर से अज्ञात चोरों ने दान पात्र को तोडक़र लगभग पांच हजार रुपये की दान राशि चुराई। क्षेत्रवासियों कमलेश कुमार खींची ने बताया कि विगत दिनों पूर्व भी इसी मंदिर के बरामदे में एक खानाबदोश महिला का कत्ल भी हो चुका है। उसके कुछ दिनों बाद मंदिर के दानपात्र तोड़ कर अज्ञात बदमाशों ने दान राशि चुराई थी और अब एक बार फिर से दानपात्र तोड़ कर लगभग 5 हजार रुपये की नकदी चोर चुरा ले गए। मामले की सूचना क्लॉक टावर थाना पुलिस को दी गई, पुलिस ने मौका मुआयना किया। वहीं पुलिस को सीसीटीवी फुटेज भी सौंपे पर गए हैं जिसमें एक व्यक्ति सरिये से दान पात्र को तोडक़र नगदी चुराता हुआ नजर आ रहा है। पुलिस ने आश्वस्त किया कि जल्द ही चोर को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

'मूक पशु-पक्षियों के लिए पानी की व्यवस्था पुनीत कार्य'

राजस्थान पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष राज्य मंत्री धर्मेंद्र राठौड़ ने 200 से अधिक परिंडे बांटे।

अजमेर, (कासं)। राजस्थान पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष राज्य मंत्री धर्मेंद्र राठौड़ ने कहा कि मूक पशु पक्षियों के लिए जल की व्यवस्था से एक पुनीत कार्य है इससे बड़ा कोई पुनीत कार्य नहीं है।

निगम अध्यक्ष राठौड़ पुष्कर रोड पर विशाल परिंडा वितरण समारोह में औपचारिक बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विशाल भीषण गर्मी तेज लू और चिलचिलाती धूप में पशु पक्षियों के लिए पानी की व्यवस्था करना हर आम आदमी का नैतिक कर्तव्य है। पानी के अभाव में पशु पक्षी तड़प तड़प कर जान दे देते हैं। हमारी सनातन संस्कृति के अनुसार हर पशु पक्षी पर दया एवं उदारता बरतनी चाहिए।

कार्यक्रम के संयोजक मनोनीत पार्षद ने बताया कि परिंदों को भीषण गर्मी से राहत देने के लिए रविवार को पुष्कर रोड पर 200 से अधिक परिंदों का वितरण किया गया एवं आम नागरिकों को परिंडा वितरण के समय मूक पशु पक्षियों के लिए जल उपलब्ध कराने की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर अजमेर शहर जिला कांग्रेस कमेटी के शिव कुमार बंसल, विजय नागोरा, कैलाश जालीवाल, महेंद्र जोधा, सुमेर सिंह शेखावत, ओम प्रकाश मंडरावलिया, मनीष सेन, मुकेश सबलानिया, शब्बीर चीता महेंद्र सिंह, राजकुमार कलवानी, नुर आलम खान, पुनीत साखला, छोटू सिंह रावत सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

भूमि समर्पण हेतु सहयोग जारी

नागौर, (निसं)। संत शिरोमणि श्री लिखमीदास स्मारक विकास संस्थान अमरपुरा, नागौर के निमित्त भूमि निधि समर्पण निधि देने का कार्यक्रम उत्साह व उमंग के साथ लगातार जारी है। भामाशाह द्वारा लगातार सहयोग किया जा रहा है। इसी श्रंखला में मारवाड जंक्शन जिला पाली में आयोजित संत शिरोमणि लिखमीदास महाराज के मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में भामाशाह चतराराम गहलोत द्वारा एक बीघा जमीन के लिए राशि देने की घोषणा की गई।

इस अवसर पर सीकर के सांसद सुमेधानंद सरस्वती तथा संस्थान अध्यक्ष व राज्यसभा सांसद राजेंद्र गहलोत भी उपस्थित थे। इस अवसर पर संस्थान के महासचिव राधा किशन तंवर भी उपस्थित थे। इसी प्रकार से नागौर में भी चतर सिंह, पुखराज,धनाराम सांखला, सह सचिव हरीश चंद्र देवडा, पापलाल जगदीश कच्छावा, हिरालाल, भूर सिंह परिहार, धनेश सांखला, बलदेव कच्छावा, टीकम चंद कच्छावा, रामस्वरूप कच्छावा ने आर्थिक सहयोग प्रदान किया। इस अभियान में कृपाराम गहलोत कार्यकारिणी सदस्य धर्मेंद्र सोलंकी, राम कुमार सोलंकी, कोषाध्यक्ष कमल भाटी , राधा किशन तंवर के द्वारा इस संपर्क अभियान में सहभागिता दी गई।

युवक ने लगाई फांसी, मौत

भीलवाडा, (निसं)। शहर के सदर थाना क्षेत्र के ईरांस गांव में बीती रात गुजरात के रहने वाले कोल्ड ड्रिंक फैक्ट्री संचालक के बेटे ने अज्ञात कारणों के चलते फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सदर थाना पुलिस ने बताया कि राजकोट गुजरात निवासी दशाचंद्र सिंह विगत 20 साल से परिवार सहित यहां ईरांस में रह रहे हैं। सिंह यहां कोल्डड्रिंक फैक्ट्री चलाते हैं। यहीं इनका निवास भी है। सिंह, पत्नी सहित कल बाजार गये हुए थे। घर पर उनका 20 वर्षीय बेटा दिग्विजय सिंह अकेला था। इस दौरान दुधिया दुग्ध देने सिंह के घर पहुंचा। उसने दुग्ध के लिए शटर बजाया, लेकिन कोई दूध लेने मकान से बाहर नहीं आया। इस पर दुधिये ने दशाचंद्र सिंह को फोन कर इस बारे में बताया। पिता ने बेटे दिग्विजय को फोन किया, लेकिन उसने कॉल रिसीव नहीं की। बाद में सिंह व उनकी पत्नी घर लौटे तो उन्हें बेटा दिग्विजय रस्से के फंदे पर झूलता मिला। उसे उतारकर एमजी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टर्स ने उसे मृत घोषित कर दिया। दिग्विजय नीट की तैयारी कर रहा था। अभी यह पता नहीं चल पाया कि उसने किन कारणों के चलते उसने यह कदम उठाया। पुलिस ने रविवार को पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप मामले की जांच शुरू की है।

नामदेव भगवान की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के सफल आयोजन को लेकर चर्चा

- आयोजन को सफल बनाने वाले कार्यकर्ता तथा भामाशाह का मोमेंटो देकर सम्मान
- भारतवर्षीय दर्जीयान ट्रस्ट की बैठक

पुष्कर, (निसं)। अखिल मारवाड़ी भारतवर्षीय दर्जीयान ट्रस्ट के तत्वाधान में रविवार को पुष्कर नामदेव भवन में सर्व समाज की आम बैठक पुष्कर ट्रस्ट अध्यक्ष नवरतनमल तोलम्बिया की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

बैठक के मुख्य अतिथि पूर्व ट्रस्ट अध्यक्ष रघुनाथ सीकरवाल, रामगोपाल बरणीया व रामगोपाल तोलम्बिया व विशिष्ठ अतिथि गुलाब चंद रुणवाल व रामलाल रुणवाल व ईश्वर चंद उठवॉल व हरीशंकर सारण थे। ट्रस्ट अध्यक्ष नवरतनमल टॉक ने बताया कि 6 से 8 मई को पुष्कर में आयोजित नामदेव भगवान की नवनिर्मित मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के सफल आयोजन को लेकर चर्चा की गई तथा आयोजन को सफल बनाने वाले कार्यकर्ता तथा भामाशाह का सम्मान मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। वहीं 8 मई को कार्यक्रम स्थल के बाहर हुवे विवाद को लेकर चर्चा की गई तथा दोनों पक्ष के तर्क वितर्क सुने गए तथा आगामी एक महिने ट्रस्ट की बैठक आयोजित कर उनके खिलाफ कार्यवाही की जायेगी।

मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के सफल आयोजन को लेकर चर्चा कर आयोजन को सफल बनाने वाले कार्यकर्ता तथा भामाशाह को मोमेंटो देकर सम्मानित किया।

टॉक ने बताया कि समाज का विकास समाज के साथ ही किया जा सकता है। समाज से ही ट्रस्ट का निर्माण होता है, समाज का उत्थान समाज के नागरिकों के सहयोग से ही किया जा सकता है। इस अवसर पर भूपेश कुमार ठाडा, हंसराज लोढ़ा, हरिनारायण सारण, उम्मेद मल टेलर, नेमीचंद भाटी, रघुनाथ नेरिया, जगदिश जासल, रामवतार टेलर, प्रकाश सारण, तिलोक नेरिया, जीवराज नेरिया, जगदिश बुला, सुखदेव नेरिया, सत्यनारायन पवार, भगवती लाल टेलर, रमेश चंद झांकल, गोरी शंकर मोयल, जगदिश नागर, दामोदर रुणवाल, कमल खत्ती, देवीलाल तोलम्बिया, रामकिशोर तोलम्बिया, दिनेश उठवाल आदि समाज के नागरिक मौजूद थे तथा मंच सचालन भूपेश कुमार ठाडा ने किया।

पूर्व प्रांतपाल गणों का सम्मान समारोह

अजमेर, (कासं)। किसी भी संस्था को सुचारू एवं व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पूर्व पदाधिकारियों का अनुभव व सलाह कारगर साबित होती है। संस्था की आगे की रणनीति व योजना में उनके अनुभव व राय से ओर अधिक अच्छे ढंग से कार्य कर सकते है।

उक्त उदगार पूर्व प्रान्तपाल लायन ओ एल दवे ने लायंस कूब अजमेर पृथ्वीराज द्वारा आयोजित पूर्व प्रान्तपाल गणों के सम्मान समारोह में कहे। प्रान्तीय पीआरओ लायन राजेन्द्र गांधी ने बताया कि अजमेर कूब के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में लायंस कूब के पूर्व प्रान्तपाल लायन मणिलाल गर्ग, लायन ओमकार लाल दवे, लायन सतीश बंसल का दुपट्टा पहना कर श्रीफल एवम स्मृति चिन्ह देकर समानित किया गया। इससे पूर्व अतिथियों ने लायंस कूब के जनक मेलविन जोन्स की तस्वीर पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। संभाग 2 की क्षेत्रीय अध्यक्ष लायन आभा गांधी भी मंचासीन थी। कूब अध्यक्ष लायन नीरज दोसी ने स्वागत भाषण दिया।

कूब सचिव लायन राजेश बोहरा ने सचिवीय परिवेदन पढ़ा। कोषाध्यक्ष लायन त्रिलोक गोयल ने आय व्यय का ब्यौरा पेश किया। ध्वज वंदना लायन ज्योति दोसी ने पढ़ी। आभार लायन रमेश लखोटिया ने किया। इस अवसर पर लायन विनय गुप्ता, लायन सुनील शर्मा, लायन मोहन गुप्ता, लायन राजेन्द्र गांधी, लायन सीमा शर्मा, लायन रीना बोहरा, लायन शशि गुप्ता सहित अन्य उपस्थित थे।

जैव विविधता दिवस पर संवाद व श्रमदान

उदयपुर, (कासं)। झील प्रेमियों ने रविवार को जैव विविधता दिवस पर संवाद व श्रमदान का आयोजन किया।

संवाद मे पर्यावरणविद डॉ अनिल मेहता ने कहा कि जब तक जल, जलाशय, जंगल, जमीन, जानवर को संसाधन माना जाता रहेगा, जैव विविधता संकट में रहेगी। मेहता ने कहा कि पेड, पानी, पहाड , मिट्टी कोई संसाधन नही है। ये जीवन स्त्रोत है। इन्हे संसाधन मानना छोड जीवन स्त्रोत स्वीकार करना होगा, और उसी अनुरूप व्यहवार करना होगा। तभी हम सभी का और समस्त जीव जगत का वर्तमान और भविष्य सुरक्षित रह सकेगा।

झील विकास प्राधिकरण के पूर्व सदस्य तेज शंकर पालीवाल ने कहा कि जंगलों के कटने, आग लगने जैसे कारणों से जैव विविधता को खतरा उत्पन्न हुआ है। इससे जीवो का भोजन चक्र प्रभावित हुआ है। जैव विविधता की रक्षा के लिए हमें हमारे जंगलों और जलाशयो को बचाना होगा।

गांधी मानव कल्याण सोसाइटी के नंद किशोर शर्मा ने कहा कि शहरों मे सर्वत्र डामारिकरण व कंक्रीट की सरंचनाओं से कच्ची जमीन ही नहीं बची है। इससे हरीतिमा खत्म हो रही है व शहर पक्षी विहीन होते जा रहे हैं। यह घटती जैव विविधता दु:खद भविष्य का संकेत ह पर्यावरण हितैषी प्राची शर्मा ने कहा कि प्रकृति की सुंदरता और पर्यावरण संरक्षण के लिए जैव विविधता को संजो कर रखना बहुत आवश्यक है। मानव और जीव जगत का भविष्य इसी पर निर्भर है।

इस अवसर पर पिछोला `क हनुमान घाट पर झीलप्रेमियों ने श्रमदान कर झील क्षेत्र से तैरती हुई पॉलीथिन, प्लास्टिक पाउच, थैलियों में बंधी सड़ी गली खाद्य सामग्री, शराब पानी की बोतलें व खरपतवार को हटाया गया। श्रमदान में प्राची शर्मा, दिव्या नागर, अहाना दवे, ध्रुपद सिंह, कुशल रावल, तेजशंकर पालीवाल , नन्द किशोर शर्मा ने भाग लिया।

स्वराज गौरव यात्रा बाइक रैली के साथ कुंभलगढ़ पहुंची

उदयपुर, (कासं)। प्रताप गौरव केन्द्र की ओर से निकाली जा रही स्वराज गौरव यात्रा के दौरान महाराणा प्रताप के जयकारों एवं गीतों की चहुंओर ओर गूंज रही, जिस जिस मार्ग से स्वराज गौरव यात्रा गुजरी, जगह - जगह स्वागत सत्कार के कार्यक्रम होने के साथ ही सभा के आयोजन भी सम्पन्न हुए जिसमें स्वराज के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने एवं 2 जून को महाराणा प्रताप जयंती पर प्रताप गौरव केन्द्र में सायं 6 बजे होने वाले महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह में आने का निमंत्रण दिया गया। अनुराग सक्सेना ने बताया कि शनिवार सायं स्वराज गौरव यात्रा को प्रताप चौराहा कुंभलगढ से बाइक रेली के साथ केलवाड़ा शीतला माता पार्क लाया गया जहां रथ का स्वागत किया गया। रथ कुंभलगढ दुर्ग में गया। वहाँ से बाईक रैली के साथ रथ को केलवाड़ा लेकर आये जहां कार्यकर्ताओं ने रथ पर महाराणा प्रताप के स्टैच्यू पर पुष्प अर्पित कर आरती की।

भीलवाड़ा में टॉवर पर चढ़ा मानसिक विक्षिप्त युवक

भीलवाडा, (निसं)। शहर के सदर थाना क्षेत्र में एक युवक भरी दोपहरी मोबाइल टावर पर चढ गया। पुलिस ने आधा घंटे की समझाइश के बाद उसे जैसे तैसे नीचे उतारा और शांतिभंग के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। वहीं पुलिस का कहना है कि युवक की दीमागी हालत ठीक नहीं है। सदर थाना पुलिस के अनुसार रविवार दोपहर करीब 1.30 बजे सुवाणा पंचायत समिति के नजदीक स्थित मोबाइल टावर पर एक युवक चढ गया। जैसे-जैसे युवक के टावर पर चढ़ने की खबर फैली, वैसे-वैसे लोगों की भीड भी मौके पर जमा हो गई। युवक टावर पर चढने के बाद वीरुगिरी करता दिखाई दिया। यह देखकर लोग सकते में आ गये। इस बीच, पुलिस को भी सूचना दी गई। सदर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और हालात से उच्चाधिकारियों को अवगत कराने के साथ ही समझाइश के प्रयास शुरू किए। डीएसपी सदर रामचंद्र चौधरी सूचना पाकर मौके पर पहुंचे और अथक प्रयास के बाद युवक को टावर से उतर लिया गया। पुलिस जीप में इसे थाने ले जाकर पूछताछ की गई तो युवक ने खुद को बडलियास थाने के अडसीपुरा हाल ईरांस निवासी प्रकाश (22) पुत्र श्यामलाल तेली होना बताया। पुलिस का कहना है की उसकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। प्रकाश को शांतिभंग के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया।

आम सूचना

मेरी सास श्रीमती भूली पत्नी श्री चन्द्रा जाति जाट निवासी ग्राम तिलोनिया तहसील किशनगढ़ जिला अजमेर राजस्थान का स्वर्गवास दिनांक 10.03.1998 को हो गया है, जिनका मृत्यु प्रमाण पत्र पूर्व मै नहीं बनवाया गया है, अत: जिस किसी भी व्यक्ति को इस बाबत कोई उजर, एतराज अथवा आपत्ति हो तो तहसीलदार, किशनगढ़ में मय दस्तावेज 7 दिवस के भीतर संपर्क करे।

भवदीय सरजू पत्नी स्व. चोथू

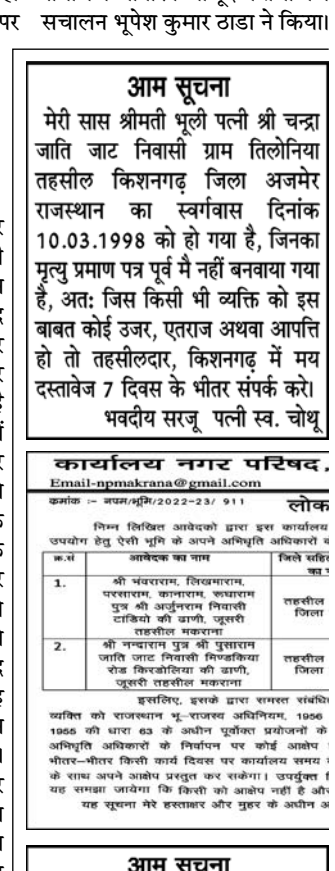

कार्यालय नगर परिषद,
Email-npmakrana@gmail.com
क्रमांक :- नपम/भूमि/2022-23/ 911 लोक

आम सूचना

मेरा एक प्लॉट खसरा नम्बर 256 में स्थित मालियों की ढ़ाणी, चमडाघर, मदनगंज किशनगढ़ में है। इस प्लॉट का बेचाननामा सन 1996 में जगदीश पुत्र किस्तूर माली ने मेरे नाम किया था। वो बेचाननामा पट्टे की फ़ाइल लगाने के दौरान घर के आस पास गुम हो गया है। अत: निवेदन है कि उक्त बेचाननामा प्रपत्र मिलने पर प्रार्थी की पास पहुंचाने की कृपा करावे।

प्रार्थी :- दुर्गेश देवी उर्फ़ दुर्गा देवी पत्नी गोविंद सिंह जाति रावणा राजपूत निवासी मालियों की ढ़ाणी, चमडाघर, मदनगंज किशनगढ़, मो. 9001014538

जैव विविधता के महत्व को बताया

नागौर, (निसं)। अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस सेन्ट जिवियर्स स्कूल में रविवार को उपवन संरक्षक ज्ञानचन्द मकवाना के निर्देशानुसार पदमश्री हिम्मताराम भाम्बू की अध्यक्षता में मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल परिसर में छायादार पौधे लगाये गये। पद्मश्री भांबू ने बताया कि पृथ्वी के संरक्षण के लिए जैव विविधता को बनाए रखना आवश्यक है।

इसलिए वन एवं वन्य जीवों को बचाने व अधिक से अधिक से पौधे लगाना जरूरी है। इस अवसर पर सेन्ट जिवियर्स स्कूल के संचालक शैतानराम चांगल व रेंजर नागौर देशराज ने जैव विविधता के महत्व को समझाया तथा स्कूली बच्चो के लिए जैव विविधता से संबंधित निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गयी। जिसमें प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरूस्कृत किया गया।

तैराकी प्रतियोगिता आयोजित

उदयपुर, (कासं)।15 वीं दायजी जोध सिंह जिला स्तरीय दो दिवसीय तैराकी प्रतियोगित रविवार को सम्पन्न हुई। जिला तैराकी संघ के सचिव प्रदीप आमेटा ने बताया कि प्रतियोगिता का उद्घाटन विनोद सनाढय एवं ललित सिंह झाला खेल अधिकारी खेलगांव द्वारा किया गया। प्रतियोगिता में 88 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। विजेत तैराक 1 जून से पांच जून तक जयपुर में आयोजित राज्य स्तरीय तैराकी प्रतियोगिता में भाग लेंगे। समापन समारोह के मुख्य अतिथि शकील हुसैन जिला खेल अधिकारी तथा चन्द्रगुप्त सिंह चौहान सचिव राज्य तैराकी संघ द्वारा किया गया। विजेताओं को पुरस्कृत महेश पालीवाल ने किया।

अजमेर के ऊंटड़ा में 60 जोड़ों का सामूहिक निकाह

- इदारा दावतुल हक की मुस्लिम समाज में सकारात्मक पहल

अजमेर, (कासं)। ऊंटड़ा गांव में शैक्षिक और सामाजिक संस्था इदारा दावतुल हक संस्था की ओर से 60 जोड़ों का सामूहिक निकाह समारोह रविवार को हुआ।

संस्था के प्रमुख मौलाना अयूब कासमी ने बताया कि प्रतिवर्ष ऐसे प्रोग्राम का आयोजन किया जाता रहा है। निकाह में दूल्हा-दुल्हन को घरेलू सामान भी संस्था की ओर से दिया गया। दोनों पक्षों के रिश्तेदारों को भोजन भी संस्था की ओर से नि:शुल्क करवाया जाता है। सामूहिक निकाह का उद्देश्य मुस्लिम समाज में गरीब वर्ग के लोगों के निकाह अच्छे तरीके से करवाने का है। इससे समाज में फिजूलखर्ची भी रुकती है। इस मौके पर पूर्व शिक्षा राज्यमंत्री नसीम अख्तर, मौलाना हुजेब बस्तानी, खादिमों की संस्था अंजुमन शेखजादगान के पूर्व अध्यक्ष अब्दुल जर्रार चिश्ती, डीएसपी शमशेर खान, एवोकेट बार एसोसिएशन के सदस्य फैयाज उल्ला, नवाब हिदायत उल्ला, अंजुमन सैयद जादगान के सचिव वाहिद हुसैन अंगारा, हाजी महमूद खान, पीर नफीस मियां चिश्ती, सलावत खां, पार्षद शाकिर, सैयद सलीम चिश्ती, अब्दुल नईम खान, आरिफ हुसैन, सलमान खान, मौलाना इमरान, मंजूर अली, रईस कुरैशी, डॉ अब्दुल मजीद, कयूम खान ने कार्यक्रम की तरीफ करते हुए कहा कि यह समाज में एक सकारात्मक पहल है।

सामूहिक निकाह कार्यक्रम में ऊंटड़ा के आसपास के क्षेत्रों के ग्रामीण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

सभी का मानना है कि महंगाई के इस दौर में सामूहिक निकाह के आयोजन होते रहने चाहिए। इस अवसर पर संस्था के प्रमुख मौलाना अयूब कासमी ने बताया कि निकाह के खर्च के लिए किसी भी परिवार से कोई राशि नहीं ली जाती है। संस्था सामूहिक निकाह के साथ साथ शैक्षिक और अन्य सामाजिक गतिविधियां का भी आयोजन समय समय पर करती आ रही है। मुस्लिम बच्चों को शिक्षा देने के लिए संस्था की ओर से शैक्षिक संस्थान भी चलाए जाते हैं। इन संस्थानों में बच्चों को कम्प्यूटर शिक्षा भी दी जाती है। सामूहिक निकाह के प्रोग्राम में ऊंटड़ा के आसपास के क्षेत्रों के ग्रामीण भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

कार्यालय नगर परिषद, मकराना नागौर (राज०)

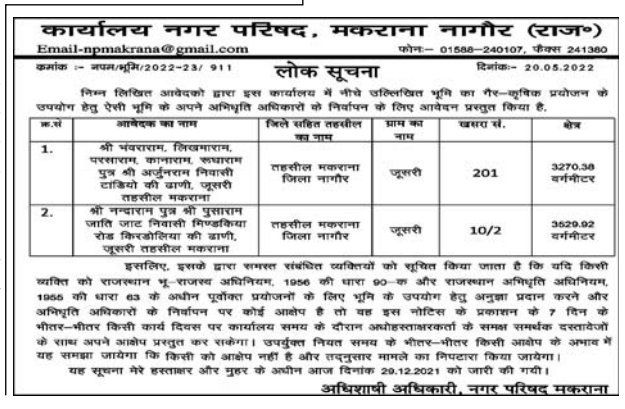

Email-npmakrana@gmail.com फोन:- 01588-240107, फैक्स 241380

क्रमांक :- नपम/भूमि/2022-23/ 911 **लोक सूचना** दिनांक:- 20.05.2022

निम्न लिखित आवेदको द्वारा इस कार्यालय में नीचे उल्लिखित भूमि का गैर-कृषिक प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारो के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है.

क्र.सं	आवेदक का नाम	जिले सहित तहसील का नाम	ग्राम का नाम	खसरा सं.	क्षेत्र
1.	श्री भंवराराम, लिखमाराम, परसाराम, कानाराम, रुधाराम पुत्र श्री अर्जुनराम निवासी टांकियो की ढाणी, जूसरी तहसील मकराना	तहसील मकराना जिला नागौर	जूसरी	201	3270.38 वर्गमीटर
2.	श्री नन्दाराम पुत्र श्री पुसाराम जाति जाट निवासी मिण्डकिया रोड किरडोलिया की ढाणी, जूसरी तहसील मकराना	तहसील मकराना जिला नागौर	जूसरी	10/2	3629.92 वर्गमीटर

इसलिए, इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारो के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तद्नुसार मामले का निपटारा किया जायेगा।

यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज दिनांक 29.12.2021 को जारी की गयी।

अधिशाषी अधिकारी, नगर परिषद मकराना

बीकानेर में पानी के लिए हाहाकार, दस दिन बाद मिलेगा नहर का पानी

टैंकरों के दाम हजार रुपए और कैंपर के 40 रुपए पार पहुंचे

बीकानेर, (निसं)। नहरबंदी का पानी मिलने में अभी दस दिन और लगेंगे। जलदाय विभाग ने तीन दिन के अंतराल से पानी देने की व्यवस्था लागू कर दी है। ऐसे में घर-घर में पानी को लेकर परेशानी खड़ी हो गई है। शहर में सड़कों पर हर तरफ पानी की आपूर्ति करने वाले निजी टैंकर घूमते नजर आए । वहीं जलदाय विभाग की ओर से पानी के नि:शुल्क टैंकर भी पानी की कमी वाले मोहल्लों में भेजे जा रहे हैं। हालांकि इन सबके बीच, जनता में हाहाकार की स्थिति देखने को मिली, जबकि अभी कम से कम 9 दिन बाकी हैं नहर का पानी पहुंचने में। तब तक क्या हालात होंगे, इसे सोचकर भी सिहरन पैदा हो रही है।

पानी के टैंकर को लेकर जिला प्रशासन की ओर से तय किए गए रेटों का भी कोई असर नहीं हो रहा। टैंकर संचालक मनमाने रेट वसूल रहे है और पानी की जरूरत पूरी करने के लिए लोग एक हजार रुपए प्रति टैंकर तक के रेट देने को मजबूर हैं। इसी के साथ फिल्टर पानी के कैम्परों के रेट भी करीब दो गुणा हो गए है। बीस रुपए प्रति कैम्पर की दर मिलने वाला अब तीस से चालीस रुपए में मिल रहा है।

जलदाय विभाग के अधीक्षण अभियंता बलवीर सिंह ने बताया कि शनिवार को शहर में 60 टैंकरों से करीब 300 फेरे लगाकर नि:शुल्क पानी की आपूर्ति की गई। ज्यादा पानी की आवश्यकता जिस क्षेत्र से आती है, वहां टैंकर भेजा जा रहा है। अभी मौजूदा टैंकर कम पड़ने लगे हैं। ऐसे में परिवहन विभाग की मदद से कुछ निजी टैंकरों का अधिग्रहण किया गया है। इनकों पानी की आपूर्ति के लिए लगाया जाएगा। इसके बाद हालात कुछ और ठीक हो जाएंगे।

इधर जिला प्रशासन द्वारा निजी टैंकरों को अधिग्रहण व उनके खिलाफ नियमों की अनदेखी पर कार्यवाही से भी पेयजल की किल्लत में भारी बढोतरी देखी गई है। आमदिनों में सड़कों पर सरपट दौडने वाले निजी टैकर एकाएक गायब हो जाने से लोगों के सामने मंहगा पानी भी पीना दुश्वार हो गया है।

पानी की किल्लत से अनेक क्षेत्रो में निर्माण कार्य भी बंद होने के कगार पर हैं। या फिर वे चोरी छिपे रात के समय दुगनी चौगनी दरों पर पानी लेने को मजबूर है।

हैड कांस्टेबल एवं दलाल 5 हजार रुपये रिश्वत लेते गिरफ्तार

आवास एवं अन्य ठिकानों की तलाशी जारी

पाटन, (निसं)। ए.सी.बी. मुख्यालय के निर्देश पर सीकर इकाई द्वारा रविवार को कार्यवाही करते हुए कोतवाली थाने के हैड कांस्टेबल अनिल कुमार व उसके दलाल बोदूराम को परिवादी से 5 हजार रुपये रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार करने का मामला सामने आया है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के महानिदेशक भगवान लाल सोनी ने बताया कि एसीबी की सीकर इकाई को परिवादी द्वारा शिकायत दी गई कि परिवादी द्वारा दर्ज कराये गये मुकदमे तथा उसके विरूद्ध दर्ज मुकदमे में मदद करने की एवज में नीमकाथाना कोतवाली थाने के हैड कांस्टेबल अनिल कुमार द्वारा उसके दलाल बोदूराम के माध्यम से 10 हजार रुपये रिश्वत राशि मांग कर परेशान किया जा रहा है। जिस पर एसीबी सीकर इकाई के उप अधीक्षक पुलिस जाकिर अख्तर के नेतृत्व में शिकायत का सत्यापन किया जाकर रविवार को पुलिस निरीक्षक सुरेश चंद एवं उनकी टीम द्वारा ट्रेप कार्यवाही करते हुये दलाल बोदूराम को परिवादी से 5 हजार रुपये की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया गया है।

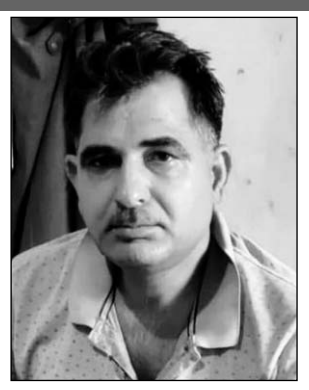

हेड कांस्टेबल अनिल यादव

दलाल बोदूराम

- एसीबी मुख्यालय के निर्देश पर सीकर इकाई ने की कार्रवाई

आरोपी हैड कांस्टेबल अनिल कुमार को भी प्रकरण में गिरफ्तार किया गया है। उल्लेखनीय है कि आरोपी द्वारा शिकायत के सत्यापन के दौरान ही परिवादी से 5 हजार रुपये रिश्वत के रूप में वसूल कर लिये थे। एसीबी के अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस दिनेश एम. एन. के निर्देशन में आरोपियों से पूछताछ जारी है।

निवाई के गांवों में तेज अंधड़ से उड़े टीनशेड़, कई पेड़ हुए धराशाही

निवाई, (निसं)। शनिवार की रात करीब 9 बजे अचानक आए तेज अंधड़ से कई घरों व बाड़ों में लगे टीनशेड उड़ गए एवं सैकडों पेड़ धराशाही हो गए। ग्राम पंचायत ललवाडी के गांव अगरपुरा, संग्रामपुरा व ललवाडी में कच्चे घर और पक्के घरों की दीवारें गिर गई एवं टीनशेड व छप्पर उड़ गए। सरपंच देवालाल गुर्जर ने बताया कि गांव में आए तेज अंधड़ से नीम व बबूल सहित करीब 200 पेड़ गिर गए। कई पशुओं को भी चोटें आई हैं। रविवार को सरपंच मास्टर देवालाल गुर्जर व डीआर नरेश नायक ने मौके पर पहुंचकर ग्रामीणों से जानकारी ली व घर-घर सर्वे किया। उन्होंने बताया कि जिन लोगों के नुकसान हुआ उनकी सूची तैयार की गई है। क्षेत्र में नुकसान की सूचनाप्रशासन को दे दी है।

सरपंच ने बताया कि अंधड से गांव ललवाडी में किशनलाल सैन, कानाराम, भूरालाल माली, किशनसिंह सैन, बन्ने सिंह, गांव संग्रामपुरा में रामकरण बैरवा, हजारी बैरवा, बद्रीलाल बैरवा, सज्जन कंवर, हनुमान सिंह, राजा देवी, मोरेलाल, रामप्यारी देवी, शिवनारायण बैरवा, बुद्धि प्रकाश, नाथूलाल, रामजीलाल, गांव अगरपुरा में हीरा देवी, कंवरपाल रैगर, रामअवतार, छोटूलाल रैगर, गोपीचंद, रामजीलाल, रूपनारायण रैगर, मुकेश रैगर, राजेश, रतनलाल रैगर, प्रभुलाल, रेखा पिंकी रैगर, मोहनलाल, सुगना, रामविलास, शंकरलाल, दामोदर, नारायण, खेमराज, राजेश, धन्नालाल, केदार सैन व चंदालाल के अंधड से नुकसान हुआ है।

तेज अंधड़ से गिरा छप्पर व फैला मलबा।

साईकिल चलाकर जयपुर से मालपुरा पहुंचे बोर्ड सचिव केसी मीणा

मालपुरा, (निसं)। अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर केन्द्रीय भेड एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में रविवार को आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में बतौर अतिथि के रूप में जैव विविधता बोर्ड के सचिव केसी मीणा 100 किमी. साईकिलिंग कर अविकानगर पहुंचे।

- जैव विविधत्ता दिवस पर अविकानगर में आयोजित हुआ प्रदेश स्तरीय समारोह

राज्य स्तरीय कार्यक्रम में पर्यावरण संरक्षण को लेकर नाटक, डांस, कटपूतली नृत्य सहित अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियां दे आमजन को जागरूक किया। तो संगठन के प्रदेश सचिव केसी मीणा ने टोंक जिले से पहुंचे जैव विविधत्ता समितियों के कार्यकर्ताओं से सीधा-संवाद कर पर्यावरण संरक्षण पर जोर दिया। अविकानगर निदेशक डॉ. अरूण कुमार तोमर, जिला उपवन संरक्षक एसके रेड्डी ने अतिथियों का स्वागत कर कार्यक्रम का प्रतिवेदन रखा।

अविकानगर के विभिन्न सेक्टरो ने भेड़ बकरी व खरगोश पर किये जा रहै नवीन शोध कार्यों पर प्रकाश डाला। साथ ही पर्यावरण संरक्षण एवं स्वस्थ जीवन स्वस्थ मस्तिष्क के लिए साईकिलिंग को दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाने पर जोर दिया।

रविवार शाम बूंदाबांदी से बदला मौसम

चूरू, (कासं)। चूरू में दिनभर की गर्मी के बाद शाम को मात्र दस मिनट की बूंदाबांदी ने मौसम बदला। मौसम विभाग से मिली जानकारी के अनुसार रविवार को यहां का अधिकतम 43.3 व न्यूनतम 25.0 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया। यहां पर आज सुबह दिन निकलने से लेकर दस बजे तक आसमान में हल्के बादलों की आवाजाही बनी हुयी रहने से धूप का असर कुछ कम दिखाई दिया। इसके बाद शाम को चार बजे से दोबारा आसमान में बादलों की आवाजाही शुरु हो गई। इसके बाद शाम को करीब छ: बजकर दस मिनट पर अचानक तेज बूंदाबांदी शुरु हो गयी जो कि करीब दस मिनट तक चली। गत शाम आयी तेज आंधी के बाद से यहां के मौसम में बदलाव आने से तापमान में कुछ गिरावट आने से भीषण गर्मी से कुछ निजात मिल पायी है। रात के समय में भी हवा में हल्की ठंडक रहने से रात को गर्मी से कुछ राहत मिली रही।

कार चट्टान से टकराई, एक की मौत, छह घायल

पिंडवाड़ा, (नि.सं.)। पिंडवाड़ा पुलिस थाना क्षेत्र के उदयपुर फोरलेन हाईवे मार्ग पर कांटल गांव के पास मारुति कार का आगे का टायर फट जाने से कार असंतुलित होकर पास के चट्टान से टकराकर सड़क पलटी खाने से कार में सवार एक मासूम बच्ची की दर्दनाक मौत हो गई। वहीं 6 जने गंभीर घायलहो गये।

- उदयपुर फोरलेन हाइवे पर कार का टायर फट जाने से हुआ हादसा

प्राप्त जानकारी के अनुसार गुजरात डीसा शहर मेंचंद्रलोक सोसाइटी में रहने वाले दोमोदी परिवार रवि भाई पुत्र विजय भाई पत्नी सैफाली व पुत्री इयांसी व अपने मित्र अर्पित भाई पुत्र नीलेश भाई उसकी पत्नीभाग्य श्री व पुत्रीअंशी व पुत्र पर्व सहित सात जने स्विफ्ट कार में गुजरात डीसा से उदयपुर यात्रा के लिए निकले थे वही यात्रा पूरी करके वापस उदयपुर से हाईवे फोरलेन मार्ग से अपने घर की ओर जा रहे थे रविवार 5:30 बजे करीब कांटल गांव के पास पहुंचे थे कि अचानक स्विफ्ट कार का आगे का टायर फट गया और असंतुलित होकर पास के चट्टान से टकरा गई जिसके बाद सड़क पर आकर पलटी खा जाए इस दुर्घटना के दौरान कार में से रवि और उसकी पुत्री इयांशी सड़क पर गिर गए बाकी कार में रह गए इस दुर्घटना में गंभीर सभी घायल हो गए वही पास से गुजर रहे लोगों ने अपने वाहन को रोककर घायलों को कार से बाहर निकालने के प्रयास किए। पुलिस जाब्ता घटनास्थल पर पहुंच कर लोगों की मदद से सभी घायलों को बाहर निकाल निकाला इस दुर्घटना में 3 वर्षीय बच्ची की मौके पर दर्दनाक मौत हो गई।

नाबालिग को कमरे पर बुलाकर रेप किया

हनुमानगढ़, (निसं)। जिले के एक थाना क्षेत्र में नाबालिग के साथ रेप करने का मामला सामने आया है। आरोपी युवक ने किशोरी को फोन करके अपने कमरे पर बुलाया और फिर उसके साथ रेप किया। पीड़िता के परिजनों ने गोलुवाला थाने में युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाया है।

पुलिस ने आरोपी के खिलाफ पोक्सो एक्ट सहित रेप की धाराओं में मामला दर्ज कर उसे राउंडअप किया है और उससे पूछताछ में जुटी है। थानाधिकारी भजनलाल ने बताया कि पीड़िता के परिजनों से थाने में रिपोर्ट देकर बताया कि बृजेश पुत्र राजेश ने उनकी नाबालिग बेटी को 20 मई को फोन करके कमरे पर बुलाया। जब उसकी बेटी कमरे पर गई तो आरोपी ने उसके साथ रेप किया। तबीयत बिगड़ने पर उसने अपनी मां को आप बीती बताई तो परिजन उसने इलाज के लिए श्रीगंगानगर अस्पताल ले गए। पुलिस ने पर्चा बयान लेने के बाद केस दर्ज कर आरोपी को राउंडअप कर लिया। पुलिस ने बताया कि नाबालिग का परिवार यूपी से मजदूरी करने यहां आया हुआ है।

विरमगुडा से वाया देवगढ़ - नीमझर सड़क को मिली स्वीकृति

राजसमंद, (निसं)। मौजूदा वित्तीय वर्ष के राजस्थान सरकार के आम बजट में इस बार फलोदी से माण्डल मार्ग के अधूरे सड़क के सुदृढ़ीकरण व चौडाई कार्य जो की लगभग 25 किलोमीटर का क्षेत्र है। जिसमें वीरम गुढा से वाया कामलीघाट- देवगढ़ -निमझर की घोषणा हुई थी। जिसकी अनुमानित लागत 25 करोड़ रुपये है, इसके पश्चात बजट के द्वितीय फेज में मादडी-आमेट-देवगढ़ -लसानी-40 मिल चौराया जिसकी 25 किलोमीटर की लम्बाई व अनुमानित लागत 23 करोड रुपये है उसकी प्रशाशनिक व वित्तीय स्वीकृति भी मिल गई है।

विधायक सुदर्शन सिंह रावत ने बताया कि यह मार्ग जो कि मेवाड-मारवाड को जोड़ने का मुख्य मार्ग है एवं स्टेट हाइवे 61 के नाम है, पिछले कई वर्षों से अधूरा पडा था। इसके साथ ही मादडी चौराया से देवगढ़ होते हुए लसानी मार्ग से 40 मिल चौराया सडक जो प्रस्तावित थी जिसकी सुध पूर्व की सरकार ने नहीं ली। लेकिन जनप्रतिनिधी होने के नाते मेने स्वंय आमजन को इन मार्गो से गुजरने पर होने वाली

- पाली व भीलवाड़ा जिले की बॉर्डर की होगी कनेक्टिविटी

समस्याओं को देखते एवं इस मार्ग की दुर्दशा को देख लोगों की मांग पर इस कार्य को बजट सत्र में सदन के पटल पर रख इस कार्य को जल्द पूर्ण करवाने की मांग की। जिस पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने इसे जायज मानते हुए तुरन्त ही स्वीकृत किया। साथ ही हमें इस बात की खुशी है कि इसकी प्रशासनिक व वित्तीय स्वीकृति भी हाल ही में जारी कर दी गयी है जिससे अब इस मार्ग के अधूरे पडे कार्य को पूरा होने में ज्यादा समय नही लगेगा।

इस मार्ग से गुजरने वाले राहगीरों को निश्चित तौर पर यात्रा करने में सुगमता के साथ व्यवसायिक गतिविधियों में भी इस मार्ग के कार्य पुर्ण होने पर इजाफा होगा। इस वीरम गुढा से निमझर सडक के निर्माण से पाली जिले की सरहद से राजसमन्द होते हुए भीलवाड़ा जिले को जोडा जा सकेगा। इसके साथ साथ यह घोषणा एक ऐतिहासिक पल है जब किसी मुख्यमंत्री द्वारा एक ही बजट में 1 विधानसभा क्षेत्र को 2 लम्बी सडकें बजट में दी गयी है। विधायक सुदर्शन सिंह रावत के प्रयासों से सडकों के जाल बिछाने में कोई कसर नही रखी, गोमती से ब्यावर के राष्ट्रीय राजमार्ग एनएच 8 के पिछले 7 साल से अधूरे पड़े फोरलेन को भी पूरा करवाने के लिए पिछले साल विधायक रावत ने अधूरे मार्ग की पदयात्रा निकाली। जिसके फलस्वरूप केन्द्र सरकार ने इसकों स्वीकृत करते हुए कार्य भी शुरू कर दिया गया। हाल ही में डीएमएफटी द्वारा भी क्षेत्र में तकरीबन 100 से अधिक सड़कों को बनाने के प्रस्ताव ले उनकी स्वीकृतियां जारी हुई है और जो पेचेबल या रिपेयरेबल सडके है उनको भी पूरा किया जाना है।

इस मामले में विधायक सुदर्शनसिंह रावत का कहना है कि पिछले सात दशकों में जो सड़क मार्ग को लेकर कार्य नही हो पाए वह सभी कार्य मौजूदा कार्यकाल में हो रहे है। इस क्षेत्र के लिए यह अपनेआप में एक स्वर्णिम दौर है। क्षेत्र की जनता को इस आवागमन की समस्या से जल्द निजात मिल पाएगी।

हरिद्वार इंटरसिटी कल से भुच्चो में रुकेगी

श्रीगंगानगर, (निसं)। पंजाब के भुचो स्टेशन पर गाड़ियों के ठहराव की मांग के चलते रेल प्रशासन ने यात्रियों की सुविधा के लिए श्रीगंगानगर-हरिद्वार इण्टरसिटी और अम्बाला-श्रीगंगानगर एक्सप्रेस को छह माह की अवधि के लिए प्रायोगिक आधार पर ठहराव देने का निर्णय लिया है।

- अंबाला-श्रीगंगानगर को भी मिला ठहराव

उत्तर रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी दीपक कुमार ने बताता कि गाड़ी संख्या 14711 हरिद्वार-श्रीगंगानगर एक्सप्रेस भूचू स्टेशन पर 24 मई से 09.24 बजे पहुंचेगी, जबकि 14712 श्रीगंगानगर-हरिद्वार एक्सप्रेस 24 मई से दोनों दिशाओं में एक मिनट के ठहराव के लिए 06.48 बजे वहां पहुंचेगी। इसी प्रकार गाड़ी संख्या 14736 अम्बाला-श्रीगंगानगर एक्सप्रेस 24 मई से सुबह 10.21 बजे भुचो स्टेशन पर एक मिनट के ठहराव के लिए पहुंचेगी।

बहरोड़ में पार्षद का परिवार कर रहा विद्युत चोरी

महिला पार्षद का मकान जहां लाइन से डायरेक्ट कनेक्शन ले रखा है।

बहरोड़/ नीमराना, (निसं)। बहरोड़ विधायक बलजीत यादव द्वारा चलाए जा रहे अभियान जिसमें भ्रष्टाचार पकड़ने पर 51 हजार रुपए के दो इनाम दिए जा चुके हैं।

इस अभियान के खिलाफ एक मामला सामने आया है जिसमें पार्षद परिवार द्वारा इस मुहिम के विपरीत विद्युत चोरी कहें या भ्रष्टाचार की घटना सामने आई है। जिसमें एक महिला पार्षद का परिवार विद्युत निगम के लाइन से डायरेक्ट कनेक्शन तार जोड़कर लंबे समय से विद्युत चोरी कर रहा है।

विद्युत वितरण निगम जयपुर, राजस्थान को 20 मई 2022 को सुबह 5:30 बजे की घटना के बारे में मय सबूत फोटो व वीडियो से अवगत कराने के बाद शिकायत दर्ज नम्बर जारी किया जा चुका है। यह बिजली चोरी का लगा हुआ तार बहरोड के गर्ल्स स्कूल के पास प्रधान प्लाजा के सामने कविता सैनी नगर पालिका पार्षद वार्ड नंबर 7 के मकान पर है। जिसकी सूचना विधायक बलजीत यादव द्वारा चलाए जा रहे भ्रष्टाचार सूचना व्हाट्सएप नंबर भी कल भेजी जा चुकी है।

मात्र 17 मिनट में बने जीवन के हम सफर

निवाई गंगा गार्डन में आयोजित शादी में मौजूद दुल्हा-दुल्हन।

निवाई, (निसं)। स्थानीय गंगा गार्डन में रविवार को एक शादी बिना दहेज के केवल 17 मिनट में सम्पन्न हो गई। दूनी के एक युवक ने अनोखी शादी रचाई है। संत रामपाल महाराज के अनुयायी हितेश पुत्र महावीर निवासी दूनी ने कृष्णा पुत्री श्यामलाल नायक निवासी अलीगढ़ से अनोखी शादी की है।

शादी में किसी भी प्रकार का दिखावा नहीं किया गया और ना ही किसी भी प्रकार का दहेज लिया गया है। यह शादी मात्र 17 मिनट में रमैनी पद्धति से सम्पन्न हुई। संत रामपाल महाराज के अनुयायी हितेश नायक ने बताया कि संत

- दोनों के परिजन व संत के अनुयायी रहे मौजूद

रामपाल से प्रेरित होकर उन्होंने यह शादी की है। उन्होंने बताया कि संत रामपाल महाराज का न्यू मिशन है कि भारत देश को दहेज मुक्त बनाना है। इसी को ध्यान में रखकर दोनों परिवारों की रजामंदी से बिना किसी दहेज और दिखावे के शादी सम्पन्न की गई है। इस अवसर पर बिना बारात के दोनों परिवारों के परिजन व संत रामपाल के अनुयायीं उपस्थित थे। इस शादी की चारों और चर्चा है।

नागौर जिले के बोरावड से भक्त दण्डवत करते पहुंचा रींगस भैंरोजी धाम

रींगस, (निसं)। नागौर जिले के मकराना से सटे बोरावड से एक भक्त अपने साथियों के साथ दण्डवत करते हुए शनिवार रात को भैरोजी धाम पहुंचे। बोरावड से रींगस की दूरी लगभग 140 किमी मीटर है जिसे दण्डवत करने में करीब दो माह का समय लगा । आज मंगला आरती में भैरोजी महाराज की पूजा अर्चना कर घर को रवाना हो गये।

- लगभग 140 किमी दूरी दो माह में दण्डवत कर पूरी की

भैरोजी के अटूट भक्त दुर्गा प्रसाद मेघवाल पुत्र ओमप्रकाश मेघवाल ने बताया कि वे बचपन से ही भैरोजी महाराज की भक्ति करते हैं। उनके मन में आया की सबसे बडे धाम रींगस में दण्डवत करते हुए पहुंचे। यह बात उसने अपने नौ अन्य साथियों को बताई। इसके बाद वे दो दरी लेकर दण्डवत करते हुए बोरावड से 23 मार्च को रवाना हो गये। दुर्गा प्रसाद मेघवाल अपने साथियो के साथ करीब आठ बजे शनिवार को रींगस पहुचे।

अलवर पुलिस ने 10 करोड़ का आईपीएल सट्टा पकड़ा

लग्जरी कारों में चलने वाले 4 सटोरिए दिल्ली से, एक अलवर से गिरफ्तार

अलवर, (निसं)। आईपीएल के सीजन में करोड़ों रुपए सट्टे से कमाने वाले 5 बड़े सटोरियों को अलवर पुलिस ने गिरफ्तार किया है, जिसमें 4 सटोरियों को दिल्ली से पकड़ा है। एक बिचौलिया अलवर के एनईबी का निवासी हैं। जिनके पास 3 लाख 10 हजार रुपए नकद , 30 मोबाइल व 3 लग्जरी कारें मिली हैं। बाकी लैपटॉप, चार्जर,राउटर सहित अन्य सामान जब्त किया है। खास बात ये है कि 5 में से 4 सटोरिए अलवर के हैं। जो दिल्ली में सट्टा चलाने के लिए वहां किराए पर रहते थे।

डीएसपी आदित्य पूनिया ने बताया कि परिवादी ने 21 मई को रिपोर्ट दी थी कि अलवर का हितेश नाम का व्यक्ति आईपीएल में सट्टा लगवाता है। उसने मुझसे 10 हजार रुपए लिए। दो मोबाइल नंबर 7701816973 व 6376612510 दिए। यह कहा था कि शाम के समय दिए गए मोबाइल नंबर पर कॉल कर सट्टे लगा लेना। लेकिन, शाम को कॉल किया तो इन नंबर पर बात नहीं हो सकी। इसके बाद परिवादी ने पुलिस को शिकायत दी। पुलिस ने पहले अलवर के एनईबी निवासी हितेश अग्रवाल को गिरफ्तार किया। उससे पूछताछ के आधार पर पुलिस दिल्ली के द्वारका तक पहुंच गई। इसके बाद पुलिस ने द्वारका से चार बडे सटोरियों को गिरफ्तार किया। जो दिल्ली में बैठकर सट्टा लगवाते हैं। पुलिस को मिली जानकारी के अनुसार ये सटोरिए एक सीजन में करीब 5 करोड़ रुपए सट्टे से कमाई करते हैं। इन पांच में एक दिल्ली का रहने वाला है। बाकी चार अलवर के हैं जो दिल्ली में रहकर सट्टा लगाते थे।

अलवर पुलिस ने डीएसपी पूनियां के निर्देशन में कार्रवाई कर आरोपियों को पकड़ा।

- 5 में से 4 सटोरिए अलवर के हैं जो दिल्ली में किराए पर रहते थे
- सटोरिए एक सीजन में करीब 5 करोड़ रुपए सट्टे से कमाई करते हैं
- पुलिस को 12 रजिस्टर मिले हैं उनमें करीब 10 करोड़ रुपए का हिसाब है

पुलिस को इन आरोपियों से 12 रजिस्टर मिले हैं। उनमें करीब 10 करोड रुपए का हिसाब मिला है। यह हिसाब आईपीएल के क्रिकेट मैच पर लगने वाले सट्टे का हिसाब है। इसके अलावा 3 लग्जरी कार मिली हैं।

देवेश भारद्वाज पुत्र रामचरण भारद्वाज निवासी मकान नंबर 43 भारत टाकीज के पीछे हाल फ्लैट नंबर 76 सेक्टर 10 द्वारका नई दिल्ली, चक्षु गर्ग पुत्र प्रदीप कुमार गर्ग मकान नंबर 49, रामनगर कॉलोनी 200 फीट रोड अलवर हाल फ्लैट नंबर 302 बजगेडा द्वारका दिल्ली, विक्रांत खंडेलवाल पुत्र जितेंद्र मोहन गुप्ता निवासी हाकीमजी की गली अलवर हाल मकान नंबर सी 28 राधेपुरी जगतपुरी दिल्ली, रोहित यादव पुत्र संजीव यादव निवासी मकान नंबर 180 वजीरपुर अशोक विहार दिल्ली हाल फ्लैट नंबर 303 न्यू पालम विहार सेक्टर 25, हितेश अग्रवाल पुत्र अशोक अग्रवाल एनईबी हाउसिंग बोर्ड को गिरफ्तार किया है।

अधिक निष्कर्षण और उत्पादन ने वातावरण में असंतुलन पैदा किया है : मरीना तबस्सुम

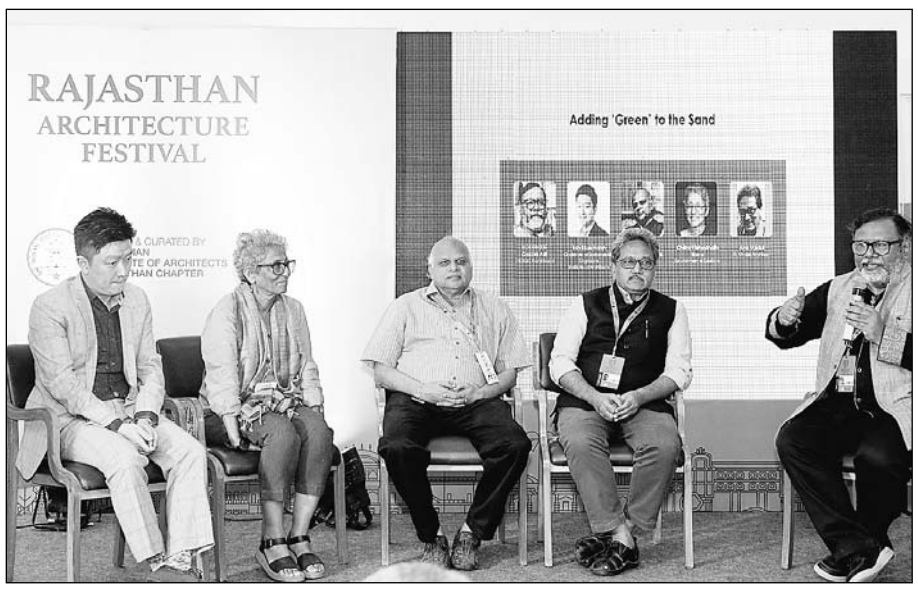

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स-राजस्थान चैप्टर की ओर से आयोजित राजस्थान आर्किटेक्चर फेस्टिवल में रविवार को ''हेरिटेज अंडर थ्रेट'' विषय पर देश के जाने-माने आर्किटेक्ट्स ने अपने विचार व्यक्त किए।

- **देश की धरोहरों के संरक्षण के लिए सरकार को प्रयास करने चाहिएः कुलभूषण जैन**
- **'राजस्थान आर्किटेक्चर फेस्टिवल' का समापन**

जयपुर, (का.सं.)। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स-राजस्थान चैप्टर द्वारा आयोजित राजस्थान आर्किटेक्चर फेस्टिवल के तीसरे दिन की शुरूआत हेरिटेज वॉक से की गई। जिसमें 250 से अधिक डेलीगेट्स और मेहमानों ने चरण मंदिर से वॉटर चैनल और बावड़ी से नाहरगढ़ फोर्ट तक वॉक की। फेस्टिवल के तीसरे दिन 'हेरिटेज अंडर थ्रेट' विषय पर देश के जाने-माने आर्किटेक्ट्स ने अपने विचार व्यक्त किए। जिसमें हेरिटेज सिनर्जी इंडिया की कमालिका बोस, आर्किटेक्चरल हेरिटेज एडवाइजरी कमेटी के चेयरमैन, के.टी. रवींद्रन; एआरसीएशिया के प्रेसीडेंट, डॉ अबू सईद एम अहमद; आर्किटेक्ट-अर्बेनिस्ट-कंजर्वेशनिस्ट, कुलभूषण जैन और रविंद्र गुंडू राव एंड एसोसिएट्स के रविंद्र गुंडू राव जैसे आर्किटेक्ट्स एक्सपर्ट्स शामिल हुए।

की-नोट सेशन में बांग्लादेश की मरीना तबस्सुम ने अपने सैशन को संबोधित करते हुये प्राकृतिक इम्बैलेंस पर जोर दिया। उन्होंने दो वास्तविकताएं बताई, एक है बढ़ता तापमान और जलवायु संबंधी मुद्दे। उनके अनुसार जलवायु में परिवर्तन और तापमान में बढ़त जैसे कई मुद्दे हैं, समुद्र का स्तर बढ़ रहा है और महामारी जिनका हम पिछले दो वर्षों से सामना कर रहे है। उन्होंने बताया की कई मायनों में अधिक निष्कर्षण और अधिक उत्पादन की हमारी संस्कृति ने अत्याधिक असंतुलन पैदा किया है और मुझे लगता है कि एक वास्तुकार के रूप में हमारे लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम इसे ध्यान में रखें और फिर उसी के अनुसार काम करें।

आर्किटेक्ट, अर्बनिस्ट और कंजर्वेशनिस्ट, कुलभूषण जैन ने जयपुर और अहमदाबाद के वॉलसिटी क्षेत्रों का उदाहरण देते हुए अपने संबोधन में कहा कि, इन क्षेत्रों के संरक्षण के लिए सरकार को प्रयास करने चाहिए। जगह-जगह बेतरतीब निर्माण और पुरानी इमारतों पर साइन बोर्ड देखे जा सकते है। जयपुर के वॉलसिटी को वर्ल्ड हेरिटेज सिटी घोषित होने के बावजूद इसके संरक्षण को लेकर बहुत उदासीनता है, सरकार को चाहिए कि ऐसे हेरिटेज क्षेत्रों को चिन्हित करके उनके रख-रखाव पर काम करना चाहिए। इसमें आम लोगों का सहयोग भी बहुत जरूरी है। क्योंकि लोग जागरूक होंगे तभी वो अपनी विश्व विरासत की देखरेख कर पाएंगे।

हेरिटेज सिनर्जी इंडिया की कमालिका बोस ने कहा कि, हेरिटेज इमारतों का संरक्षण बहुत जरूरी है, कमालिका बोस ने ताजमहल, मुंबई और जयपुर की हेरिटेज इमारतों का उदाहरण देते हुए कहा कि इन्हें बचाए रखने के लिए इनका संरक्षण बहुत जरूरी है, जिसके लिए आसपास बढ़ते रिहायशी क्षेत्र और तेज़ी से होते निर्माण के लिए एक पॉलिसी बनाना जरूरी है ताकि हमारी धरोहर संरक्षित रह सके।

आर्किटेक्चरल हेरिटेज एडवाइजरी कमेटी के चेयरमैन, के.टी. रवींद्रन ने दिल्ली और लक्षद्वीप की जर्जर होती हेरिटेज इमारतों का उदाहरण देते हुए कहा कि, हेरिटेज के दुर्गम क्षेत्रों में होते निर्माण के चलते एक अलग ही कॉरिडोर बनता जा रहा है, ऐसे में सरकार को जनता और हेरिटेज इमारतों के बीच विच्छेद को खत्म करने के प्रयास करते हुए इन्हें संरक्षित करने का काम करना चाहिए।

टेक्निकल सेशन 'एडिंग ग्रिन टू द सैंड' विषय में अनु मृदुल ने जोधपुर शहर में विभिन्न जल निकायों के विकास पर चर्चा की। जिनमें कृत्रिम व मानव निर्मित दोनों की ही महत्ता को शहर की उन्नति के लिए बराबर बताया। उन्होंने जोधपुर में विभिन्न जल निकायों की बहाली पर आधारित अपनी केस स्टडीज के ज़रिए बताया की जल निकाय की पुरानी प्रणाली को इस्तेमाल कर उन्होंने आधुनिक समाज को फायदा कैसे पहुँचाया। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे सांस्कृतिक दृष्टिकोण से जल निकायों को संरक्षित करने में मदद मिलती है और जल निकायों को बचाये रखने में प्राचीन संस्कृति की भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

फेस्टिवल के दौरान 'माई हेरिटेज-माई प्राइड' आर्किटेक्चर एक्जीबिशन लगाई गई थी।

अनुभवों को साझा करने से मिलती है नई दिशा : डॉ. सुबोध अग्रवाल

अतिरिक्त मुख्य सचिव माइंस व आईआईटी दिल्ली एलुमिनी एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. सुबोध अग्रवाल ने रविवार को राजपूताना शेरेटान में आयोजित गेट-टुगेदर कार्यक्रम में भाग लिया।

जयपुर, (का.सं.)। समय समय पर मेल-मिलाप से अनुभवों को साझा करने का अवसर मिलता है तो प्रदेश के विकास में भी भागीदारी तय होती है। अतिरिक्त मुख्य सचिव माइंस व आईआईटी दिल्ली एलुमिनी एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. सुबोध अग्रवाल ने यह विचार राजपूताना शेरेटान में आयोजित गेट टू गेदर कार्यक्रम में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आईआइटी दिल्ली के पास आउट आज प्रदेश में उच्च पदों पर कार्य करते हुए नवाचारों को प्रोत्साहित कर रहे हैं वहीं प्रदेश में उद्योग धंधों, स्टार्टअप्स आदि के माध्यम से विकास की गंगा बहा रहे हैं। स्वरोजगार के साथ ही रोजगार के अवसर विकसित कर आर्थिक विकास में सहभागी बन रहे हैं।

डॉ. अग्रवाल ने आईआईटी दिल्ली की तरह ही अन्य एलुमिनी एसोसिएशनों को गतिशील और सक्रिय बनाने की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए प्रदेश के समग्र विकास में भागीदार बनने के लिए आगे आने का आह्वान किया।

एसोसिएशन के वाइस प्रेसिडेंट रजनीश भंडारी, सेकेट्री शुभम जैन और ट्रेजरी आकाश मित्तल ने बताया कि प्रदेश में करीब 400 वे देश दुनिया में 5 हजार से अधिक आईआईटी एलुमिनी निजी व सरकारी क्षेत्र में उच्च पदों पर कार्य करते हुए सेवाएं दे रहे हैं।

गेट टू गेदर में राजस्थान सरकार में स्टेम सेल हेड डा. यावेर हुसैन, मेटाक्यूब के संस्थापक पारिजात अग्रवाल, सहज डेरी के संस्थापक पिज्ञान गदेडिया सहित करीब 70 प्रतिभागियों ने परिवार सहित हिस्सा लिया। कार्यक्रम का संयोजन सेकेट्री शुभम जैन ने किया।

राज्यपाल कलराज मिश्र रविवार दोपहर को ग्रीष्मकालीन प्रवास के लिए माउंट आबू रवाना हुए। राज्यपाल रविवार दोपहर दो बजे जयपुर जंक्शन से वाराणसी-अहमदाबाद एक्सप्रेस द्वारा आबू रोड जंक्शन रवाना हुए। जयपुर रेलवे मण्डल के एडीआरएम मनोज गर्ग सहित रेलवे के अधिकारियों ने जयपुर जंक्शन पर उनका स्वागत किया।

जोधपुर में हुआ रेप सरकार के माथे पर कलंक : राठौड़

जयपुर। उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने ट्वीट कर कहा कि दुर्भाग्य है कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के गृह जिले जोधपुर में युवती के साथ पहले मंडोर थाने के क्वार्टर में एएसआई के रिश्तेदार ने हैवानियत की और फिर टैक्सी चालक ने दरिंदगी की।

राठौड़ ने कहा कि जोधपुर में युवती के साथ हुई रेप की यह वीभत्स घटना सरकार के माथे पर कलंक है और गहलोत शासन के जंगलराज की तस्वीर दिखा रही है। बीते 6 माह में ऐसी कई घटनाएं सामने आ चुकी है।

हमारे पास अधिकतर मरीज कैंसर की लास्ट स्टेज में आते हैं : डॉ. संदीप जैन

- **एब्डोमिनल कैंसर से जुड़े कारण और बचाव पर जागरूकता के लिए हुआ एबीसीडी कंसल्टेशन कैंप**

जयपुर, (का.सं.)। दुनिया में मौत का दूसरा सबसे बड़ा कारण है एब्डोमिनल कैंसर, इसी लिए 2019 में महसूस हुआ कि 1 दिन होना चाहिए इस कैंसर से जुड़े कारण और बचाव पर जागरूकता फैलाने के लिए। तभी प्रतिवर्ष 19 मई को पूरे विश्व में 'एब्डॉमिनल कैंसर डे' मनाया जाता है।

आज इसी श्रृंखला में एबीसीडी कंसल्टेशन कैंप जेएलएन मार्ग स्थित फोर्टिस हॉस्पिटल में आयोजित किया गया। निदेशक, आईआईईएमआर, मुकेश मिश्रा ने बताया कि इस कार्यक्रम में डॉ संदीप जैन ने करीब 100 मरीजों को कंसल्टेशन देते हुए बताया कि हमारे पास ज्यादातर मरीज कैंसर की लेटे स्टेज में आते हैं। एब्डॉमिनल कैंसर का सही इलाज करने के लिए सिर्फ अर्ली स्टेज में डायग्नोसिस होना जरुरी है जिससे मरीज की उम्र बढ़ सके। लेट स्टेज में डायग्नोसिस का मतलब जान को खतरा, लंबा इलाज, ऑपरेशन के साथ कीमोथेरेपी और रेडियोथेरेपी, महंगा इलाज, इलाज संबंधी कॉम्प्लीकेशन्स, वापस होने व फैलने के रिस्क। एब्डोमिन कैंसर सात प्रकार के होते हैं, ऑसोफेगल कैंसर (खाने की नाली), कोलन और रेक्टल कैंसर, अपेंडिक्स कैंसर, गैस्ट्रिक कैंसर, गॉलब्लेडर कैंसर, पैंक्रिअटिक कैंसर और लीवर कैंसर। आज 90 से 95 फीसदी कैंसर पर्यावरण और जीवन शैली कारणों से होते हैं और केवल 5-10 हेरिडिटरी या जेनेटिक्स के कारण। अगर हम अपने जीवन शैली में कुछ सुधार कर लें तो काफ़ी हद तक बचाव हो सकता है। संतुलित शाकाहारी भोजन, नियमित शारीरिक गतिविधि, वजन का सामान्य होना, शराब और धूम्रपान से बचना, समय पर स्क्रीनिंग टैस्ट और शुरुवाती लक्षणों को नजरंदाज ना करना।

आमागढ़ लेपर्ड रिजर्व का उद्घाटन

जयपुर, (का.सं.)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने रविवार को अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर मुख्यमंत्री निवास से आमागढ़ लेपर्ड रिजर्व का उद्घाटन और लोकार्पण किया।

गहलोत ने कहा कि आमागढ़ लेपर्ड रिजर्व वन एवं वन्यजीव संरक्षण की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। यह एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर सभी प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए आमागढ़ लेपर्ड रिजर्व पर्यटन स्थल की सौगात प्रदेशवासियों को समर्पित की। उन्होंने कहा कि वन्यजीवों की मानव जीवन में अहम भूमिका है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जैव विविधता का संरक्षण हम सभी की अहम जिम्मेदारी है। राज्य सरकार द्वारा वन एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए अपनी प्रतिबद्धता के अनुरूप कई ऐतिहासिक फैसले लिए गए हैं। राजस्थान अपनी भौगोलिक विषमताओं के बावजूद वन संरक्षण करने में सफल रहा है।

मंजू मेहता ने सितार पर सुनाया राग 'जोग कौंस'

जयपुर, (का.सं.)। जवाहर कला केन्द्र में रविवार को सितार वादन का कार्यक्रम 'सितार स्वर गंगा'' आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में जयपुर में जन्मीं और पिछले पचास साल से अहमदाबाद में रहकर संगीत साधना में लगीं विदूषी मंजू नंदन मेहता ने अपनी दिलकश प्रस्तुति से संगीत प्रेमियों का दिल जीत लिया। यह कार्यक्रम जवाहर कला केन्द्र, राजस्थान फोरम और इंटरनेशनल ध्रुवपद धाम ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में ध्रुवपद गायिका डॉ. मधु भट्ट तैलंग के संयोजन में आयोजित कार्यक्रम किया गया। मंजू मेहता ने इस मौके पर राग जोग कौंस के स्वरों से परिवेश में भक्ति और श्रृंगार का रस घोल दिया। राग जोग कौंस अपेक्षाकृत नया राग जिसकी रचना पंडित जगन्नाथ बुआ पुरोहित 'गुणीदास' ने की है। यह राग 'जोग' और राग 'चंद्रकौंस' के मिश्रण से बना है। पूर्वांग में राग जोग होने से इसके स्वर भक्ति का अहसास करवाते हैं।

अब राजस्थान सरकार भी कम करे पेट्रोल-डीजल पर वेट : रामलाल शर्मा

जयपुर। भारतीय जनता पार्टी प्रदेश मुख्य प्रवक्ता एवं विधायक रामलाल शर्मा ने कहा कि भारत सरकार हमेशा जनहित में निर्णय लेते हुए जन भावनाओं के अनुरूप शासन का संचालन करने का काम कर रही है। राजस्थान के अंदर कांग्रेस की सरकार है और कांग्रेस के प्रदेश स्तरीय और राष्ट्रीय नेता हमेशा मोदी सरकार पर निशाना इस बात का साधते आये हैं कि पेट्रोल और डीजल के दामों में वृद्धि की वजह से ही महंगाई बढ़ रही है। मोदी ने समय-समय पर टैक्स के अंदर कमी करके जनता को राहत प्रदान करने का काम किया है और अब भी मोदी सरकार ने अपने टैक्सों में कमी करके डीजल-पेट्रोल और गैस के दामों में कमी करके देशवासियों को राहत प्रदान करने का काम किया है और कांग्रेस के नेताओं के पास भाषण देने की बातें अलग और मुद्दे अलग और यथार्थ में उनके हक में जो चीजें हैं वह करने के लिए अलग है। मोदी ने टैक्स में कमी करने के बाद देश की राज्य सरकारों से भी आग्रह किया है कि वह भी वेट के अंदर कमी करें ताकि जनता को राहत मिल सके। लेकिन अभी तक भी राजस्थान की सरकार ने ना तो कोई व्यक्तव्य जारी किया है और ना ही इस मुद्दे पर कोई बात कही है।

'इन्दिरा गांधी शहरी रोजगार योजना' के क्रियान्वयन के लिए नवीन दिशा-निर्देशों को मंजूरी

जयपुर, (का.सं.)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 'इन्दिरा गांधी शहरी रोजगार योजना' के क्रियान्वयन के लिए नवीन दिशा-निर्देशों को स्वीकृति दी है। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार उपलब्ध कराने के लिए महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना (मनरेगा) की तर्ज पर शहरी क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से यह योजना शुरू की गई है।

गहलोत ने वर्ष 2022-23 के बजट में यह घोषणा की थी कि शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले परिवारों को प्रति वर्ष 100 दिन का रोजगार 'इन्दिरा गांधी शहरी रोजगार योजना' के अन्तर्गत उपलब्ध करवाया जाएगा। इस महत्वाकांक्षी योजना पर राज्य सरकार प्रतिवर्ष 800 करोड़ रूपए व्यय करेगी।

नवीन दिशा-निर्देशों के अनुसार प्रस्तावित योजना में स्थानीय निकाय क्षेत्र में निवास कर रहे 18 वर्ष से 60 वर्ष की आयु के सदस्य का जन आधार कार्ड के आधार पर पंजीयन किया जाएगा। योजना में अनुमत कार्य करवाने हेतु राज्य/जिला/निकाय स्तर पर कमेटियों के माध्यम से कार्य स्वीकृत एवं निष्पादित करवाया जाएगा। सामान्य प्रकृति के कार्य स्वीकृत एवं निष्पादित कराने की सामग्री लागत व पारिश्रमिक लागत का अनुपात 25:75 तथा विशेष प्रकृति के कार्यों हेतु सामग्री लागत तथा पारिश्रमिक भुगतान का अनुपात 75:25 होगा।

कार्यों का भुगतान मनरेगा के अनुरूप श्रमिकों के बैंक खाते में 15 दिवस में किया जाएगा।

पैरा खेल अकादमी के लिए 14 करोड़ की राशि मंजूर

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने जयपुर में दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए पैरा खेल अकादमी के निर्माण हेतु 14 करोड़ रूपए के अतिरिक्त बजट प्रावधान को मंजूरी दी है। अकादमी में पैरा खिलाड़ियों को उच्च तकनीकी प्रशिक्षण, ट्रेनिंग उपकरण व अभ्यास हेतु सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

कर्नल राज्यवर्धन की 'अमृत जन यात्रा' बाईक रैली में उमड़ा जन सैलाब

जयपुर, (का.सं.)। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता और जयपुर ग्रामीण सांसद कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ की अगुवाई में आज झोटवाड़ा विधानसभा क्षेत्र में 'अमृत जन यात्रा' बाईक रैली निकाली गई। इस दौरान पूर्व विधायक एवं केबिनेट मंत्री राजपाल सिंह शेखावत भी उनके साथ रहे। हिंगोनिया से प्रारम्भ हुई बाईक रैली लोहरवाड़ा, मुरलीपुरा, भोजपुरा कलां, बबेरवालों की ढ़ाणी, जोबनेर होते हुए ढाणी नागान पहुंची। बडी संख्या में भाजपा पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं आमजन बाईक रैली में शामिल हुए। इस दौरान विभिन्न स्थानों पर स्थानीय निवासियों और व्यापारियों ने बाईक रैली का जोरदार स्वागत किया और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जिन्दाबाद और कर्नल राज्यवर्धन जिन्दाबाद के नारे लगाए। बाईक रैली के दौरान कर्नल राज्यवर्धन ने सांसद कोष से निर्मित शहीद हुक्माराम जाट पार्क का उद्घाटन भी किया। बाईक रैली को सम्बोधित करते हुए कर्नल राज्यवर्धन ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा पैट्रोल डीजल के दाम घटाने और गैस सिलेण्डर पर सब्सिड़ी देकर जनता को राहत पहुंचाने के लिए धन्यवाद दिया और कहा गहलोत सरकार को भी पैट्रोल डीजल पर वेट कम कर प्रदेश की जनता को राहत पहुंचानी चाहिए।

कर्नल राज्यवर्धन ने कहा मोदी के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार ने हमेशा देश हित और जनहित में ही कार्य किए है। प्रधानमंत्री मोदी के रूप में देश को शानदार नेतृत्व मिला है। आज देश का हर गांव मजबूत हो रहा है केन्द्र सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ समाज के हर वर्ग को मिल रहा है। जहां पीने का पानी नहीं पहुंचता था वहां पानी पहुंच रहा है जिनके पास घर नहीं था उनके घर बन रहें है। विश्व में भारत का मान लगातार बढ़ रहा है। करोना काल में भारत द्वारा किए गये कार्यों की चर्चा पूरे विश्व में हो रही है।

कर्नल राज्यवर्धन ने प्रदेश की गहलोत सरकार को आडे हाथ लेते हुए कहा जनविरोधी और तुष्टिकरण की नीति के कारण जनता का सरकार पर से विश्वास उठ चुका है। विकास की दृष्टि में राजस्थान देश में काफी पीछे रह गया है। जनता ने जिस कांग्रेस पार्टी पर भरोसा करते हुए साढ़े तीन साल पूर्व सत्ता सौंपी थी वह पार्टी जनता को सुरक्षा और सुविधा देने में पूरी तरह से विफल हुई है। किसान महिला और युवाओं के खिलाफ राज्य सरकार ने काम किया है। राजस्थान शांतिप्रिय प्रदेश के रूप में जाना जाता था लेकिन पिछले साढे तीन सालों में दलित और महिला अत्याचारों में राजस्थान देश में नम्बर वन पर पहुंच गया है और कल्याणकारी योजनाएं खासकर पीने का पानी जनता तक पहुंचाने में आखिरी नम्बर पर पहुंच गया है।

- **पैट्रोल-डीजल के दाम घटाने एवं गैस सिलेण्डर पर सब्सिडी देने के लिए प्रधानमंत्री मोदी का आभार जताया**
- **'पैट्रोल डीजल पर वेट कम कर जनता को राहत दे गहलोत सरकार'**

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता और जयपुर ग्रामीण सांसद कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ की अगुवाई में रविवार को झोटवाड़ा विधानसभा क्षेत्र में 'अमृत जन यात्रा' बाईक रैली निकाली गई।

अमृत महोत्सव पर क्रीड़ा भारती द्वारा राष्ट्र वंदना यात्रा

जयपुर। क्रीड़ा भारती द्वारा स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के उपलक्ष में रविवार को अखिल भारतीय स्तर पर मोटरसाइकिल से ''प्रदक्षिणा से राष्ट्रवंदना'' यात्रा द्वारा माँ भारती की अर्चना की।

जयपुर प्रान्त में प्रदक्षिणा यात्रा सीकर से रेवाड़ी वाया जयपुर के बीच छह स्थानों सीकर, रींगस, चौमू, जयपुर, शाहपुरा, कोटपूतली से प्रात: 8:56 बजे एक साथ रवाना होकर लगभग 310 किमी की दूरी तय कर राष्ट्रवंदना की गयी। उद्घाटन कार्यक्रम में भारत माता पूजन एवं राष्ट्रगान के बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष गोपाल सैनी, केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष चैतन्य कुमार कश्यप, राष्ट्रीय महामंत्री राज चौधरी का सन्देश सुनाया गया। जयपुर से गोपाल सैनी के साथ अर्जुन अवार्डी दीनाराम ने यात्रा को झंडी दिखाकर रवाना किया। सीकर से संत मनोज दास महाराज, क्रीड़ा भारती सीकर विभाग संयोजक करण सिंह शेखावत, सीकर जिला अध्यक्ष पोखरमल एडवोकेट, रींगस से पूर्व मंत्री बंशीधर बाजिया तथा क्रीड़ा भारती प्रान्त मंत्री कैलाश शर्मा, चौमू से विधायक रामलाल शर्मा शाहपुरा से पूर्व विधायक फूल चंद भिण्डा एवं संत हरिओम दस महाराज परमानन्द धाम खोहरी, राकेश शर्मा पूर्व कब्बडी स्टेट चैम्पियन, कोटपूतली से महेश , अरुण सैनी, ने झंडी दिखाकर यात्रा को रवाना किया।यात्रा में क्रीड़ा भारती कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त विभिन्न खेल केंद्र, खेल अकादमियों के प्रतिनिधि, एवं खिलाडियों सहित युवा वर्ग शामिल रहा।

परशुराम कुंड तक रेल सेवा शुरू होगी

जयपुर। विप्र फाउंडेशन ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की ओर से परशुराम कुंड तक रेल सेवा विस्तार की घोषणा का स्वागत करते हुए आभार प्रकट किया है। शाह ने ये घोषणा पूर्वोत्तर राज्यो के दौरे के दूसरे दिन नामसाई में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए की। विप्र फाउंडेशन के संस्थापक सुशील ओझा ने केंद्रीय गृहमंत्री का आभार प्रकट करते हुए बताया कि परशुराम कुंड तक रेल सेवा विस्तार से न केवल यहां आने वाले श्रद्धालुओं को सुविधा मिलेगी, बल्कि पर्यटन क्षेत्र का भी विकास होगा।

निःशुल्क चिकित्सा एवं परामर्श शिविर लगाया

जयपुर, (का.सं.)। प्राकृतिक चिकित्सा एवम सुजोक थैरेपी अपनाने हेतु लोगों को जागरूक करने के लिए हेल्थ एजुकेशन एवं लव फ़ॉर पीपल सोसायटी,व संग अर्श सामाजिक सेवा समिति द्वारा समाज नि:शुल्क चिकित्सा एवं परामर्श कैम्प लगाया गया।

डॉ. दीपाली वार्ष्णेय अग्रवाल ने बताया कि करोना महामारी के वक्त प्राकृतिक चिकित्सा बहुत ही कारगर रही। बढ़ते प्रदूषण के कारण बार बार ऐसी स्तिथि ना आये इसके लिए प्राकृतिक चिकित्सा को अपनाएं, प्रकर्ति के करीब आएं,। डॉ दीपाली ने साथ ही लोगों को सुजोक थेरेपी भी दी,काफी ज्यादा संख्या में लोगों ने कैम्प में आकर लाभ प्राप्त किया।

हेल्प्स के अध्यक्ष प्रशांत चतुर्वेदी व,संग अर्श के अध्यक्ष दीपक सिंघल ने बताया कि उन्होंने एक जागरूकता अभियान शुरू किया है।

इसके तहत वो पूरे जयपुर मे हर वार्ड में ऐसी कैम्प लगाएंगे और लोगों को प्राकतिक चिकित्सा अपनाने के लिए जागरूक करेंगे। इस मिशन में इनकी पूरी टीम प्रशांत गुप्ता,नेहा, निशिकांत गुप्ता, रेणु श्रीवास्तव,आयुष शर्मा,आशीष सोनी, दिव्यम अग्रवाल,तनिष्क अग्रवाल ,डॉ. कुलदीप ,पंकज सैनी,सहयोग कर रहे हैं। कैम्प्स की इस कड़ी मे ये दूसरा कैम्प है जो गुरुद्वारा गुरुसिंह सभा ,गोविंद मार्ग ,राजापार्क में रखा गया।

संक्षिप्त

नेत्रहीन बालिकाओं की कुशलक्षेम पूछी

अजमेर, (कासं)। श्री दिगम्बर जैन महासमिति अजमेर द्वारा समिति के सक्रिय सदस्य प्रवीण पाटोदी के सहयोग से रविवार 22 मई को दोपहर 12.30 बजे शास्त्री नगर स्थित लाडलीघर की चौबीस नेत्रहीन बालिकाओं को मिष्ठान युक्त शुद्ध एवं सात्विक भोजन की सेवा देते हुए कुशलक्षेम पूछी गई। महामंत्री कमल गंगवाल ने बताया कि राष्ट्रीय संत कृष्णानंद महाराज के सानिध्य में दिव्यांग बालिकाओं को यह सेवा प्रवीण पाटोदी संग कल्पना पाटोदी की वैवाहिक वर्षगांठ के उपलक्ष में समिति के व्यवस्थापक मंत्री मनीष पाटनी के संयोजन में दी गई। अध्यक्ष अतुल पाटनी ने सेवा सहयोगी पाटोदी दंपती के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए बताया कि समिति द्वारा धार्मिक कार्यों के साथ साथ सामाजिक सरोकार के कार्य कर जरूरतमंदों को राहत पहुंचा रही है। महासमिति के प्रवक्ता संजय कुमार जैन ने बताया कि इस अवसर पर प्रवीण पाटोदी, कल्पना पाटोदी, मनीष पाटनी, रेणु पाटनी, कैलाश पाटोदी, दिव्या पाटोदी मौजूद रहे।

जैव विविधता दिवस पर संगोष्टी

भीलवाडा, (निसं)। मानव द्वारा किये जा रहे विवेकहीन विकास, प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन एवं प्रकृति से की जा रही छेडछाड ने मानव मात्र को संकट में डाल दिया है। कुमुद विहार में पीपल फॉर एनिमल संस्था द्वारा जैव विविधता दिवस पर आयोजित संगोष्टी में मुख्य वक्ता के रूप में प्रदेश प्रभारी बाबूलाल जाजू ने कहा कि मानव द्वारा पारिस्थितिकी तंत्र में हस्तक्षेप मनुष्य जीवन के लिए खतरा साबित हुआ है। हम सबको सरकार के भरोसे न रहकर स्वयं प्रत्येक व्यक्ति को पृथ्वी पर पाए जाने वाले पेड पौधों, पशु पक्षियों, झील जलाशयो, नदियों, गोचर भूमि, जंगल, झरनों व पहाडों के संरक्षण के लिये आगे आना चाहिए तथा जानलेवा डिस्पोजल व पॉलीथिन का उपयोग नहीं करना चाहिए तभी हमारा जीवन सुरक्षित रहेगा। जैव विविधता संरक्षण दिवस पर गोष्ठी में पीएफए के पदाधिकारी गुमान सिंह पीपाडा, मुकेश अजमेरा, विद्यासागर सुराणा, रामनिवास लड्ढा व सुरेश सुराना ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

योग शिविर का समापन

अजमेर, (कासं)। पारीक युवा क्लब एवं आर्य वीर दल के संयुक्त तत्वाधान में ऋषि उद्यान में 17 मई से 22 मई तक प्रतिदिन सुबह 6 से 7 तक चलाया जा रहा योग शिविर का समापन किया गया। योगाचार्य विश्वास पारीक कमलेश पारीक द्वारा योग शिविर में आसन प्राणायाम सूर्य नमस्कार मुद्राओं आदि पर जानकारी शिविरार्थियों को दी गई। युवा क्लब द्वारा योग के पश्चात प्रतिदिन अंकुरित अनाज करेला एलोवेरा चुकंदर लौकी का जूस दिया गया एवं समापन पर निशुल्क ब्लड बीपी शुगर व अन्य की जांचे की गई। किशन पारीक, नीरज पारीक, अमित पारीक, अरुण पारीक, ओम प्रकाश पारीक, नवरत्न पारीक, मुकेश पारीक, मीनू पारीक, अनुराधा पारीक, उर्मिला पारीक, श्वेता पारीक आदि ने भाग लिया अंत में सुशील पारीक ने योग शिविर सुचारू रूप से चलने पर एवं प्रतिदिन योग शिविर में आने पर सभी का आभार व्यक्त किया।

परिंडे लगाने का संकल्प लिया

पुष्कर, (निसं)। रविवार को वार्ड नं. 22 आसींद के वार्डवासियों ने पार्षद अनिल सिंह तंवर एवं मीडिया कर्मी के सानिध्य में मुख बधीर पक्षियों के लिए दाना, पीने के पानी के परिंडे लगाए और रोजाना दाने पानी डालने का संकल्प लिया। पार्षद अनिल सिंह तंवर ने बताया कि अभियान को आगे भी जारी रखा जायेगा और विभिन्न स्थानों पर 101 पीने के परिंडे लगाये जायेंगे। इस मौके पर युवा मोर्चा महावीर साहू, महावीर लोहार, निखिल अरोड़ा, परमवीर सिंह, जगदीश गर्ग, साँवर लाल शर्मा, मनोज शर्मा, पारस साहू, नक्षत्रराज सिंह तंवर मौजूद रहे।

विद्युत आपूर्ति रहेगी प्रभावित

ब्यावर,(निसं)। उदयपुर रोड 11 केवी फीडर का आवश्यक मरम्मत कार्य होने के कारण सोमवार प्रात: 7 से 10.30 बजे तक विद्युत आपूर्ति बन्द रहेगी। इसके कारण अमरीका बाडिया, कृषि मंडी, मधुकर नगर, शिव कॉलोनी, जवाहर नगर, महावीर कॉलोनी, रावत कॉलोनी, सुखसागर कॉलोनी, एफसी आई गोदाम, गुरुकुल नगर, गुरुकुल स्कूल के आस-पास के एरिया से सम्बधित क्षेत्र की विद्युत आपूर्ति प्रभावित रहेगी। यह जानकारी अजमेर विद्युत वितरण निगम के सहायक अभियंता ने दी।

अजमेर में रोडवेज बस व ट्रेलर में भीषण टक्कर, एक जने की मौत

अजमेर, (कासं)। जिले के किशनगढ़ उपखंड क्षेत्र के नए रोडवेज बस स्टैंड के पास, वैष्णो देवी मंदिर के निकट रविवार दोपहर को रोडवेज बस और ट्रेलर की टक्कर से भीषण हादसा हो गया। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बस पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। हादसे में पुलिया के नीचे जूस का ठेला चलाने वाले एक युवक की बस और ट्रेलर के बीच में दबने से मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद यात्री बस में ही फंस गए, जिन्हें मौके पर मौजूद लोगों व पुलिस ने बमुश्किल बाहर निकाला।

घायल यात्रियों को किशनगढ़ के यज्ञ नारायण अस्पताल पहुंचाया। यहां उनका उपचार चल रहा है। हादसे के वक्त बस में करीब 30 यात्री सवार थे। इसमें से 20 घायल हो गए, जबकि 7 की हालत गंभीर बताई जा रही।

जानकारी के अनुसार बस अजमेर से जयपुर की ओर जा रही थी, जो अंडरपास से निकल रही थी। इसी दौरान तेज रफ्तार से आ रहे ट्रेलर ने टक्कर मार दी। इससे बस पुलिया के नीचे दीवार से चिपक गई। मौके पर

घायल यात्रियों को किशनगढ़ के यज्ञ नारायण अस्पताल पहुंचाया। यहां उनका उपचार चल रहा है।

- 20 यात्री घायल, 7 की हालत नाजुक
- हादसे के वक्त बस में करीब 30 यात्री सवार थे

जूस का ठेला चलाने वाला युवक चपेट में आ गया, उसकी मौके पर मौत हो गई। हादसे में बस पूरी तरह कचनाचूर हो गई। पास ही बस स्टैंड होने के कारण भीड़ उमड पड़ी और बस में फंसे यात्रियों को बड़ी मुश्किल से बाहर निकाला। सूचना पर किशनगढ़ पुलिस भी मौके पर पहुंच गई और एम्बुलैंस की सहायता से करीब 20 घायलों को राजकीय यज्ञ नारायण अस्पताल पहुंचाया, जहां उनका उपचार किया गया। जबकि किशनगढ़ से बच्चों, महिलाओं सहित 10 को अजमेर के जवाहर लाल नेहरू चिकित्सालय रैफर किया गया,जहां उनका उपचार चल रहा है। टक्कर के बाद रोड पर वाहनों की लंबी लाइन लग गई। मौके से पुलिस ने वाहनों को हटाया और यातायात सुचारू किया।

पुलिस मामले की जांच में जुटी है। गंभीर रूप से घायल पाली निवासी गोपाल सिंह, नवल कवर, करौली निवासी लक्ष्मी मीणा, पुष्कर निवासी विरेंद्र सिंह, जयपुर निवासी जनक कवर, भूपेंद्र सिंह, पुष्कर निवासी यशु, मीना कवर, खानपुरा अजमेर निवासी आहान खान, अजमेर निवासी अमायरा, प्रहलाद सिंह का उपचार चल रहा है। हादसे की सूचना मिलते ही अजमेर पुलिस प्रशासन सहित एडीएम सिटी भावना गर्ग समेत अन्य अधिकारी अस्पताल पहुंचे ओर घायल की कुशलक्षेम पूछी।

भीलवाड़ा ने पुरूष व अजमेर ने महिला वर्ग का खिताब जीता

अजमेर, (निसं)। सम्राट पृथ्वीराज चौहान राज्य स्तरीय हॉकी प्रतियोगिता में रविवार को भीलवाडा ने हनुमानगढ को 2-1 से हराकर पुरुष वर्ग में तथा महिला वर्ग में मेजबान अजमेर ने अंतिम लीग मुकाबले में खेलो इंडिया चूरु को 3-1 से हराकर खिताब अपने नाम किए।

चंद्रवरदाई स्टेडियम में तीन दिवसीय प्रतियोगिता के अंतिम दिन पुरुष वर्ग में भीलवाडा ने हनुमानगढ को 2-1 से हराया। विजेता टीम की ओर से दोनों गोल मनीष पांडे ने तथा हनुमानगढ की ओर से एक मात्र गोल विकास ने किए। मैच के अंपायर देवेन्द्र झाला व सत्यनारायण सेन एवं तकनीकी सहायक कुलदीप सिंह व अंजना लमानिया थे। महिला वर्ग में मेजबान अजमेर में अपना विजयी अभियान तीसरे दिन भी जारी रखा। मेजबान टीम आज अनुभवी एवं

विजेता टीमों को पुरस्कार पृथ्वीराज चौहान जयंती समारोह के मुख्य कार्यक्रम में पृथ्वीराज स्मारक पर प्रदान किए जाएंगे

राष्ट्रीय खिलाडियों से सुसज्जित खेलो इंडिया चूरु पर भारी पडी, जब 3-1 के अंतर से जीत दर्ज कर खिताब अपने नाम किया। अजमेर की ओर से रीना बालावत, किरण मीणा व चेतना दास ने गोल बनाए जबकि खेलो इंडिया चूरू के लिए एक मात्र गोल उषा ने बनाया। समापन समारोह की मुख्य अतिथि नगर निगम की महापौर ब्रजलता हाडा, विशिष्ट अतिथि डॉ प्रियशील हाडा (अध्यक्ष भाजपा शहर जिला अजमेर), उपमहापौर नीरज जैन, पूर्व उपमहापौर संपत सांखला, हेमलता खत्री (पार्षद), मोहन लाल लालवानी (मंडल अध्यक्ष, आर्य मंडल), राजस्थान राज्य धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण के पूर्व सदस्य कंवल प्रकाश किशनानी, हॉकी अजमेर के सचिव देवेंद्र सिंह शेखावत, भारतीय खेल प्राधिकरण के पूर्व हॉकी कोच नंद कुमार शर्मा, मुकेश खीचीं ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर उन्हें शुभकामनाएं दी। विजेता टीमों को पुरस्कार पृथ्वीराज चौहान जयंती समारोह के मुख्य कार्यक्रम में 29 मई को पृथ्वीराज स्मारक पर प्रदान किए जाएंगे

- सम्राट पृथ्वीराज चौहान राज्य स्तरीय हॉकी प्रतियोगिता

चल चिकित्सा वाहन एवं एंबुलेंस का लोकार्पण

अजमेर, (कासं)। सेवा भारती समिति अजमेर द्वारा राज्यसभा सांसद एवं केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव द्वारा प्रदत चल चिकित्सा वाहन एवं एंबुलेंस का विधिवत लोकार्पण रविवार को मातृ मंदिर डिग्गी चौक पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता किशन टेवानी व निरंजन शर्मा द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में सेवा भारती के प्रांत मंत्री मोहनलाल खंडेलवाल ने चल चिकित्सालय के बारे में बताया कि शहर की विभिन्न सेवा बस्तियों में नियमित रूप से उपरोक्त वाहन जाकर अपनी सेवाएं प्रदान करेगा। एनएमओ के डॉ राजेश खत्री ने बताया की इस चल चिकित्सा इकाई में एक डॉक्टर,नर्सिंग स्टाफ तथा स्वयंसेवी कार्यकर्ता साथ में रहेंगे तथा इसमें दवाइयां निशुल्क उपलब्ध कराई जाएगी। कार्यक्रम में प्रबुद्ध नागरिक, भामाशाह, सेवा भारती व विभिन्न सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता रामचरण बंसल ने की। कार्यक्रम का संचालन प्रदीप शर्मा ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन विकास पाराशर ने दिया।

राशन डीलर को समय पर नहीं मिल रहा गेंहू

अजमेर, (कासं)। रसद विभाग और खाद्य निगम द्वारा राशन डीलरों को सप्लाई किए जाने वाला गेंहू समय पर सप्लाई नहीं होने से राशन डीलरों सहित उपभोक्ताओं को परेशानी उठानी पड़ रही है। नाराज उपभोक्ताओं द्वारा राशन डीलर गेंहू की मांग करते आए दिन तकरार होती रहती है। ऐसा ही एक मामला रविवार को सामने आया है।

राशन डीलर सतीश चंद आसोपिया का प्रशासन पर आरोप है कि उनकी राशन की दुकान नगर निगम के वार्ड नंबर 38 विज्ञान नगर में पोस मशीन 21820 पर संचालित है। आसोपिया ने बताया कि उन्हें मई माह में वितरण करने वाला 90 क्विंटल राशन का गेहूं अप्रैल माह में ही मिल जाना चाहिए था लेकिन उन्हें मात्र 32 क्विंटल गेंहू ही प्राप्त हुआ है, जबकि शेष (पीएमजी वाला) 58 क्विंटल गेंहू आज दिनांक तक प्राप्त नहीं हुआ है।

इसके चलते उपभोक्ता राशन की दुकान पर बार बार चक्कर लगाकर

- उपभोक्ता राशन की दुकान पर बार बार चक्कर लगाकर खासा परेशान

खासे परेशान हो रहे है। जिससे राशन डीलर और उपभोक्ताओं में कभी भी विवाद हो सकता है। आसोपिया ने बताया कि शेष गेंहू की सप्लाई के लिए रसद विभाग और खाद्य निगम अजमेर को भी सूचना दी गई है लेकिन अभी तक उन्हें कोटे के अनुरूप गेंहू की सप्लाई नहीं दी गई है।

इससे राशन डीलर उपभोक्ताओं को क्या जबवा दे, उन्हें राशन का गेहूं कब तक उपलब्ध हो पाएगा, विभाग कोई संतोष पूर्ण जवाब नहीं दे रहा है। उन्होंने बताया कि गेंहू सप्लायर ठेकेदार फर्म भास्कर इंड्रस्टीज अपनी निविदा शर्तों का स्पष्ट उल्लंघन कर रही है, जिससे उपभोक्ताओं और राशन डीलरों में भारी रोष है।

पेयजलापूर्ति नहीं होने से आक्रोश

मसूदा (निसं)। मसूदा पंचायत समिति की ग्राम पंचायत देवमगरी सहित मोहनपुरा दौलतपुरा भीषण गर्मी को देखते हुए पीने के पानी के लिए ग्रामीण दर-दर भटकते रहे है। सरपंच पुसी देवी व रामदेव शिवराज आदि ने बताया कि पिछले बीस दिनों से बीसलपुर योजना से जलापूर्ति नहीं होने से ग्रामीणों को पेयजल के लिए दर-दर भटकना पड़ रहा है। ग्रमीणों का कहना है कि गांव को बिसलपुर पाइप लाइन योजना से जोड़ा गया है। क्षेत्र के सभी जलस्रोत सूखे हैं। गांव में पर्याप्त बारिश नहीं होने तथा हेड पंपों का भी जलस्तर कम होने से ग्रामीणों को इस भीषण गर्मी में पेयजल को लेकर परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने बताया देवमगरी, मोहनपुरा व दौलतपुरा की पानी की टैंकियो तक बीसलपुर से जलापूर्ति नहीं होने की वजह से लोगों ने पेयजल सप्लाई पाइप लाइन से अवैध कनेक्शन कर रखे हैं। इस कारण पानी की सप्लाई टंकियों तक नहीं हो रही हैं। जलदाय विभाग जब तक अवैध कनेक्शन करने वालों पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं करता है जबतक पेयजल समस्या बनी रहेगी।

भाजपाइयों ने बिजली पानी की समस्या को लेकर आक्रोश जताया

पुष्कर, (निसं)। भाजपा मंडल पुष्कर की बैठक माली मंदिर में आयोजित की गई। सरकार की नाकामियों ओर बिजली पानी की जनता को आ रही समस्याओं को लेकर गहरी नाराजगी प्रगट की।

बैठक में मुख्य अतिथि के रुप में पवन जैन जिला महामंत्री भारतीय जनता पार्टी अजमेर देहात व विशिष्ट अतिथि नगर पालिका पुष्कर के अध्यक्ष कमल पाठक एवं नगर पालिका पुष्कर के उपाध्यक्ष शिव स्वरूप महर्षि थे। बैठक की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष पुष्कर नारायण भाटी ने की। बैठक में पवन जैन ने बताया की राज्य सरकार की विफलताओं व बिजली पानी की समस्याओं एवं पुष्कर शहर की स्थानीय समस्याओं को लेकर मंडल स्तर पर जनाक्रोश आंदोलन कर स्थानीय स्तर पर उपखंड अधिकारी को ज्ञापन दिया जाएगा। अंत में मंडल अध्यक्ष पुष्कर नारायण भाटी ने सब का धन्यवाद ज्ञापित किया। तत्पश्चात राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम का संचालन मंडल के महामंत्री अरुण वैष्णव ने किया। कार्यक्रम में नगर पालिका पुष्कर के अध्यक्ष कमल पाठक, उपाध्यक्ष शिव स्वरूप महर्षि, मंडल अध्यक्ष पुष्कर नारायण भाटी, मंडल महामंत्री अरुण वैष्णव,रोहन बाकोलिया, संदीप पाराशर, मंडल उपाध्यक्ष अशोक पाराशर, कमल पाराशर(जैकी), मंडल मंत्री मदनमस्त पाराशर, धर्मप्रकाश रावल, अंशुमान पाराशर, मंडल के कोषाध्यक्ष व पार्षद कमल रामावत,समर्पण निधि के मण्डल संयोजक मुकेश जाखेटिया, युवा मोर्चा मण्डल पुष्कर के अध्यक्ष भुवनेश पाठक, महिला मोर्चा पुष्कर की मण्डल अध्यक्ष रेखा सरवाडिया, ओबीसी मोर्चा मण्डल अध्यक्ष मनीष सोनी, अनुसूचित जाति मोर्चा मण्डल पुष्कर के अध्यक्ष हेमराज तेजी, किसान मोर्चा मण्डल अध्यक्ष घनश्याम भाटी, नगर पालिका पुष्कर के पार्षद व पूर्व उपाध्यक्ष मुकेश कुमावत, पार्षद धर्मेन्द्र नागौरा, कैलाश श्रेष्ठी, महेंद्र सिंह खंगारोत, प्रवीण चौधरी, मोहित शर्मा, राघव पाराशर, यश पाराशर(बाबू), दामू पाराशर, वरुण पाराशर, लक्ष्मीकांत गौड़ व अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

एसडीएम, तहसीलदार के खाली पदों को भरने की मांग, सद्बुद्धि यज्ञ किया

मांडलगढ, (निसं)। उपखंड कार्यालय के बाहर भाजपा नेता एवं पूर्व जिला प्रमुख शक्ति सिंह हाडा का छठे दिन भी धरना जारी हैं। हाडा उपखण्ड मुख्यालय पर एसडीएम, तहसीलदार के लंबे समय से खाली पदों को भरने तथा विभिन्न जन समस्याओं को लेकर निश्तिकालिन धरने पर बैठे है।

धरने के समर्थन करने पहुंचे जहाजपुर विधायक गोपी चन्द्र मीणा ने कहा कि राज्य की कांग्रेस नीत सरकार के खिलाफ जनता में आक्रोश है और वह विभिन्न संकटों से घिरी हुई है। कानून-व्यवस्था चौपट हो चुकी हैं। मुख्यमंत्री अशोक गजलोत पर कुर्सी बचाने का भी संकट है। गहलोत कुर्सी के संकट से जूझ रहे है। इन सभी संकटों के चलते राज्य की जनता पीडित है। मीणा ने कहा मांडलगढ में एसडीएम ओर तहसीलदार के पद चार माह से रिक्त चलना जनता के साथ छलावा हैं। आमजन की समस्याओं को सुनने वालों की कुर्सी ही खाली पडी हैं।

मांडलगढ़ में भाजपा नेता शक्ति सिंह हाड़ा ने समर्थकों के साथ सदबुद्धि यज्ञ किया।

मांडलगढ विधानसभा क्षेत्र की समस्याओं को लेकर अनिश्चितकालीन धरने के छठे दिन काँग्रेस सरकार ओर मंत्रियों के लिए बीजेपी कार्यकर्ताओं ने सद्बुद्धि यज्ञ किया। धरने में पूर्व जिला प्रमुख शक्ति सिंह हाडा के साथ जहाजपुर, कोटडी के विधायक गोपीचंद मीणा, कोटडी उपप्रधान कैलाश सुथार, पंचायत समिति सदस्य जगदीश बैरवा, पूर्व चेयरमैन संजय डांगी, नंद भंवर मंडल अध्यक्ष जहाजपुर,एडवोकेट प्रभु जाट, सत्तू गुर्जर मोटरों का खेडा, भेरू गाडरी, हरीश चौधरी, शंकर जाट, कुलदीप सिंह,भंवर बना, सूर्यप्रकाश जोशी सहित

- अनिश्चितकालीन धरने का छठा दिन, कई नेता और कार्यकर्ताओं ने किया समर्थन

बिजौलियां उपखण्ड के कार्यकर्ताओं ने धरने का समर्थन किया। इससे पूर्व भीलवाडा से भाजपा जिलाध्यक्ष दामोदर अग्रवाल ने धरना स्थल पर पहुँच कार्यकर्ताओं को सम्बोधित किया और कहा कि जब तक सरकार उक्त माँगे नहीं मानती तब तक धरना जारी रहेगा। दूसरी ओर मांडलगढ विधानसभा क्षेत्र से भाजपा संगठन के कई पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि ओर सैकडों कार्यकर्ता धरना स्थल पहुँच शक्ति सिंह हाडा को समर्थन दे रहे है। वहीं स्थानीय भाजपा विधायक गोपाल खंडेलवाल का का छठे दिन बाद भी धरना स्थल पर नहीं आने को लेकर चर्चा का विषय ओर गुटबाजी की ओर इशारा हैं।

सार-समाचार

सीडीपीओ के खिलाफ जांच की मांग

ब्यावर, (निसं)। आंगनबाडी कार्यकर्ताओं ने ममता भूपेश मंत्री महिला बाल विकास विभाग, राजस्थान सरकार जयपुर के नाम एक ज्ञापन उपखण्ड अधिकारी राहुल जैन को सौंपा। है। ज्ञापन में पंचायत समिति जवाजा परियोजना महिला बाल विकास की सीडीपीओ हंसा जोशी के खिलाफ निष्पक्ष जांच की जाकर कानूनी कार्यवाही करने का कहा गया है। यह भी जानकारी दी गई की पूर्व में सोलह मई को भी आंगनबाडी कार्यकर्ताओं ने ब्लाक जवाजा द्वारा हंसा जोशी के खिलाफ रिश्वत लेने के प्रकरण में जिला कलेक्टर को शिकायत भेजी थी लेकिन सीडीपीओ जोशी ने कुछ आंगनबाडी कार्यकर्ताओं और नरेगा श्रमिकों को प्रलोभन देते हुए अपने पक्ष में कलेक्टर भेज कर जांच को प्रभावित कर दिया था। ज्ञापन के माध्यम से निवेदन है की उक्त प्रकरण की पुन: निष्पक्ष जांच करवाई जाकर आंगनवाडी कार्यकर्ताओं को राहत प्रदान की जाए। ज्ञापन देने में विनीता, ममता, शहनाजा प्रतीक कविता देवी, रेनू सेन, रजनी, संगीता, अनिता चौहान, मंजू देवी, लीला, पिस्ता देवी, गीता चौहान, कौशल्या, लक्ष्मी, निर्मला चौहान, इंद्रा चौहान, रजनी, सीमा, चंपा देवी, अनीता चौहान, संगीता आदि उपस्थित थी।

नाबार्ड योजना की दी जानकारी

बान्दनवाड़ा (निसं.) ग्राम पंचायत सिंघावल मे शनिवार को नाबार्ड योजना के द्वारा होने वाले जल संरक्षण जिसमें तालाब,नाड़ी, अनिकट निर्माण कार्य व पशुपालकों व किसानों को नाबार्ड योजना द्वारा कराए जाने वाले कार्यों को योजनाबद्ध तरीका व उनका उपयोग करने के बारे में व अधिक से अधिक संख्या में नाबार्ड द्वारा कराए जाने वाले कार्यों को करवाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में शिल्पी जैन, जिला विकास प्रबंधक नाबार्ड अजमेर,चेतन पण्ड्या मुख्य कार्यकारीअधिकारी गायत्री सेवा संस्थान, सौरव नागपाल सहायक प्रबंधक नाबार्ड जयपुर आदि नाबार्ड वफादारी जिनका स्वागत सरपंच रघुनाथ गुर्जर के द्वारा किया गया एवं मीटिंग में सरपंच के साथ रामदेव जी तेली, रतन लाल शर्मा,रामदयाल बेरवा, धीरा जी भगत, नारायण गुर्जर, माधूलाल गुर्जर, गजराज प्रजापत, दुर्गा लाल गुर्जर, माधु लाल गुर्जर, सीताराम गुर्जर, भरत राज गुर्जर, शिवराज गुर्जर,गोविंद पटेल, सुखपाल गुर्जर, गंगाराम शर्मा आदि ग्रामवासी मौजूद थे।

पेयजलापूर्ति की समस्या पर चिंता जताई

ब्यावर, (निसं)। भारतीय जनता पार्टी अजमेर देहात जिलाध्यक्ष व पूर्व विधायक देवीशंकर भूतडा ने कहा कि भीषण गर्मी में ग्रामीण क्षेत्र में पीने के पानी के एक घडे के लिये तरसना पड रहा है। विकराल रूप धारण कर रही पेयजल आपूर्ति को लेकर चिंता व्यक्त करते हुऐ कहा कि प्रशासन द्वारा ऐसे हालतों पर भी सुध नहीं लेना सवेदन हीनता की परकाष्ठा है जिसे बर्दाश्त नही करेंगे। भूतडा पेयजल, बिजली, चिकित्सा के साथ ही पशुओं के चारे पानी की समस्याओं को लेकर आंदोलन व अन्य संगठनात्मक विषयों पर तैयारी हेतु भाजपा अजमेर देहात के जिला पदाधिकारियों, मण्डल अध्यक्ष, मण्डल प्रभारी, मोर्चो के जिलाध्यक्ष व अन्य वरिष्ठ जनों की संयुक्त वर्चुल मीटिंग को संबोधित कर रहे थे। जिला महामंत्री पवन जैन ने बताया कि जिलाध्यक्ष भूतडा की अध्यक्षता में सम्पन्न बैठक में यह तय किया गया कि स्थानीय जन समस्याओं को लेकर 25 से 28 मई तक उपखंड अधिकारी व तहसीलदार से स्थानीय वरिष्ठजन मिलकर ज्ञापन के माध्यम से अवगत कराते हुए उनके निदान की मांग करेगा अन्यथा जून के प्रथम सप्ताह में जिला कलेक्टर पर धरना व प्रदर्शन करेगा। इसकि तैयारी हेतु आज से मंडलो पर जिला पदाधिकारी के सानिध्य में बैठकों का क्रम शुरू हो गया है। यह बैठके सभी मंडलों में 25 मई तक पूर्ण करनी है। आज की वर्चुवल मीटिंग को आंदोलन के संयोजक व विधायक सुरेशसिंह रावत, नवीन शर्मा, शक्ति सिंह राठौड, वीरेन्द्र सिंह कानावत, राजेन्द्र विनाइकिया, मेहन्द्रसिंह मझेवला आदि ने सम्बोधित करते हुए सुझाव दिये।

सर्वधर्म बहुजन हिताय गीत संगीत कार्यक्रम संपन्न

अजमेर, (कासं)। इंडिया इंटरनेशनल म्यूजिक लवर्स सोसायटी के तत्वाधान में अजमेर क्लब में सर्वधर्म बहुजन हिताय थीम पर नए और पुराने सदस्यों ने मिलकर एक से बढ़कर एक गीत सुनाए। शंकर धनवानी ने फूल तुम्हें भेजा है खत में कार्यक्रम की शुरआत की। धर्मेंद्र श्रीवास्तव ने आके तेरी बाहों में और मनोज अग्रवाल दीवानों से मत पूछो, राजेंद्र दाधीच शर्मी तू मेरी जिंदगी है। नीरज पंवार ने किसी बात पर मै किसी से खफा हूं गानों से वाह वाही बटोरी। कुंज बिहारीलाल ने तेरे चेहरे में वह जादू है , रश्मि मिश्रा जी तुम्हें देखती हूं तो लगता है ऐसे और ऊषा मित्तल ने उड़ते पवन के संग चलूंगी सुनाकर सबका दिल जीता। इनके बाद महेश लोंगानी देखा ना हाय रे सोचा ना हाए रे और गोपेंद्र शेखावत याद आ रहा है तेरा प्यार ने पूरी अदायगी के साथ समां बांधा। जाकी अली ने मैने रखा है मोहब्बत किसी अफसाने का नाम, दयाल प्रियानी ने वो कागज की कश्ती वो बारिश का पानी, प्रकाश जेठरा दिल ऐसा किसी ने मेरा तोड़ा लक्ष्मण हरजानी इक धुंध से आना है से रूहानी और गंभीर गीत सुनने को मिले।

नवनिर्मित पंचायत भवन का उद्घाटन

पुष्कर, (निसं)। आरटीडीसी के चेयरमैन धर्मेंद्र सिंह राठौड़ ने पुष्कर के बांसेली ग्राम पंचायत के नवनिर्मित पंचायत भवन का उद्घाटन किया। इस दौरान आगामी 2023 के चुनाव में उन्होंने कांग्रेस की उपलब्धियां गिनाते हुए कांग्रेस को ही वोट देने की अपील की। बांसेली के सरपंच ओम प्रकाश पवार ने बताया कि नवनिर्मित भवन की लागत लगभग 20लाख आई है जिसका उद्घाटन आरटीडीसी चेयरमैन धर्मेंद्र सिंह राठौड़ ने किया। इस दौरान धर्मेंद्र सिंह राठौड़ को सीएचए सहायकों ने ज्ञापन देकर उन्हें संविदा कर्मी के समान वेतन दिलाने की मांग की। धर्मेंद्र राठौर ने बताया कि सीएचए कर्मचारी राजनीति के शिकार हो रहे हैं उनका भला अशोक गहलोत सरकार ही कर सकती है। उद्घाटन के दौरान अजमेर जिला प्रमुख के सुपुत्र शिवकुमार पलाड़ा पुष्कर एसडीएम सुखराम पिंडेल नगरपालिका के अधिशासी अधिकारी अभिषेक गहलोत सहित कई नेता एवं अधिकारी मौजूद रहे। पूर्व शिक्षा राज्यमंत्री नसीम अख्तर उद्घाटन के दौरान नजर नहीं आई जबकि पूर्व शिक्षा राज्यमंत्री पुष्कर के प्रत्येक कार्यक्रम एवं जनता की जन समस्या उठाने के लिए हमेशा आगे रहती है।

मनोज आहूजा का अभिनंदन

बांदनवाड़ा (निसं)। उपखंड भिनाय के रावणा राजपूत समाज की और से रविवार को आयोजित कार्यक्रम में कस्बे के पत्रकार डॉ. मनोज आहूजा का रावणा राजपूत समाज के लोगों ने अभिनंदन किया। इस अवसर पर शिक्षक किशन गोपाल परिहार, सत्यनारायण चूंडावत, सत्यनारायण सोलंकी, प्रभु सिंह सांखला, भगवान सिंह सहित अन्य व्यक्तियों ने पत्रकार डॉ. मनोज आहूजा को साफा पहनाकर अभिनंदन किया। इस अवसर पर उपस्थित ग्रामीणों ने कहा कि डॉ. मनोज आहूजा अपनी लेखनी में निष्पक्षता व निडरता रखते हैं तथा जन समस्याओं को प्रखरता से उठाते हुए उसे उचित मंच तक पहुंचाते हैं जिसकी वजह से कई समस्याओं का समय पर समाधान हो जाता है। इस अवसर पर आहूजा ने किशन गोपाल परिहार सहित समस्त समाज बंधुओं का आभार व्यक्त किया।

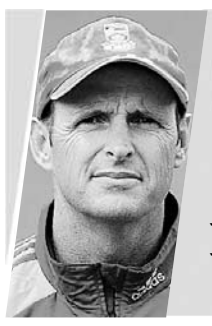

जाहिर तौर पर हम उनसे (साहा) काफी है। उनका (साहा) टीम में होना शानदार है। वह एक पेशेवर है और उन्हें आईपीएल और क्रिकेट के सभी प्रारूपों का अच्छआ अनुभव है। **- गैरी कर्स्टन**

गुजरात टाइटंस के मार्गदर्शक, ऋद्धिमान साहा के बारे में।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

एच.एस. प्रणय

टखने में चोट के बाद भी अपने करियर की सबसे यादगार जीत में से एक दर्ज करने के बाद भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी एच एस प्रणय ने कहा कि किसी भी परिस्थिति में हार व मानने की मानसिकता ने उन्हें थॉमस कर सेमीफाइनल में डेनमार्क पर शानदार जीत के दौरान प्रेरित किया। प्रणय ने निर्णायक एकल मैच में शानदार प्रदर्शन किया जिससे भारतीय पुरुष टीम ने यहां डेनमार्क पर 3-2 सेज ीत के सात इतिहास रच दिया। भारतीय टीम पहली बार थॉमस कप के फाइनल में पहुंचने में सफल रही।

क्या आप जानते हैं ?... ऑस्ट्रेलिया के खब्बू स्पिनर फ्लीड वुड स्मिथ ने इंग्लैंड के विरुद्ध 1932 में 87 ओवर में 298 रन पर एक विकेट लिया था। ये आज तक एक टेस्ट पारी में किसी भी गेंदबाज द्वारा दिए गए सबसे ज्यादा रन है।

आईपीएल के आखिरी लीग मैच में पंजाब ने हैदराबाद को पांच विकेट से हराया

हरप्रीत बरार ने जीता मैन ऑफ द मैच का खिताब

मुम्बई, 22 मई। लियाम लिविंग्स्टन की पांच छक्कों से सजी 49 रन की तूफानी पारी की बदौलत पंजाब किंग्स ने सनराइजर्स हैदराबाद को आईपीएल के परिणामं के लिहाज से महत्वहीन मुकाबले में रविवार को 29 गेंद शेष रहते पांच विकेट से हरा दिया। पंजाब ने इस तरह जीत के साथ आईपीएल में अपना अभियान समाप्त किया।

वही हरप्रीत बरार ने शानदार गेंदबाजी का प्रदर्शन करते हुए तीन विकेट लेकर मैन आफ दी मैच का खिताब जीता। हैदराबाद ने अभिषेक शर्मा (43), वाशिंगटन सुंदर (25) और रोमरियों शेफर्ड (नाबाद 26) की उपयोगी पारियों से 20 ओवर में आङ्ग विकेट पर 157 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर बनाया लेकिन पंजाब ने 15.1 ओवर में पांच विकेट पर 160 रन बनाकर आसान जीत हासिल कर ली। पंजाब की 14 मैचों में यह सातवीं जीत रही जबकि हैदराबाद 14 मैचों

में आङ्ग्वीं हार के साथ पंजाब से दो स्थान नीचे आठवें स्थान पर रहा। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरे हैदराबाद के लिए सलामी बल्लेबाज अभिषेक ने 32 गेंदों पर 43 रन में पांच चौके और दो छक्के लगाए। राहुल त्रिपाठी ने 18 गेंदों में 20 और एडन मारक्रम ने 17 गेंदों में 21 रन बनाये। हैदराबाद ने अपना पांचवां विकेट 96 के स्कोर पर गंवा दिया था लेकिन इसके बाद सुंदर और शेफर्ड ने छठे विकेट के लिए 58 रन की साझेदारी की। सुंदर ने 19 गेंदों की अपनी पारी में तीन चौके हुए एक छक्का लगाया जबकि शेफर्ड ने 15 गेंदों की अपनी पारी में दो चौके और दो छक्के लगाए।

स्कोर बोर्ड

हैदराबाद	रन	गेंद	4	6
प्रियम गर्ग का मयंक बो रबाडा	4	7	0	0
अभिषेक का लिविंगस्टन बो हरप्रीत	43	32	5	2
त्रिपाठी का धिवन बो हरप्रीत	20	18	1	1
मार्करम स्टं जितेश बो हरप्रीत	21	17	2	0
निकोलस का जितेश बो एलिस	5	10	0	0
वॉशिंगटन का धवन बो नाथन	25	19	3	1
रोमारियो नाबाद	26	15	2	2
जगदीश का प्रेक बो नाथन	0	1	0	0
भुवनेश्वर रन आउट	1	1	0	0
उमरान नाबाद	0	1	0	0
अतिरिक्त :	12			

कुल : 20 ओवर में 8 विकेट पर 157 रन
विकेट पतन : 1-14, 2-61, 3-76, 4-87, 5-96, 6-154, 7-154, 8-156
गेंदबाजी : लिविंगस्टन 4-0-25-0, अर्शदीप 4-0-25-0, रबाडा 4-0-38-1, नाथन 4-0-40-3, हरप्रीत 4-0-26-3

पंजाब	रन	गेंद	4	6
बेयरस्टो बो फजल	23	15	5	0
धवन बो फजल	39	32	2	2
शाहरुख का सुंदर बो उमरान	19	10	2	1
मयंक का जगदीश बो सुंदर	1	4	0	0
लिविंगस्टन नाबाद	49	22	2	5
जितेश का प्रियम बो जगदीश	19	7	3	1
प्रेरक नाबाद	4	1	1	0
अतिरिक्त :	6			

कुल : 15.1 ओवर में 5 विकेट पर 160 रन
विकेट पतन : 1-28, 2-66, 3-71, 4-112, 5-133
गेंदबाजी : भुवनेश्वर 2-0-22-0, सुंदर 2-0-19-1, फजल 4-0-32-2, जगदीश 4-0-38-1, उमरान 2.1-0-24-1, रोमारियो 1-0-23-0

पुजारा की टेस्ट टीम में वापसी, प्रसिद्ध कृष्णा नया चेहरा

नई दिल्ली, 22 मई। इंग्लैंड के ख़िलाफ़ होने वाले एकमात्र टेस्ट के लिए चेतेश्वर पुजारा की भारतीय टीम में वापसी हुई है। दक्षिण अफ्रीका में ख़राब प्रदर्शन के बाद पुजारा को श्रीलंका के ख़िलाफ़ खेली गई घरेलू टेस्ट सीरीज़ से बाहर कर दिया गया था। अब काउंटी क्रिकेट में अच्छा प्रदर्शन कर उन्होंने टीम में वापसी की है।

चोट के कारण आईपीएल से बाहर हुए रवींद्र जडेजा को भी 17 सदस्यीय दल में जगह मिली है, जबकि प्रसिद्ध कृष्णा नए चेहरे हैं। इंग्लैंड के ख़िलाफ़ यह टेस्ट एक से पांच जुलाई के बीच एजबेस्टन में खेला जाएगा।

इंग्लैंड के ख़िलाफ़ एकमात्र टेस्ट के लिए भारतीय दल- रोहित शर्मा (कप्तान), केएल राहुल (उपकप्तान), शुभमन गिल, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, हनुमा विहारी, चेतेश्वर पुजारा, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), केएस भरत (विकेटकीपर), रवींद्र जडेजा, रवि अश्विन, शार्दुल ठाकुर, मोहम्मद शमी, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, उमेश यादव, प्रसिद्ध कृष्णा।

पर्वतारोही पियाली बसाक ने एवरेस्ट पर फहराया तिरंगा

कोलकाता, 22 मई। पश्चिम बंगाल से आने वाली पर्वतारोही पियाली बसाक ने रविवार को एक नयी उपलब्धि हासिल करते हुए बिना पूरक ऑक्सीजन के माउंट एवरेस्ट (8848 मी) की चढ़ाई पूरी की। एक अक्टूबर, 2021 को माउंट धौलागिरी-1 (8167 मीटर) को सफलतापूर्वक फतह करने वाली बसाक पूरक ऑक्सीजन के बिना दुनिया के सातवें सबसे ऊंचे पर्वत के शिखर पर पहुंचने वाली पहली भारतीय महिला बनी थीं। एक रिपोर्ट में काठमांडू में उनके एजेंट कार्यालय मेसर्स पायनियर के हवाले से कहा गया कि उन्होंने एवरेस्ट पर पहुंचने के बाद लगभग सुबह नौ बजे राष्ट्रीय तिरंगा फहराया। संदेश में कहा गया कि पियाली बसाक बिना पूरक ऑक्सीजन समर्थन के दुनिया के शीर्ष पर पहुंच गई हैं।

पियाली बसाक पूरक ऑक्सीजन समर्थन के बिना माउंट एवरेस्ट और माउंट ल्होत्से को फतह करने के लिए निकली थीं। धन की कमी के कारण उन्हें अपना अभियान लगभग छोड़ना पड़ा था, लेकिन आखिरकार उन्हें शुक्रवार की सुबह एवरेस्ट के लिये अनुमति मिल गई। पियाली बसाक ने शनिवार को शाम सात बजे (नेपाली समय) के आसपास अपना सफ़र शुरू किया और नेपाल की ओर से एक शेरपा गाइड के साथ लगभग सुबह नौ बजे (नेपाली समय) शिखर पर पहुंच गयीं। पियाली बंगाल की पहली महिला हैं जिन्होंने बिना ऑक्सीजन की बोतल के एवरेस्ट पर चढ़ाई की है, जो कम से कम 27,000 फीट ऊपर है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि एक दिन के आराम के बाद, हुगली जिले के चंदननगर की पियाली सोमवार को बिना ऑक्सीजन की बोतल के 8,516 मीटर की ऊंचाई पर दुनिया के चौथे सबसे ऊंचे पर्वत ल्होत्से पर चढ़ाई का प्रयास करेंगी।

मैदान पर मौजूद खिलाड़ी आश्वस्त नहीं थे, इसलिये रिव्यू नहीं लिया : रिषभ पंत

मुंबई, 22 मई । दिल्ली कैपिटल्स और मुंबई इंडियन्स के बीच शनिवार को खेले गये आईपीएल मैच में जब टिम डेविड बल्लेबाज़ी करने आये तो मुंबई को 33 गेंदों पर 65 रन चाहिये थे। डेविड की पारी की पहली गेंद उनके बल्ले का किनारा छूकर रिषभ पंत के दस्तानों में जा पहुंची।

हल्की आवाज़ आने पर पंत ने अपील भी की, लेकिन अंपायर ने आउट नहीं दिया और कुछ सोच-विचार करने के बाद पंत ने रिव्यू भी नहीं लिया। उस समय दिल्ली कैपिटल्स के पास दोनों रिव्यू बाकी थे। इसके बाद डेविड ने 10 गेंदें खेलकर ताबड़तोड़ 34 रन बनाये और मुंबई पांच गेंदें रहते मैच जीत गयी।

मैच के बाद स्टार स्पोर्ट्स से बात करते हुए पंत ने कहा कि मैदान पर मौजूद अन्य खिलाड़ी विकेट को लेकर आश्वस्त नहीं थे इसलिये उन्होंने रिव्यू नहीं लिया उन्होंने कहा कि मुझे लगा कि वहां कुछ था, इसलिये मैंने

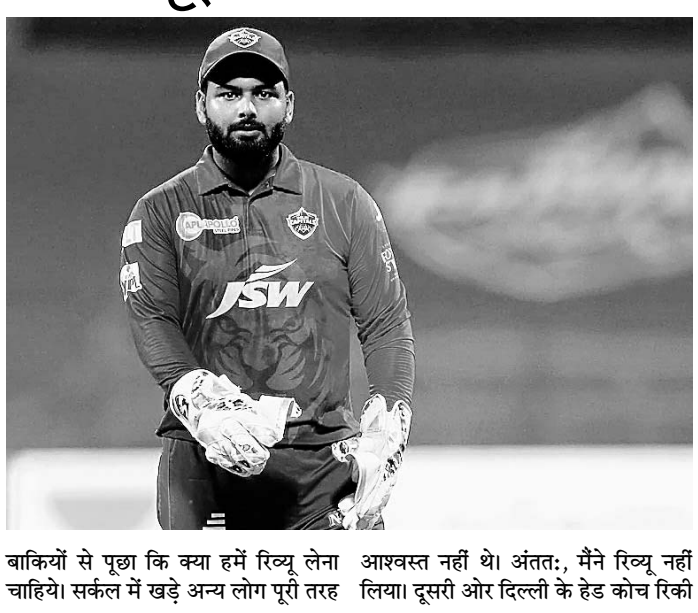

बाकियों से पूछा कि क्या हमें रिव्यू लेना चाहिये। सर्कल में खड़े अन्य लोग पूरी तरह आश्वस्त नहीं थे। अंततः, मैंने रिव्यू नहीं लिया। दूसरी ओर दिल्ली के हेड कोच रिकी पॉन्टिंग ने कहा कि उनकी टीम सिर्फ एक निर्णय की वजह से मैच नहीं हारी, बल्कि उनकी हार के अन्य कारण भी थे उन्होंने पोस्ट मैच कांफ्रेंस में कहा कि मैच के एक पहलू पर उंगली रखकर बताना हमेशा मुश्किल होता है। मैच की शुरुआत में हमारे ऊपरी क्रम के बल्लेबाज़ों ने अच्छा प्रदर्शन नहीं किया। हमने करीब 30-40 रन पर चार विकेट खो दिये थे। यह एक टी20 मैच की अच्छी शुरुआत नहीं थी। खासकर ऐसे मैच की जिसे जीतना हमारे लिये आवश्यक था।"

पॉन्टिंग ने कहा कि टिम डेविड पहली बॉल पर करीब-करीब आउट होने के बाद अच्छा खेले, लेकिन मैच के ऐसे कई पहलू हैं जिनसे हम निराश होंगे। महत्वपूर्ण यह है कि खिलाड़ी ऐसे मैचों से कुछ न कुछ सीखेंगे। अंततः, मैं बहुत दुखी महसूस कर रहा हूं कि मैच हमारे हाथों से फिसल गया जब उन्हें आखिरी सात या आठ ओवरों में 12 रन प्रति ओवर चाहिये थे।"

मध्यप्रदेश को 3-0 से हराकर यूपी तीसरे स्थान पर

इंफाल, 22 मई। बेहतरीन तालमेल और तेजतर्रार खेल का प्रदर्शन करते हुये उत्तर प्रदेश ने 12वीं हाकी इंडिया सब जूनियर महिला हाकी राष्ट्रीय चैंपियनशिप में मध्य प्रदेश को 3-0 से हराकर तीसरा स्थान प्राप्त कर लिया। प्रतियोगिता का फाइनल आज शाम छह बजे हरियाणा और झारखंड के बीच खेला जायेगा।

खुमार लंपाक हाकी स्टेडियम में रविवार सुबह खेले गये मुकाबले में यूपी की लड़कियां पूरे मैच में प्रतिद्वंदी टीम पर हावी रहीं। मैच के पहले क्वार्टर के चौथे और पांचवें मिनट पर पीताबंरी कुमारी और प्रीति पटेल ने मध्य प्रदेश की रक्षा पंक्ति को तहस नहस करते हुये शानदार फील्ड गोल किये जबकि मैच के 58वें मिनट पर कंचन कुमारी ने एमपी की गोलकीपर कृषा परिहार को चकमा देते हुये तीसरा गोल दाग कर अपनी टीम की जीत की पटकथा लिख दी।

प्रतियोगिता में यूपी की लड़कियों का प्रदर्शन शानदार रहा है। यूपी टीम ने पहले लीग मैच में गुजरात को 21-0 से रौंद कर अपने सफर की शुरूआत की थी जबकि बाद में उसने छत्तीसढ़ को 8-2 से हरा कर क्वार्टर फाइनल में जगह बनायी, और चंडीगढ को एकतरफा मुकाबले में 5-0 से हरा कर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। सेमीफाइनल में यूपी को कड़े संघर्ष में झारखंड से 1-2 से शिकस्त झेलनी पड़ी और उसका खिताब जीतने का सपना चकनाचूर हो गया।

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी-20 श्रृंखला के लिये भारतीय टीम घोषित

रोहित और विराट सहित कई बड़े नामों को आराम, राहुल को कप्तानी

नई दिल्ली, 22 मई। राष्ट्रीय चयनकर्ताओं ने दक्षिण अफ्रीका के ख़िलाफ़ आगामी टी20 सीरीज़ के लिए भारतीय टीम की घोषणा कर दी है। टी20 टीम में कप्तान रोहित शर्मा सहित विराट कोहली, जसप्रीत बुमराह जैसे सीनियर खिलाड़ियों को आराम दिया गया है। केएल राहुल इस टीम की कमान संभालेंगे, जिसमें हार्दिक पांड्या और दिनेश कार्तिक की वापसी हुई है। तेज गेंदबाज उमरान मलिक और अर्शदीप सिंह इस टीम के नए चेहरे हैं। ऋषभ पंत को टी20 टीम का उपकप्तान बनाया गया है।

चोट से उबरने के बाद हार्दिक पांड्या को टीम में शामिल किया गया है। साथ ही आईपीएल में विस्फोटक बल्लेबाज़ी करने के बाद दिनेश कार्तिक को भी टीम में वापिस बुलाया गया है। पंजाब किंग्स के लिये वर्षों से बेहतरीन प्रदर्शन करते आ रहे अर्शदीप सिंह और आईपीएल 2022 में अपनी तेज़ रफ्तार गेंदबाज़ी से सबका ध्यान अपनी ओर खींचने वाले उमरान मलिक को पहला कॉल-अप भेजा गया है।

टीम- केएल राहुल (कप्तान), ऋतुराज गायकवाड़, इशान किशन, दीपक हुड्डा, श्रेयस अय्यर, ऋषभ पंत (उपकप्तान/विकेटकीपर), दिनेश कार्तिक (विकेटकीपर), हार्दिक पांड्या, वेंकटेश अय्यर, युज़वेंद्र चहल, कुलदीप यादव, अक्षर पटेल, रवि बिश्नोई, भुवनेश्वर कुमार, हर्षल पटेल, आवेश ख़ान, अर्शदीप सिंह, उमरान मलिक।

बहरीन पैरा बैडमिंटन में भारत ने 7 स्वर्ण सहित 23 पदक जीते

मनामा, 22 मई। शीर्ष पैरा शटलर प्रमोद भगत और तरुण ढिल्लों के दो-दो स्वर्ण पदक जीतने के साथ ही भारतीय पैरा बैडमिंटन टीम ने पहली बहरीन पैरा बैडमिंटन अंतर्राष्ट्रीय चैंपियनशिप 2022 में सात स्वर्ण सहित 23 पदकों के साथ अपना सफर समाप्त किया। होनहार युगल शटलर मनीषा रामदास ने दो स्वर्ण पदक जीते, जबकि नित्या सेरे सुमति सिवन (डब्ल्यूएस एसएच 6) और धिनगरन पांडुरंगन और शिवराजन सोलाईमलाई (डबल एसएच 6) ने भारत को अन्य पदक दिलाये।

एशिया कप के पहले दिन भिड़ेंगे भारत-पाकिस्तान

जकार्ता, 22 मई। हीरो एशिया कप का मौजूदा चैम्पियन भारत इस बार के अपने एशिया कप की शुरुआत सोमवार को पाकिस्तान के खिलाफ जीबीके एरिना में करेगा। रोमांच से भरपूर पहले दिन में मलेशिया का सामना ओमान से होगा, जो एक पखवाड़े पहले थाईलैंड में अपने एशियाई खेलों के क्वालीफायर की सफलता के बाद आत्मविश्वास से भरे हुए हैं।

एशियाई चैम्पियन्स ट्रॉफी खिताब धारक कोरिया पूल बी मैचों में बांग्लादेश से खेलेगा, जबकि जापान, जो एशियाई खेलों का गत चैंपियन भी है, मेजबान इंडोनेशिया से भिड़ेगा। एशियाई हॉकी महासंघ कैलेंडर में इस टूर्नामेंट के पिछले संस्करण में, जो विश्व कप क्वालीफायर भी है, भारत ने ढ ाका में आयोजित फाइनल में मलेशिया को 2-1 से हराया था। भारत और पाकिस्तान दोनों ने तीन-तीन बार एशिया कप का अपने नाम किया है।

भारत ने अनुभवी कप्तान बीरेंद्र लाकड़ा और उपकप्तान एसवी सुनील के साथ खेलने के लिये एक युवा टीम का चयन किया है। टोक्यो ओलंपिक खेलों में स्टार प्रदर्शन करने वाले सिमरनजीत सिंह लंबी चोट के बाद वापसी कर रहे हैं। टीम को दो बार के ओलंपियन और पूर्व कप्तान सरदार सिंह टीम के साथ कोच के रूप में जुड़ेंगे। पाकिस्तान के खिलाफ अपने शुरुआती मैच की पूर्व संध्या पर बोलते हुए, लाकड़ा और सुनील दोनों ने उच्च दबाव वाले खेल में युवाओं का मार्गदर्शन करने की आवश्यकता पर जोर दिया। सुनील ने कहा, दबाव हमेशा (पाकिस्तान के खिलाफ) होता है।

हार के बावजूद पोंटिंग ने रिषभ पंत का समर्थन किया

मुंबई, 22 मई। मुंबई इंडियन्स के खिलाफ शनिवार का मुकाबला हारकर आईपीएल 2022 से बाहर होने के बावजूद दिल्ली कैपिटल्स के कोच रिकी पोंटिंग ने बतौर कप्तान पंत का समर्थन किया है।

मैच के बाद प्रेस कांफ्रेंस में पोंटिंग ने कहा कि मुझे कोई संदेह नहीं है कि, पिछले सीज़न भी, पंत कप्तानी के लिये सही विकल्प थे। जब आप वक्त में पीछे जाकर देखेंगे, श्रेयर (अय्यर) चोटिल हो गये थे और रिषभ ने कप्तानी संभालते हुए बेहतरीन प्रदर्शन किया था। पिछले सीज़न हम अंक तालिका में सबसे ऊपर थे। हम आखिरी दो मैच भले ही हार गये थे, लेकिन मुझे कोई शक नहीं है कि पंत कप्तान के तौर पर सही विकल्प हैं।"

पोंटिंग ने कहा कि वह अभी भी युवा हैं। वह अभी भी कप्तानी के बारे में बहुत कुछ

सीख रहे हैं। एक टी20 टीम का कप्तान होना आसान नहीं है, वह भी आईपीएल जैसी बड़ी लीग में। दुर्भाग्यवश, जब आप इतने बड़े खिलाड़ी होते हैं तो आपके हर फैसले, हर कदम पर सवाल उठाए जाते हैं। इसलिये उन्हें मेरा पूरा समर्थन है, और उम्मीद है कि अगले साल हम फिर एक साथ काम करेंगे। पंत के विपक्षी कप्तान रोहित शर्मा ने भी पंत का समर्थन करते हुए कहा कि वह एक बेहतरीन कप्तान हैं।

रोहित शर्मा ने कहा कि वह एक बेहतरीन कप्तान हैं। कभी-कभी चीज़ें आपके अनुसार नहीं चलतीं। मैं इस स्थिति में रहा हूं और मैं उन्हें अभी यही बता रहा था। कभी-कभी चीज़ें आपकी योजना के अनुसार नहीं होतीं। इसमें कुछ बुराई नहीं है। इस सब से आप बहुत कुछ सीख सकते हैं। रोहित ने कहा कि पंत विकेट के पीछे से खेल को बहुत अच्छी तरह पढ़ ते हैं और ऐसे दबाव वाले टूर्नामेंट में छोटी-मोटी गलतियां होती रहती हैं। उन्होंने कहा कि अपना आत्मविश्वास न खोना बेहद महत्वपूर्ण है। रोहित ने कहा कि पंत आत्मविश्वास वाले खिलाड़ी हैं और अगले सीज़न वह मज़बूत वापसी करेंगे।

मैं पहली बार खराब फॉर्म से नहीं जूझ रहा हूं : रोहित

मुम्बई, 22 मई। मुंबई इंडियंस के कप्तान रोहित शर्मा इस आईपीएल में अपने प्रदर्शन से काफ़ी निराश हैं लेकिन उनका मानना है कि वह जल्द ही वापसी करेंगे। इस सीज़न खेले कुल 14 मुक़ाबलों में वह केवल 19.14 की औसत और 120 के स्ट्राइक रेट से 268 रन ही बना पाए। ऐसा पहली बार हुआ जब आईपीएल के किसी सीज़न में वह एक अर्धशतक तक नहीं बना पाए।

रोहित ने अपनी फ़ॉर्म पर चर्चा करते हुए कहा कि काफ़ी चीज़ें मेरे अनुरूप नहीं गईं। हालांकि यह चीज़ें पहले भी मेरे साथ हो चुकी हैं लिहाज़ा मैं पहली बार इन परिस्थितियों का सामना नहीं कर रहा हूं। मुझे पता है कि क्रिकेट यहां समाप्त नहीं होती अभी आगे काफ़ी क्रिकेट खेलनी है।

मुझे मानसिक पहलू पर थोड़ा काम करने की ज़रूरत है ताकि मैं वापस अपनी लय प्राप्त कर सकूं। मुझे बस थोड़े से समायोजन की

दरकार है और जब भी मुझे खाली समय मिलेगा मैं इस पर काम करूंगा। रोहित की ख़राब फ़ॉर्म का खामियाज़ा टीम को भी भुगतना पड़ा। मुंबई इस सीज़न के पहले आठों मुक़ाबले हार गई। पिछले छह मुक़ाबलों में उन्होंने चार मुक़ाबले ज़रूर अपने नाम किए लेकिन तब तक काफ़ी देर हो चुकी थी। रोहित ने इस सीज़न मुंबई के प्रदर्शन पर बात करते हुए कहा कि यह सीज़न हमारे लिए काफ़ी निराशाजनक रहा, हम सीज़न की शुरुआत में अपनी योजनाओं को धरातल पर नहीं उतार सके। आईपीएल जैसे टूर्नामेंट में आपको मॉमेंटम बनाना पड़ता है।

शुरुआत में हम एक के बाद एक लगातार मुक़ाबले हारते रहे। हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण यह था कि हम योजनाओं को अपने हिसाब से मैदान में लागू करें लेकिन चीज़ें वैसी घटित नहीं हुईं जैसा हम चाहते थे। हालांकि एक नई टीम के साथ ऐसा होता है क्योंकि खिलाड़ियों को अपनी भूमिकओं को समझने में समय लगता है। कुछ खिलाड़ी इस फ्रैंचाइज़ी के लिए पहली बार खेल रहे थे, अपनी राष्ट्रीय, राज्य या दूसरी लीग में वह जो भूमिका निभाते हैं उसके मुक़ाबले यहां उन्हें दूसरी भूमिकाएं दी गई थीं और यही वजह रही कि उन्हें नई भूमिकाओं से तालमेल बनाने में समय लग गया।"

स्वदेशी मार्शल आर्ट कलारीपयट्टू के लिये यूपी की टीम ने कमर कसी

लखनऊ, 22 मई। पंचकूला हरियाणा में आयोजित खेलो इंडिया यूथ गेम्स में स्वदेशी मार्शल आर्ट कलारीपयट्टू के लिये उत्तर प्रदेश टीम के चयन और प्रशिक्षण के लिये तीन दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। चौक स्टेडियम इंडोर हॉल में शिविर का उद्घाटन पूर्व उपमुख्यमंत्री डॉ दिनेश शर्मा ने किया। इस अवसर पर केरल से आए कलारीपयट्टू प्रशिक्षक एक्सपर्ट्स व प्रदेश के खिलाड़ियों ने खेल की विभिन्न तलवारबाजी, लाठी, उर्मी जैसी पारंपरिक विधाओं का प्रदर्शन भी किया। यूपी कलारीपयट्टू एसो. के सीईओ प्रवीण गर्ग ने बताया कि तीन दिवसीय शिविर में विशेष प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये केरल से खेल के एक्सपर्ट श्रीजयन, अनश्वरा, श्रीलक्ष्मी, कीर्थना कृष्ण को बुलाया गया है ताकि प्रदेश की टीम खेलो इंडिया में शानदार प्रदर्शन करते हुए पदक प्राप्त कर देश का नाम रोशन करे।

हरियाणा ने जीता महिला जूनियर हॉकी का खिताब

इंफाल 22 मई। खेल के हर विभाग में झारखंड को 19 साबित करते हुये हरियाणा ने रविवार को 12वीं हाकी इंडिया सब जूनियर महिला हाकी राष्ट्रीय चैंपियनशिप का खिताब अपने नाम कर लिया। इससे पहले सुबह के सत्र में उत्तर प्रदेश ने मध्य प्रदेश को 3-0 से हरा कर तीसरा स्थान प्राप्त किया। खुमार लंपाक हाकी स्टेडियम में रविवार शाम खेले गये फाइनल मुकाबले में हरियाणा के खिलाड़ियों ने तालमेल और सूझबूझ के खेल का प्रदर्शन करते हुये झारखंड पर शुरू से ही दबाव बनाना शुरू कर दिया, नतीजन खेल के 13वें मिनट में रिया ने झारखंड की रक्षा पंक्ति को भेदते हुये अपनी टीम के लिये पहला गोल दागा। बाद के क्वार्टर में दोनो ही टीमों ने एक दूसरे पर हमले किये मगर कोई भी टीम इसे गोल में तब्दील नहीं कर सकी। हरियाणा की ओर से दूसरा निर्णायक गोल 39वें मिनट में सेजल ने किया और अपनी टीम को ड्राइविंग सीट पर बैठा दिया। आखिरी के 15 मिनट झारखंड की लड़कियों ने गोल करने का भरपूर प्रयास किया जिसे हरियाणा की चपल रक्षा पंक्ति ने विफल कर दिया और अंततः हरियाणा को चैंपियन बनने का गौरव प्राप्त हुआ।

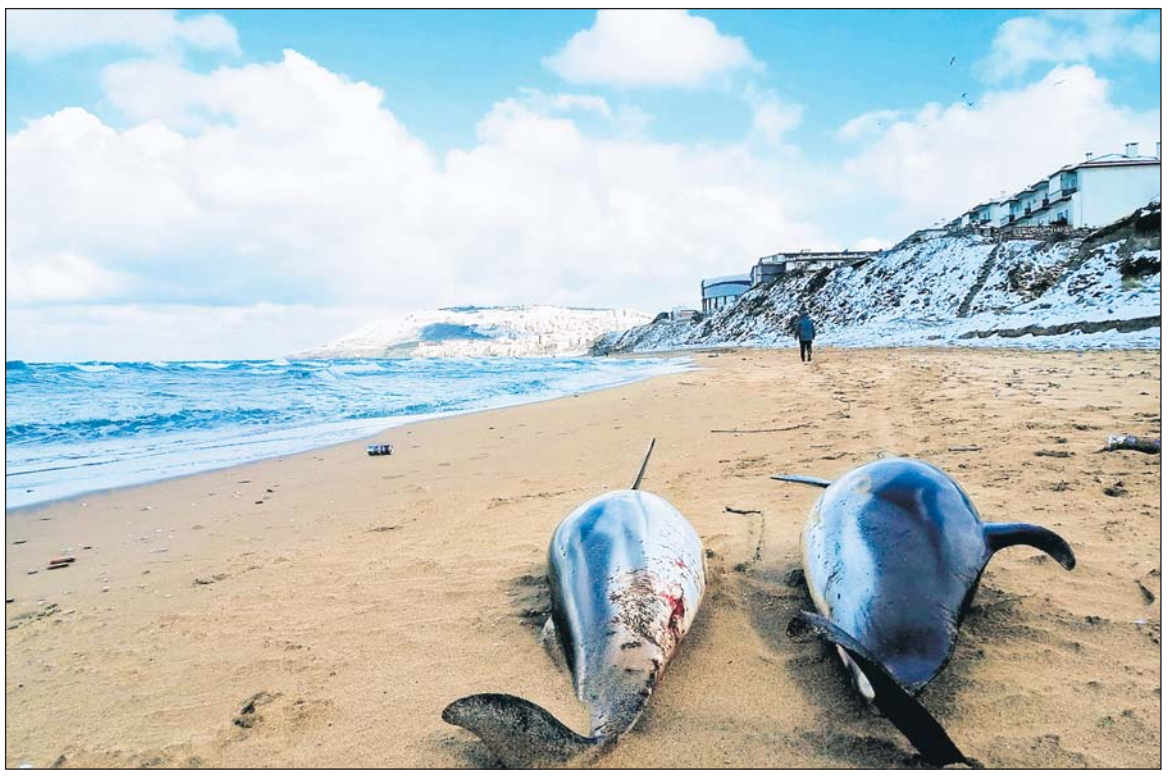

वैज्ञानिकों का कहना है कि हाल ही में ब्लैक सी में डॉल्फिन्स की मौतों में जो बढ़ोतरी हुई है उसका कारण यूक्रेन में चल रहा युद्ध हो सकता है। शोधकर्ताओं का मानना है कि, नॉर्थ ब्लैक सी में 20 रुसी नौसैनिक जलयानों तथा यूक्रेन में चल रही सैन्य गतिविधियों की वजह से ध्वनि प्रदूषण बहुत अधिक है, जिसके कारण डॉल्फिन्स टर्की तथा बुल्गारिया के समुद्र तटों की ओर जा रही हैं। यहां पहुंचने पर या तो ये असहाय हो जाती हैं या फिर फिशिंग नैट्स में फंस जाती हैं। युद्ध की शुरुआत से, टर्की के ब्लैक सी तट पर कॉमन डॉल्फिन (डैल्फाइनस डैल्फस) फंसने की संख्या में वृद्धि हुई है। टर्की के वैस्टर्न ब्लैक सी कोस्ट पर 80 से अधिक डॉल्फिन मृत पाई गईं। टर्किश मरीन रिसर्च फाउण्डेशन ने इसे "असाधारण वृद्धि" बताया है। फाउन्डेशन द्वारा की गई जाँच में पाया गया कि इनमें से आधी डॉल्फिन्स की मृत्यु मछली पकड़ने वाले जालों में फँस जाने के बाद हुई। फाउन्डेशन के चेयरपर्सन डॉ. बेराम ओज़तुर्क के अनुसार, शेष डॉलफिन की मृत्यु अभी भी एक "अनुत्तरित प्रश्न है, क्योंकि इनके शवों पर फँसाये जाने या गोली मारे जाने के जख्म नहीं पाये गये हैं।" ओज़तुर्क कहते हैं कि, तेज शोर एक संभावना हो सकती है डॉल्फिन्स की मृत्यु की। उन्होंने कहा कि "ब्लैक सी में हमने कभी इतने सारे जहाज और इतने लम्बे समय तक इतना शोर नहीं देखा था पर विज्ञान को प्रमाण चाहिए। हमारे पास प्रमाण नहीं हैं कि कितनी आवृत्ति वाला सोनार ब्लैक सी में है। सोनार, अर्थात साउण्ड नैविगेशन एण्ड रेंजिंग (एस.ओ.एन.ए.आर.) एक टैक्नीक है जिसका इस्तेमाल नौसेनाएं दुश्मन की पनडुब्बियों का दूर से ही पता लगाने के लिए करती हैं। चूंकि समुद्री जीव संचार व अन्य कार्यों के लिए ध्वनियों पर निर्भर करते हैं इसलिए अण्डर वॉटर शोर उन पर गंभीर प्रभाव डालता है। यूक्रेन की नैशनल अकैडमी ऑफ साईन्सेज़ के वैज्ञानिक डॉ. पावेल गोल्डिन कहते हैं कि, स्थायी अण्डरवॉटर शोर से जानवरों की मौत भले ही ना हो पर इससे गंभीर अव्यवस्था फैल सकती है, जो उन्हें नुकसान पहुंचा सकती है। उदाहरण के लिए डॉल्फिन्स व अन्य प्रजातियां अनजाने क्षेत्रों की ओर जा सकती हैं। बुल्गारिया के कंज़र्वेशन संगठन, ग्रीन बाल्कन्स के प्रोजैक्ट मैनेजर दिमितर पोपोव ने भी बुल्गारिया के समुद्र तट पर यह प्रवृति देखी, खासकर ब्लैक सी हारबर पॉरपस (समुद्री जीव) में। वैज्ञानिकों ने चिंता जताई कि "युद्ध में समुद्री जीवों की सुरक्षा का कोई प्रोटोकॉल नहीं है। यहाँ दर्जनों जहाज हैं और हमें नहीं पता कि वे कब तक सोनार तकनीक इस्तेमाल करेंगे।"

राजस्थान की राज्यसभा सीटों के लिए बी.टी.पी.और आर.एल.पी. की भूमिका महत्वपूर्ण

अब तक बी.टी.पी. सरकार के साथ थी लेकिन अब गुजरात में कांग्रेस के खिलाफ वह आप से गठबंधन कर चुकी है

जयपुर, 22 मई (का.प्र.)। राजस्थान में राज्यसभा की चार सीटें आगामी 4 जुलाई को रिक्त होने वाली हैं। इनके लिए चुनाव की तारीखों का ऐलान हो चुका है और 10 जून को राजस्थान की चारों राज्यसभा सीटों के लिए चुनाव होने जा रहा है। इन चारों सीटों पर अभी तक भाजपा काबिज थी, 2018 में विधानसभा चुनावों में बदली सत्ता के बाद अब इन चार में से दो सीटों पर कांग्रेस काबिज होने वाली है। एक सीट भाजपा की मानी जा रही है, लेकिन चौथी सीट का गणित उलझ सकता है, क्योंकि भाजपा दो उम्मीदवार उतार सकती है। ऐसे में खेल रोचक हो जाएगा।

- **इधर आर.एल.पी. अब तक भाजपा के साथ थी लेकिन वह भी गठबंधन को छोड़ चुकी है।**
- **दो सीटों पर कांग्रेस, एक पर भाजपा होगी काबिज, चौथी सीट पर दोनों के पास अतिरिक्त वोट, लेकिन जीत के लिए जुगाड़ करना होगा।**

राजस्थान की चार में से एक सीट जीतने के लिए प्रथम वरीयता के 41 वोट चाहिए। इस लिहाज से कांगेस की दो सीटें साफ नजर आ रही हैं। एक सीट भाजपा के खाते में जाएगी, वहीं तीसरी सीट पर कांग्रेस अपने सहयोगी दल और निर्दलीय विधायकों के जरिए जीत दर्ज करने की जुगत में है। जो सीटें खाली होने वाली हैं, उन पर भाजपा के ओम प्रकाश माथुर, के.जे. अल्फोंस, रामकुमार वर्मा, हर्षवर्धन सिंह डूंगरपुर निर्वाचित हुए थे।

प्रदेश में 2018 के सत्ता परिवर्तन होने से पहले राजस्थान की सभी दस की दस सीटें भाजपा के पास थीं। लेकिन सत्ता बदलने के बाद तीन सीटें कांग्रेस के खाते में आ गई। अब इन चुनावों के बाद कांग्रेस की राज्यसभा सीटों की संख्या में इजाफा होगा।

असल में राज्य सभा चुनाव अनुपातिक पद्धति के मुताबिक इस बार चार सीटें रिक्त हैं। इस लिहाज से हर एक प्रत्याशी को जीत के लिए प्रथम वरीयता के 41 वोट चाहिए। असल में राज्यसभा के चुनाव में विधायक हिस्सा लेते हैं।

राज्यसभा के चुनाव फॉर्मूले में विधायकों की कुल संख्या में राज्यसभा की रिक्त सीटों की संख्या और फिर एक जोड़ दिया जाता है। राजस्थान में 200 विधायक हैं इसमें चार रिक्त सीट प्लस एक का भाग दिया जाएगा। इस तरह से यह संख्या 40 आती है जिसमें एक जोड़ा जाता है। इस तरह से 41 वोट चाहिए।

वर्तमान में कांग्रेस के पास खुद के 108 सीटे होने के कारण दो सीटे जीतने के लिए प्रयाप्त 82 वोट हैं। तीसरी सीट के लिए पार्टी के पास 26 वोट बचते हैं। ऐसे में तीसरी सीट जीतने के लिए कांग्रेस के पास 15 वोटों की कमी रहने वाली है। इनमे 13 निर्दलीय हैं, तो राष्ट्रीय लोकदल का एक विधायक सरकार के साथ में है। वहीं भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मा.) सरकार के साथ रहेगी, लेकिन अब तक सरकार के साथ रहने वाली बी.टी.पी. गुजरात में आम आदमी पार्टी से हाथ मिला चुकी है। ऐसे में देखना होगा कि क्या राज्य सभा चुनाव में बीटीपी राजस्थान में कांग्रेस के साथ आती है या नहीं। वही भाजपा के पास 71 विधायक हैं। इस लिहाज से एक सीट पर जीत दर्ज हो सकेगी। ऐसे में 1 सीट जीतने के बाद भाजपा के पास 30 वोट बचेंगे लेकिन। बाकी 10 वोट भाजपा कहां से ले पाएगी, यह बहुत मुश्किल सवाल है। क्योंकि अब तक भाजपा के साथ रही आर.एल.पी. भी गठबंधन छोड़ चुकी है। ऐसे में उसके तीन विधायकों के वोट काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

सांसद अधीर रंजन का ट्विटर अकाउंट हैक

नई दिल्ली, 22 मई (वार्ता)। लोकसभा में कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी ने साउथ एवेन्यू पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई है कि उनका ट्विटर अकाउंट को हैक किया गया है और उनकी छवि खराब करने के लिए आपत्तिजनक पोस्ट की जा रही है।

चौधरी ने आज दिल्ली पुलिस को लिखित शिकायत में कहा है कि वह एक राजनीतिक कार्यक्रम में गए थे और उनका मोबाइल उनके साथ नहीं था फिर भी उनके मोबाइल के माध्यम से उनके ट्विटर पर गलत तथ्य पोस्ट किये गए है।

- **अधीर रंजन चौधरी ने दिल्ली पुलिस को लिखित शिकायत में कहा है कि, वे एक राजनीतिक कार्यक्रम में गए थे और उनका मोबाइल उनके साथ नहीं था फिर भी उनके मोबाइल पर ट्विटर मैसेज आ रहे थे।**

उन्होंने इस मामले की साइबर अपराध शाखा से जांच कराने की मांग की है और अपराधियों को गिरफ्तार करने का पुलिस से आग्रह किया है।

इस बीच दिल्ली पुलिस के सूत्रों ने बताया कि उन्होंने चौधरी से कहा है कि जिस मोबाइल फोन से आपत्तिजनक पोस्ट उनके नाम से ट्विटर पर पोस्ट की गई है वह उस फोन को दिल्ली पुलिस को सौंप दें ताकि मामले की जांच आसान हो सके।

देश में करोना के एक के बाद एक दो नये वैरिएंट मिले

भारत में करोना के बी.ए-4 वैरिएंट के बाद अब बी.ए-5 वैरिएंट मिलने की जानकारी सामने आने के बाद चिंता बढ़ने की आशंका

मुंबई, 22 मई (वार्ता)। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 13 मई को समाप्त सप्ताह में लगातार दसवें सप्ताह कम होता हुआ 2.7 अरब डॉलर घटकर 593.3 अरब डॉलर पर आ गया।

इससे पूर्व विदेशी मुद्रा भंडार 6 मई को समाप्त सप्ताह में 1.8 अरब डॉलर कम होकर 595.9 अरब डॉलर, 29 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में 2.7 अरब डॉलर घटकर 597.7 अरब डॉलर, 22 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में 3.3 अरब डॉलर लुढ़ककर 600.4 अरब डॉलर, 15 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में 31.1 करोड़ डॉलर फिसलकर 603.7 अरब डॉलर, 8 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में 2.5 अरब डॉलर गिरकर 604 अरब डॉलर, 1 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में रिकॉर्ड 11.2 अरब डॉलर की गिरावट लेकर 606.5 अरब डॉलर पर आ गया।

इसी तरह 25 मार्च को समाप्त सप्ताह में दो अरब डॉलर कम होकर 617.6 अरब डॉलर, 18 मार्च को समाप्त सप्ताह में 2.6 अरब डॉलर घटकर 619.7 अरब डॉलर और 11 मार्च को समाप्त में 9.6 अरब डॉलर लुढ़ककर 622.3 अरब डॉलर रहा था।

- **तमिलनाडु की एक 19 साल की लड़की को कोरोना के बी.ए-4 वैरिएंट से संक्रमित पाया गया है। मरीज में हल्के लक्षण देखे गए और उसे कोरोना वैक्सीन की दोनों डोज लग चुकी हैं।**
- **इसके अलावा करोना के बीए.5 वैरिएंट का भी एक मामला सामने आया है। यह केस तेलंगाना से आया है। बी.ए-5 से संक्रमित मरीज में भी हल्के लक्षण पाए गए हैं और उसे भी टीके की दोनों डोज लग चुकी है।**

रिजर्व बैंक की ओर से जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 13 मई को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 1.3 अरब डॉलर घटकर 529.5 अरब डॉलर पर आ गया। इसी तरह इस अवधि में स्वर्ण भंडार 1.2 अरब डॉलर की गिरावट लेकर 40.6 अरब डॉलर रह गया।

आलोच्य सप्ताह विशेष आहरण अधिकार (एस.डी.आर.) 16.5 करोड़ डॉलर की कम होकर 18.2 अरब डॉलर पर आ गया। इसी तरह अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई.एम.एफ.) के पास आरक्षित निधि 3.9 करोड़ डॉलर की गिरावट के साथ 4.9 अरब डॉलर रह गई।

लगातार 10वें हफ्ते गिरा देश का विदेशी मुद्रा भण्डार

मुंबई, 22 मई (वार्ता)। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 13 मई को समाप्त सप्ताह में लगातार दसवें सप्ताह कम होता हुआ 2.7 अरब डॉलर घटकर 593.3 अरब डॉलर पर आ गया।

इससे पूर्व विदेशी मुद्रा भंडार 6 मई को समाप्त सप्ताह में 1.8 अरब डॉलर कम होकर 595.9 अरब डॉलर, 29 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में 2.7 अरब डॉलर घटकर 597.7 अरब डॉलर, 22 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में 3.3 अरब डॉलर लुढ़ककर 600.4 अरब डॉलर, 15 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में 31.1 करोड़ डॉलर फिसलकर 603.7 अरब डॉलर, 8 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में 2.5 अरब डॉलर गिरकर 604 अरब डॉलर, 1 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में रिकॉर्ड 11.2 अरब डॉलर की गिरावट लेकर 606.5 अरब डॉलर पर आ गया।

- **फॉरेन इंस्टीट्यूशनल इन्वैस्टर बड़ी संख्या में भारत से अपने निवेश की निकासी कर रहे हैं।**

प्रदेश में 3 दिन बाद नए संक्रमितों की संख्या में फिर कमी आई

राज्य में रविवार को 60 नए संक्रमित मिले, जबकि शनिवार को 80 रोगी सामने आए थे

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर, 22 मई । प्रदेश में तीन दिन की बढ़ोत्तरी के बाद नए करोना संक्रमितों की संख्या में रविवार को फिर थोड़ी कमी आई है। इस दौरान राज्य में 60 नए संक्रमित मिले हैं। हालाकि, इस बीच राज्य में रिकवरी कम होने से एक्टिव केस बढ़कर 480 हो गए हैं।

प्रदेश में रविवार को 12 जिलों में 60 नए करोना संक्रमित मिले हैं। इससे पहले शनिवार को 80 रोगी पाए गए थे। इधर आज राजधानी जयपुर में भी थोड़ी गिरावट के बाद 28 नए मरीज मिले हैं। इसके अलावा बारां में 11, अलवर में 4, अजमेर व बीकानेर में 3-3, दौसा, जोधपुर, कोटा व नागौर में 2-2 तथा झालावाड़, सिरोही और उदयपुर में 1-1 नया संक्रमित मिला है।

इस बीच 21 जिलों बांसवाड़ा, बाड़मेर, भरतपुर, भीलवाड़ा, बूंदी, चित्तौड़गढ़, चूरू, धौलपुर, डूंगरपुर, गंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, जालोर, झुंझुनूं, करौली, पाली, प्रतापगढ़, राजसमंद, सवाई माधोपुर, सीकर और टोंक में कोई भी नया संक्रमित नहीं मिला है।

प्रदेश में रविवार को भी नए करोना संक्रमितों के मुकाबले रिकवरी कम हुई है। इस बीच राज्य में 58 मरीज ठीक हुए हैं। इसके साथ ही अब तक इस बीमारी से 12 लाख 75 हजार 139 लोग स्वस्थ्य हो चुके हैं। उधर राज्य में करोना संक्रमित 480 मरीजों का इलाज चल रहा है। इनमें 254 रोगी जयपुर जिले में है। राज्य में पिछले चौबीस घंटों में करोना से किसी भी मरीज की मौत नहीं हुई है। हालाकि अब तक इस बीमारी से राज्य में 9554 लोगों मृत्यु हो चुकी है।

राजधानी जयपुर में रविवार को 16 स्थानों पर नए करोना संक्रमित मिले हैं। इनमें सबसे ज्यादा 6 नए मरीज वैशाली नगर में पाए गए हैं। इसके अलावा जगतपुरा व सांगानेर में 3-3, बनीपार्क, मालवीय नगर व एम.आई. रोड पर 2-2 तथा आदर्श नगर, सी-स्कीम, चांदपोल, जवाहर नगर, झोटवाड़ा, खातीपुरा, मानसरोवर, प्रताप नगर और सोड़ाला में 1-1 नया संक्रमित मिला है।

वहीं एक मरीज का पता सही नहीं मिला है। इस बीच जिले में 35 मरीज ठीक हुए हैं।

- **राजधानी जयपुर में भी थोड़ी गिरावट के बाद 28 नए संक्रमित मिले है।**
- **प्रदेश में रिकवरी कम होने से एक्टिव केस बढ़कर 480 हो गए हैं।**

दलित युवक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्राप्त जानकारी के अनुसार रविवार सुबह श्रीडूंगरगढ़ मार्ग पर सुबह 10 बजे एक युवक का शव पड़ा मिला था। जेब खंगालने पर मिले आधार कार्ड से मृतक की पहचान लखासर निवासी 34 वर्षीय कुशाल मेघवाल के रूप में हुई है। उसके परिजनों को सूचित करके बुलाया गया। जिसके बाद कुशाल की पुष्टि हो गई। पुलिस का मानना है कि सुबह शव फेंकने से पहले उसकी हत्या कहीं ओर की गई थी। बाद में शव बीच सड़क पर फेंक दिया गया। बीकानेर से पहुंची एफ.एस.एल. की टीम ने शव के आसपास पड़े सामान को कब्जे में लिया। उसके शरीर पर लगी चोट का भी मुआयना किया। शव को श्रीडूंगरगढ़ अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया गया है। उधर, मृतक की मौत के बाद से क्षेत्र के लोगों में भारी आक्रोश है। मृतक के परिजन हत्यारों की गिरफ्तारी तक पोस्टमार्टम नहीं करवाने पर अड़े हुए थे बाद में समझाईश के बाद पोस्टमार्टम सहमत हुए।

श्रीडूंगरगढ़ थानाधिकारी वेदपाल ने कहा है कि मृतक के प्राइवेट पार्ट पर त्वचा झुलसने के कारण कट लगा हुआ है। प्राइवेट पार्ट कटा नहीं है डॉक्टर्स ने भी अपनी पोस्टमार्टम रिपोर्ट में इस आशय की रिपोर्ट दी है।

मामले की जांच शुरू कर दी गई है। कुछ लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।

मुफ्त एनिमल...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इस सेवा पर 60 प्रतिशत राशि केंद्र सरकार और 40 प्रतिशत राशि राज्य सरकार उपलब्ध कराएगी। उन्होंने कहा कि इस सेवा के लिय टोल फ्री नंबर होगा और एंबुलेंस जी.पी.एस. प्रणाली से जुड़ा होगा।

राजस्थान राज्यसभा चुनाव में कांग्रेस का साथ देगी माकपा

नई दिल्ली, 22 मई। राजस्थान की 4 राज्यसभा सीटों पर 10 जून को चुनाव होने है। माकपा के पूर्व महासचिव प्रकाश करात ने संकेत दिया है कि राज्यसभा चुनाव मे उनकी पार्टी कांग्रेस प्रत्याशी का समर्थन करेगी। राजस्थान में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के 2 विधायक है।

राजधानी जयपुर में मीडिया से बात करते हुए प्रकाश कारात ने कहा कि उनकी पार्टी की कोशिश रहेगी कि भाजपा का कोई प्रत्याशी न जीते, लेकिन कांग्रेस से भी हमारा कोई गठबंधन नहीं है। करात ने साफ कहा कि राज्यसभा चुनाव में बीजेपी का प्रत्याशी न जीते इसके लिए जो भी कुछ हो सकेगा उसका प्रयास उनकी पार्टी करेगी।

- **अब भाजपा काफी हद तक निर्दलीय विधायकों पर निर्भर रह गई है, दूसरी राज्यसभा सीट पर जीत के लिए।**

प्रकाश करात के बयान से साफ है कि भाजपा प्रत्याशी को हराने की बात आएगी तो राजस्थान में माकपा कांग्रेस को भी समर्थन देगी।

राजस्थान विधानसभा में संख्या बल कांग्रेस के पक्ष में है। कांग्रेस के पास 108 विधायक, भाजपा के पास 71, निर्दलीय 13, आर.एल.पी. 3, बी.टी.पी. 2, माकपा 2 और आर.एल.डी. के पास एक विधायक है। संभावना है कि मौजूदा संख्या बल के हिसाब से कांग्रेस 4 में 3 राज्यसभा की सीट आसानी से जीत जाएगी।

माना जा रहा है कि बीजेपी 4 में से 2 सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारेगी। पार्टी कम से कम 2 सीटों पर अपना प्रत्याशी खड़ा कर कांग्रेस को चुनौती देगी।

80 लाख ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कट्टों को हटाकर नीचे देखा गया तो वहां भारी मात्रा में डोडा पोस्त भरा हुआ था। वजन कराने पर 2508 किलो डोडा-पोस्त भरा हुआ मिला। डोडा-पोस्त व ट्रक को जब्त कर लिया गया है। वहीं मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

नागौर सी.ओ. विनोद कुमार सीपा ने बताया कि प्रारम्भिक जांच पड़ताल में पता चला है कि ट्रक मालिक जोधपुर का है। मामले में पुलिस टीमें लगाकर पूरे खुलासे और आरोपियों की गिरफ्तारी का प्रयास कर रही है।

ये कार्रवाई पिछले 10 सालों में नशा तस्करी के खिलाफ की गई नागौर पुलिस की सबसे बड़ी कार्रवाई है।

बंगाल में भाजपा सांसद अर्जुन सिंह तृणमूल में शामिल हुये

कोलकाता, 22 मई। पश्चिम बंगाल में भाजपा को तगड़ा झटका लगा है। बैरकपुर से सांसद अर्जुन सिंह रविवार को घरवापसी करते हुए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की अगुवाई वाली तृणमूल कांग्रेस में शामिल हो गए। टी.एम.सी. के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने कोलकाता में उन्हें पार्टी जॉइन कराई।

अब तक बीते 11 महीनों में पांच सांसद तृणमूल छोड़कर भाजपा में शामिल हो चुके हैं। बंगाल के बैरकपुर से बीजेपी सांसद अर्जुन सिंह के हालिया ट्वीट्स ने ही उन अटकलों को जन्म दे दिया था कि वह पार्टी से असंतुष्ट चल रहे हैं। अर्जुन सिंह ने हाल ही में पार्टी में सीनियर पद रहने के बाद भी ठीक से काम नहीं करने देने के लिए पश्चिम बंगाल की बीजेपी नेतृत्व की आलोचना की थी। अर्जुन सिंह साल 2001 में टी.एम.सी. से विधायक बनकर विधानसभा पहुंचे। इसके बाद 2019 के लोकसभा चुनाव में वो बीजेपी में शामिल हो गए। पार्टी ने बैरकपुर से टिकट दिया और वो सांसद बन गए। करीब तीन साल बाद वो एक बार फिर अपनी पुरानी पार्टी में चले गए हैं। अर्जुन सिंह के राजनीति जीवन की शुरुआत कांग्रेस पार्टी के साथ हुई थी।

- **बीते 11 महीनों में 5 सांसद भाजपा छोड़ चुके हैं।**
- **अर्जुन सिंह साल 2001 में टीएमसी से विधायक बनकर विधानसभा पहुंचे। इसके बाद 2019 के लोकसभा चुनाव में वो बीजेपी में शामिल हो गए।**
- **एक तरह से अर्जुन सिंह ने भी "घरवापसी" की है।**

'केन्द्र सरकार 15 रु. बढ़ाती है तो 9 रु. कम करती है'

शिवसेना नेता संजय राउत ने कहा कि, पैट्रोल-डीजल के दाम में कटौती के नाम पर जनता की आंखों में धूल झोंक रही है केन्द्र सरकार

नई दिल्ली, 22 मई। केंद्र सरकार ने बीते दिन एक बार फिर पैट्रोल-डीजल पर एक्साइज ड्यूटी में कटौती की है। इसके बाद राजस्थान और केरल राज्य ने पैट्रोल--डीजल पर वैट घटाया है। वहीं, महाराष्ट्र में तेल की कीमतों में वैट घटाने को लेकर शिवसेना सांसद संजय राउत ने केंद्र सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने अभी तक महाराष्ट्र की जी.एस.टी. की रकम लौटाई नहीं है, अगर वह रकम लौटा दे तो हम भी इस संबंध में कुछ करेंगे।

उन्होंने कहा कि हमारे हजारों करोड़ रुपये केंद्र सरकार के ऊपर बकाया हैं। वहीं, उन्होंने यह भी कहा, "पैट्रोल और डीजल की कीमतों को कम करने का फैसला मुख्यमंत्री लेंगे, लेकिन केंद्र सरकार पहले 15 रुपये बढ़ाती है और फिर बाद में 9 रुपये कम करती है। तेल की कीमतों को कम करने की जिम्मेदारी केंद्र सरकार की ही है।"

वहीं, राउत ने दाउद को लेकर केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा, "40 साल से कितनी सरकार केंद्र में आई और चली गई, सबके मुंह में एक ही नाम है दाऊद। केंद्र सरकार को मालूम है कि दाऊद कहां, किस स्थिति में है, तो पाकिस्तान जाइए और उसे पकड़ कर मुंबई लाइए। वो मुंबई बॉम्ब ब्लास्ट का सबसे बड़ा गुनहगार है।"

उन्होंने कहा, " जिस तरह से अमेरिका ने लादेन को मारा था। उसी तरह से मोदी सरकार को भी दाऊद को पकड़ कर लाना चाहिए। सिर्फ दाऊद- दाऊद करते रहने से कुछ नहीं होगा। संजय राउत ने केंद्र पर यह हमला पत्रकारों के नवाब मलिक और दाऊद इब्राहिम के संबंध में सवाल पर किया।

वहीं, केंद्र की ओर से तेल की कीमतों में राहत देने पर बहुजन समाज पार्टी (बसपा) प्रमुख मायावती ने राज्यों को तेल पर वैट कम करने की सलाह दी। उन्होंने ट्वीट किया," काफी समय बाद अब केंद्र ने देश में हर तरफ बढ़ती महंगाई, गरीबी, बेरोजगारी व तनाव आदि की मार से त्रस्त बदहाल जीवन जीने को मजबूर लोगों को पैट्रोल-डीजल के शुल्क में थोड़ी राहत दी है, अब यू.पी. व अन्य राज्यों की जिम्मेदारी बनती है कि वे केंद्र की बात मानकर इन पर तत्काल वैट कम करें।

एक अन्य ट्वीट में उन्होंने लिखा, "इसी प्रकार, अब समय आ गया है कि केंद्र व राज्य सरकारें, राजनीतिक स्वार्थ व आपसी नफा-नुकसान को त्यागते हुए, साथ मिलकर दिन-प्रतिदिन गंभीर होती जा रही इन राष्ट्रीय समस्याओं पर समुचित ध्यान दें, ताकि यहां आम जनजीवन सामान्य हो सके।" कांग्रेस ने कहा है कि सरकार पैट्रोल, डीजल व रसोई गैस के दाम लगातार बढ़ाकर लाभ कमा रही है और अब दाम घटाकर लोगों की आंख में धूल झोंकने का काम कर रही है। कांग्रेस प्रवक्ता गौरव बल्लव ने रविवार को यहां पार्टी मुख्यालय में विशेष संवाददाता सम्मेलन में कहा कि सरकार पैट्रोल और डीजल के दाम घटाकर जनता को धोखा देने का काम किया है। सच यह है कि सरकार कीमतें कम करके भी जनता से दोगुना से ज्यादा पैसा वसूल कर रही है और कीमतें घटाने का छलावा किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि पैट्रोल पर सरकार ने आठ रुपये और डीजल पर छह रुपए प्रति लीटर की कटौती कर अपने लाभ को दोगुना से कम नहीं होने दिया। उनका कहना था कि यह ठीक उसी तरह की नीति है जैसे कुछ दुकानों पर सेल पर बेची जाने वाली वस्तुओं की कीमत दोगुना करके 50 प्रतिशत कम पर बेचने की बात कर छूट के नाम पर लूट की जाती है।

प्रवक्ता ने कहा कि पेट्रोल डीजल रसोई गैस जिस दाम पर 2014 में थे आज उनकी कीमत लगभग दोगुना है। पिछले 60 दिन से पैट्रोल डीजल पर लगातार बढ़ोतरी की गई है और अब आठ और छह रुपये घटा कर जनता की आंख में धूल झोंकने का काम हुआ है जबकि सरकार इस छूट के बावजूद अब भी पैट्रोल डीजल पर दोगुना लाभ अर्जित कर रही है।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा मैसर्स अरावली प्रिन्टर्स, राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर (राजस्थान) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 65015/96, **जयपुर कार्यालय:** सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34 फैक्स : 0141-2373513, **कोटा कार्यालय** : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, **उदयपुर कार्यालय:** आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, **बीकानेर कार्यालय** : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, **जालोर कार्यालय** :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 **हिण्डौनसिटी कार्यालय** :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 **चूरू कार्यालय** : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908